समभाव-समदृष्टि के

सबक़

दिनांक 08 सितम्बर 2019 - 29 मार्च 2020

एकता का प्रतीक

प्रकाशक
सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)
"वसुन्धरा" ग्राम भूपानी–लालपुर रोड फरीदाबाद–121002 (हरियाणा)
ई–मेलः info@satyugdarshantrust.org
website: www.satyugdarshantrust.org
© सर्वाधिकार सुरक्षित सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)
ISBN : 978-93-85423-24-6

प्रथम संस्करण
मार्च, 2020

समभाव–समदृष्टि के

सबक़

दिनांक 08 सितम्बर 2019 - 29 मार्च 2020

सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार

★ महामन्त्र ★

साडा है सजन राम,
राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है।
उसी को जानो,
मानो और वैसे ही
गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु,
शरीर नहीं है।

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं,
ज्ञान को अपनाओ ।
निमित्त में नहीं,
नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

अनुक्रमणिका

क्रमांक		विवरण	पृष्ठ संख्या
	सितम्बर 2019		
1.	दिः 08 का सबक़	आत्मचेतना	1
2.	दिः 15 का सबक़	आत्मचेतना में आ वैष्णव जन बनने की युक्ति	8
3.	दिः 22 का सबक़	जीवन - परमात्मा का अद्‌भुत खेल	17
		बुधवार का बोर्ड (विचार ईश्वर आप नूं मान)	
4.	दिः 29 का सबक़	बुधवार का पहला बोर्ड (भाग-1)	26
		(शब्द गुरु की महानता)	
	अक्टूबर 2019		
5.	दिः 06 का सबक़	बुधवार का पहला बोर्ड (भाग-2) (ब्रह्म सत्ता -1)	29
6.	दिः 13 का सबक़	बुधवार का पहला बोर्ड (भाग-3) (ब्रह्म सत्ता -2)	34
7.	दिः 20 का सबक़	बुधवार का पहला बोर्ड (भाग-4) (सजन-भाव)	42
8.	दिः 27 का सबक़	बुधवार का पहला बोर्ड (भाग-5) (सतवस्तु की रामसत्)	46
	नवम्बर 2019		
9.	दिः 03 का सबक़	बुधवार का पहला बोर्ड (भाग-6) (ब्रह्म स्वरूप)	53

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
10. दिः 10 का सबक़	बुधवार का पहला बोर्ड (भाग-7) (मूलमंत्र-शब्द गुरू, अमर आत्मा, बोर्ड का सार)	58
11. दिः 17 का सबक़	बुधवार का दूसरा बोर्ड (भाग-1)	62
12. दिः 24 का सबक़	बुधवार का दूसरा बोर्ड (भाग-2)	66
दिसम्बर 2019		
13. दिः 01 का सबक़	बुधवार का तीसरा बोर्ड, (भाग-1) (श्री रामचन्द्र जी के मुख की भक्ति)	70
14. दिः 08 का सबक़	बुधवार का तीसरा बोर्ड, (भाग-2) (बैहरूनी वृत्ति)	73
15. दिः 15 का सबक़	बुधवार का तीसरा बोर्ड, (भाग-3) (अन्दरूनी वृत्ति)	78
16. दिः 22 का सबक़	सत्य धारणा का महत्त्व	83
17. दिः 29 का सबक़	संतोष धारणा का महत्त्व	89
जनवरी 2020		
18. दिः 05 का सबक़	धैर्य धारणा का महत्त्व	92
19. दिः 12 का सबक़	धर्म धारणा का महत्त्व	95
20. दिः 19 का सबक़	सम धारणा का महत्त्व	99
21. दिः 26 का सबक़	निष्काम धारणा से परोपकार कमाने का महत्त्व	103

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
फरवरी 2020		
22. दिः 02 का सबक़	बुधवार का तीसरा बोर्ड (भाग-4) (सुरत क्या है)	107
23. दिः 09 का सबक़	बुधवार का तीसरा बोर्ड (भाग-5) (सतवस्तु में क्या होगा)	113
24. दिः 16 का सबक़	बुधवार का तीसरा बोर्ड (भाग-6) (स्वार्थी)	121
25. दिः 23 का सबक़	बुधवार का तीसरा बोर्ड (भाग-7) (परमार्थी)	126
मार्च 2020		
26. दिः 01 का सबक़	बुधवार का तीसरा बोर्ड (भाग-8) (सतवस्तु में संकल्प नहीं था)	129
27. दिः 08 का सबक़	बुधवार का तीसरा बोर्ड (भाग-9) (मैं ब्रह्म हूँ)	132
28. दिः 15 का सबक़	बुधवार का तीसरा बोर्ड (भाग-10) (बाल अवस्था व युवावस्था की युक्ति का महत्त्व)	135
29. दिः 22 का सबक़	शब्द शक्ति	143
30. दिः 29 का सबक़	शब्द ब्रह्म विचारों को धारण करने का महत्त्व	148

दिनाँक 8 सितम्बर 2019 का सबक़

आत्मचेतना

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों अब तक हम इस सत्य से पूर्णतः परिचित हो चुके हैं कि जीवन परमात्मा की अद्‌भुत देन है। इस जीवन का आधार तत्त्व आत्मा है स्थूल शरीर नहीं। इसी वास्तविकता में अपनी मानसिकता को स्थिर बनाए रखते हुए अन्य शब्दों में जानो कि हम जीव वास्तविक रूप में शरीरधारी आत्मा यानि माया के आवरण से ढकी चेतन आत्मा हैं। अर्थ यह है कि हम हर तरफ से मायाजाल से घिरे हुए हैं। इसी मायाजाल में भ्रमण करते हुए हमें इस जाल को तोड़ कर बाहर निकलना है। यहाँ यह भी जानो कि इस जाल में हमें फँसाने वाला भी हमारा मन ही है व इसे तोड़कर हमें अपने घर पहुँचाने वाला भी हमारा मन ही है यानि मन ही बंधन का कारण है व मन ही मोक्ष का द्वार है। इसलिए तो सब शास्त्र बार-बार कहते हैं कि आत्मज्ञान प्राप्त कर मन को वश में रखने की युक्तिसंगत कला सीखो और ऐसा सुनिश्चित कर आत्मोद्धार कर लो।

स्पष्ट है सजनों मानव अस्तित्व विशिष्टताओं से परिपूर्ण है और चेतना ही उसका आधार है। यहाँ चेतना का भावार्थ स्पष्ट करते हुए बता दें कि चेतना ही

ज्ञान का मूल आधार है। चेतनात्मक ज्ञान ही हमारे अन्दर अविरल प्रवाहित हो रहा है। जिस स्थिर बुद्धि का ख़्याल इस ज्ञान के उद्‌गम स्रोत के साथ यानि परम चैतन्य के साथ जुड़ा हुआ है, वही सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति अनुसार अफुरता से ब्रह्म सत्ता को ग्रहण कर सचेतन अवस्था में बने रह प्रभु की आज्ञाओं को सुन-समझ निष्कामता से उनका पालन कर पाता है। इस आधार पर चेतना ही इंसान की क्रिया का एक आज्ञार्थक रूप है। यही नहीं चेतना ही अपने सान्निध्य में रहने वाले प्राणी को ज्ञाता, दृष्टा व कर्त्ता बनाने वाली शक्ति है यानि इस चेतना के बिना न तो हम पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं और न ही कुछ देखकर कुछ समझ सकते हैं व सही ढंग से कर सकते हैं। चेतना का एक अन्य अर्थ, सुधरने व सम्भलने हेतु विचारपूर्वक ध्यान देने से भी है, इसलिए कहते हैं कि चेतना को अंतर्निरीक्षण से प्राप्त किया जा सकता है और इसके द्वारा हम नकारात्मकता से उबर मानवोचित कर्म करने में सफल हो सकते हैं।

इस आधार पर सचेतन अवस्था में एकरस बने रहने वाला मनुष्य ही अपनी वास्तविकता का बोध कर पाता है यानि आत्मस्मृति में बना रहता है और अपने विकारों, भरण-पोषण, वंश वृद्धि और संवेदनाओं का अनुभव कर पाता है। यही नहीं सचेतन व्यक्ति की ही विचारशक्ति सबल रहती है और वह अपनी विवेकशक्ति का समुचित ढंग से प्रयोग कर पाता है। कहने का आशय यह है कि ऐसा व्यक्ति जीवन में जो भी करता है वह सदा अपने होश-हवाश में बने रहकर ही करता है। फलतः उसका परिणाम हितकर निकलता ही निकलता है। इसके विपरीत जिस इंसान की चेतना यह मायावी संसार हर लेता है उस अपोषणयुक्त जीव का शरीर क्षीण हो जाता है, मन चंचल, चित्त अशांत व बुद्धि अस्थिर हो जाती है और वह इन्सान सर्वांगीण स्वस्थता व समुचित प्रसन्नता के अभाव में किसी काम का नहीं रहता।

उपरोक्त परिणाम को प्राप्त होने से बचने हेतु सजनों सदा याद रखो कि आत्मचेतना के रूप में आत्मप्रकाश ही हमारा वह आत्मिक बल है जो हमें न केवल आत्मबोध कराता है वरन् हमारी मानसिक व शारीरिक अवस्था को भी

पूर्णतः हृष्ट-पुष्ट बना हमें सर्वरूपेण स्वस्थ बनाता है। परिणामतः इंसान अपनी ज्ञानेन्द्रियों का स्वामी आप बन सदा एकरस प्रसन्नचित्त, हर्षित, रोमांचित्त, संतुष्ट व बलवान बना रहता है और 'ईश्वर है अपना आप' का विचार उसके हृदय स्थित हो जाता है। ऐसा मंगलमय होने पर मानव को अपने हृदय में रहने वाले मूलतत्त्व यानि परमात्मा का साक्षात्कार हो जाता है और वह उसे इतना अच्छा व सुन्दर लगने लगता है कि मन उस अपने प्रिय के आनन्द में खो उसी में ही लीन हो जाता है। इस तरह इंसान का ख़्याल यानि उसकी सुरत अपने प्रकाशमय सच्चे घर में ध्यान स्थिर हो जाती है। फिर निरन्तर इसी प्रयास में अभ्यासरत रहने पर मन को भाने वाली हृदय निहित गुप्त आद्-वाणी स्वतः ही उसके अन्दर प्रकट होती है। तत्पश्चात् जब वह धुर की वाणी मन में बैठ जाती है और मन उससे प्रभावित हो उसे अच्छी तरह से समझ लेता है तो इंसान विचार पर खड़ा हो जाता है जो अपने आप में जीव-ब्रह्म के सत्य का प्रत्यक्षीकरण होने की बात होती है। ऐसा शुभ होने पर मन की कमज़ोरी खत्म हो जाती है यानि इंसान जीवन की किसी भी परिस्थिति में मानसिक रूप से कदापि दुर्बल नहीं पड़ता। फलतः उस विचारशील समभावी का हृदय उत्साह व साहस से इस तरह भर जाता है कि वह दृढ़ संकल्पी निश्चयात्मक बुद्धि का स्वामी बन जाता है। इस अवस्था को प्राप्त होने पर वह इस यथार्थता से भली भांति परिचित हो जाता है 'जो प्रकाश है मन मन्दिर, वही प्रकाश है जग अन्दर'। तभी तो उसके मन में करुणा, दया आदि जैसे मानवीय स्वभावों की प्रधानता होने लगती है और वह अपनी सुरत यानि ख़्याल को हर पल, हर क्षण मन को हरने वाले, हृदयस्थ परमात्मा की सुन्दर व मनोहर दिव्य छवि संग जोड़े रखने में समर्थ हो जाता है। इस तरह सजनों जो भी सुरत अपने मन की बात समझने वाले परमात्मा के संग अफुरता व निष्कामता से एकरस जुड़ी रहती है, उसे स्वतः ही वह चित्त चोर, आकर्षित, सुन्दर या रुचिकर लगने लगते हैं और ए विध् वह उसी की ही होकर रह जाती है। सजनों यह कई जन्मों से पति परमेश्वर से बिछड़ी हुई सुरत का पुनः उस संग योग होने पर अटल सुहागन बनने की बात होती है। ऐसा अद्भुत होने पर सजनों इंसान के लिए जितेन्द्रिय हो समदर्शी बनना सहज हो जाता है क्योंकि फिर किसी विध्

भी उसके मन को मोहित कर, उसे चंचल बनाने वाली कोई कामना उसमें नहीं पनपती। कहने का आशय यह है कि उसको हृदय रोग नहीं लगता यानि संसार के साथ उसकी प्रेम-प्रीति नहीं पनपती और विषय-विकार नहीं उपजते। यही कारण है कि उसके हृदय में किसी भी जगतीय मिथ्यता के प्रभाव वश शिथिलता उत्पन्न नहीं होती और वह हृदयवान कभी भी अपने मन-वचन-कर्म द्वारा किसी अन्य का दिल विदीर्ण करने वाले कर्म नहीं करता। इस तरह वह निरासक्त मानव अपने हृदय के स्वामी परमात्मा के साथ स्थिरता से बने रहते हुए, उनकी हर आज्ञा का पालन हँस कर करने में सदा तत्पर रहता है। इस तरह वह अमर पद को प्राप्त होने के स्वप्न को सिद्ध करने हेतु, हृदय आसन पर सुशोभित परमात्मा के प्रति स्वार्थ भाव से रहित होकर, सर्वरूपेण निष्काम भक्ति भाव अपनाता है और परमात्मा को ही अपने जीवन का स्वामी मानते हुए उन संग ही अपनी स्त्री रूपी सुरत को अटलता से जोड़े रखने में अपनी शान समझता है।

सजनों जो भी इस सर्वोत्तम अवस्था को प्राप्त हो प्रभु की विशेष कृपा प्राप्त करने का योग्य सुपात्र बन जाता है तो उसका मन सब संकल्पों से मुक्ति पा जाता है। सभी संकल्पों से मुक्ति पाने से तात्पर्य है कि उसका हृदय सचखंड बन गया। जानो हृदय के सचखंड बनते ही हम पूर्णतः चेतनायुक्त हो जाते हैं यानि परमात्मा सम बन सकते हैं। ऐसा होने पर उस आत्मतुष्ट इंसान के लिए धीरता से सच्चाई-धर्म के रास्ते पर स्थिरता से बने रह निष्पाप जगत में विचरना सहज हो जाता है। ऐसा होने पर उसके स्वभावों की सुगंधि देवलोक की सुगंधि को भी मात कर देती है। यह एक निगाह एक दृष्टि, एक दृष्टि एक दर्शन होकर परमार्थ के रास्ते पर सुदृढ़ता से बने रह व सर्गुण निर्गुण की खेलें खेलते हुए आवागमन के चक्कर से आजाद हो जीवनमुक्त होने जैसी मंगलकारी बात होती है।

अंत में सजनों हम मानते हैं कि यह सब सुनने समझने के पश्चात् आप सबके मन में भी अपनी जीवन यात्रा इसी तरह मंगलमय कुशलतापूर्वक सम्पन्न करने

के प्रति उमंग व उत्साह जाग्रत हुआ होगा। इसलिए हम आप सबसे प्रार्थना करते हैं कि इस अलौकिक सुन्दर स्वप्न को सार्थक करने के लिए पिछले सप्ताह बताई गई स्व अध्ययन, चिंतन व मनन करने की क्रिया करने से कदापि मत सकुचाना। इस संदर्भ में आज से ही दृढ़ संकल्प होकर इस वर्ष ध्यान कक्ष में पढ़ाए गए सबकों को विधिवत् आरम्भ से लेकर पढ़ना शुरु कर देना। सजनों हम यहाँ यह भी बताना चाहते हैं कि आज से लेकर अगले वर्ष चैत्र के यज्ञ तक अपने जीवन की बाजी जीतने की ओर बढ़ने का यह सुनहरी अवसर है, अतः इस अवसर का लाभ उठाने से किसी विध् भी मत चूकना अन्यथा जन्म की बाजी हार जाओगे। इसी विषय में अब सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से उद्धृत कुछ ऐसा ही संदेश देता हुआ यह कीर्तन ध्यान से सुनोः-

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

शब्दः- मलकियत सारी भगवन है तुम्हारी।।

(श्री रामचन्द्र जी कह रहे हैं)

मलकियत सारी बक्ष दित्ती, संग लक्ष्मी साजन जी तुम्हारी।
आप हो चतुर्भुजधारी, आप हो चतुर्भुजधारी।।

(श्री साजन जी कह रहे हैं)

शब ढब देखो गरुड़ दी, कैसा है सिंगार,
ऊपर चढ़न श्री राम जी, कैसा है लिश्कार।
सजे भगवान नाल ओ हो, सजे भगवान नाल वाह वाह।।
ओ ओ ओ ओ आ आ आ आ।
हकूमत दी कुर्सी ते बैठ गये कैसा है सिंगार।
गोदी दे विच साजन सजन, नाल सजन बलधार।।
सजे भगवान नाल ओ हो, सजे भगवान नाल वाह वाह।।
ओ ओ ओ ओ आ आ आ आ।

कुर्सी दे ऊपर बैठ गये, बैठ गई सच्ची सरकार।।
सतवस्तु दी जनता सजे, सजे ओ बेशुमार।
सजे भगवान नाल ओ हो, सजे भगवान नाल वाह वाह।।
ओ ओ ओ ओ आ आ आ आ।
कुर्सी ऊपर जब बैठ गये करने लगे प्रचार।।
सम सन्तोष धैर्य धर्म, सच्चाई पकड़ो विशाल।
सजे भगवान नाल ओ हो, सजे भगवान नाल वाह वाह।।
ओ ओ ओ ओ आ आ आ आ।
कई विरले यत्न लड़ावनगे, पकड़न सतवस्तु दी चाल।।
जैं शहनशाह दे वचन प्रवान कीते ओ कदे न खासन हार।
सजे भगवान नाल ओ हो, सजे भगवान नाल वाह वाह।।

शब्दः-

कलुकाल दे इन्सान जे हार खा बैठे, तां सतवस्तु दा नज़ारा देखे कौन।
सतवस्तु में चौरासी दग्ध भस्म हो राहसी।
तां चतुर्भुजधारी दा नज़ारा देखे कौन।।
हिम्मत लड़ाओ मेरे सजनों, जे सतवस्तु विच आना जे।
तां हिम्मत लड़ाओ मेरे सजनों, जे संग लक्ष्मी चतुर्भुजधारी दा दर्शन पाना जे।।

अंत में हम फिर से करबद्ध प्रार्थना करते हैं कि हिम्मत लड़ाओ मेरे सजनों जे जीवन दी बाजी जीतनी जे। हाँ हिम्मत लड़ाओ, हिम्मत लड़ाओ मेरे सजनों जे सतवस्तु में आ संग चतुर्भुजधारी दा दर्शन पा वैष्णव जन बन जाना है। अब बताओ कि कौन-कौन सतवस्तु के इस कुदरती ग्रन्थ द्वारा दी गई चुनौती को स्वीकार करता है?

सभी ने हाथ खड़े किए।

यह जान लो कि परमेश्वर सब देख रहे हैं। अतः आप हाथ खड़ा करके जिस

चुनौती को अपना कर सत्यार्थ बनने की सहमति दे रहे हो, उस पर खरा उतरना होगा। इस हेतु आपको अपने अन्दर सत्य भावों का विकास कर भावना रूप में उन्हें अपने अन्दर ठहराना भी होगा। न केवल इतना अपितु फिर तो सत्यता अनुसार बोलना व चलना भी होगा। ऐसा करने से ही आपका मन-वचन-कर्म सत्यता अनुरूप ढल पाएगा। याद रखो ऐसा इंसान बनने हेतु आपको अनुशासनप्रिय बनना होगा और बिना बताए ध्यान कक्ष की कक्षा में अनुपस्थित नहीं होना होगा। क्या यह सबको मंजूर है?

हाँ जी।

तो फिर जो आज बताया है अगले सप्ताह वैसा ही करके आना। इस शुभ कार्य में सजनों हम सफल हों उस हेतु हमारे लिए बनता है कि हम कुमतिवान, "शब्द ब्रह्म विचारों" को धारण कर इस तरह सुमतिवान बन जाएं कि हमारे लिए अपने ख़्याल को स्वच्छ व सच्चे घर में ध्यान स्थिर रखते हुए, अपने अंतःकरण को सदा एकरस विशुद्ध अवस्था में साधे रखने में किसी प्रकार की भी कोई कठिनाई न हो और इस तरह हम अपने ही अनथक प्रयत्न द्वारा जीवन की बाजी जीत परमशांति को प्राप्त कर लें।

आज का विचार

विचार कहता है:-

जनचर-बनचर, जड़-चेतन में एक प्रकाश समझो
और
निष्काम हो जाओ।

दिनाँक 15 सितम्बर 2019 का सबक़

आत्मचेतना में आ वैष्णव जन बनने की युक्ति

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,

उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों गत सप्ताह हम सबने मिलकर वैष्णव जन बनने का दृढ़ संकल्प लिया जो अपने आप में उपास्य विष्णु रूप, शंख-चक्र-गदा-पद्मधारी, परमात्मा के उपासक बन व उन्हीं की तरह सात्विक आचार-विचार वाला भक्त बन, सत्य-धर्म के रास्ते पर स्थिरता से प्रशस्त रहते हुए, जीवन के हर पल, हर क्षण को, जगत की पालना के निमित्त समर्पित कर, निष्काम भाव से समस्त चराचर जीवों की सेवा करने के योग्य बनने की बात है। जानो सजनों सेवक ही अपने स्वामी के सबसे नजदीक होता है अतः आप सब भी इसी प्रकार सेवा भाव में निपुण होकर अपनी सुरत के स्वामी परमात्मा के संग स्थिरता से बने रहने का भरसक यत्न करो।

इस विषय में जानो कि यह प्रयास अपने आप में ऐसा मानसिक प्रसाद है जिसके सतत विधिवत् सेवन द्वारा मन को शांति व चित्त को सुनिश्चित रूप से प्रसन्नता प्राप्त होती है और ऐसा आत्मविश्वासी, स्थिर बुद्धि, विषय-विकारों से विमुक्त निरहंकारी इन्सान जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता ही करता है।

इस तरह इस युक्ति का प्रमुख लक्षण माधुर्य और ओज है जिससे कुदरती नीति नियमों का अनुसरण करने वाले इंसान के अंदर स्वच्छता, सरलता और सुबोधता जैसे गुण विकसित होते हैं और ऐसा मंगलकारी होने पर इंसान अपनी विवेकशक्ति का समुचित ढंग से प्रयोग करने में सक्षम हो जाता है। परिणामस्वरूप वह असत्य का त्याग कर, अपनी अंतर आत्मा से जो भी अनुभव करता है, उसका जीवन में उतारने योग्य अर्थ, स्वतः ही उसे समझ में आ जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि इस अवस्था को प्राप्त रहने पर उस आत्मनिर्भर इंसान के अंतर्घट में प्रणव ध्वनि यानि मधुसूदन की सार्थक वाणी की अमृत वर्षा सतत होने लगती है। फलतः उसका हृदय इस तरह आनन्दविभोर हो जाता है कि फिर इस मूल माधुर्य युक्त वाणी के सिवाय उसे और कुछ नहीं भाता। बस फिर तो उस ओजयुक्त इंसान के मन में स्वतः ही उसके वास्तविक गुण दीप्तिमान हो उठते हैं और ए विध् इंसान के अन्दर वीरता और उत्साह का वर्धन होता है। ऐसा अद्भुत होने पर वह ओजयुक्त गुणी बलवान इंसान अपनी वृत्ति-स्मृति, बुद्धि व भाव-स्वभाव रूपी ताने बाने को सदा एकरस निर्मल अवस्था में साधे रखने की कला जान जाता है और ए विध् जीवन की हर परिस्थिति में निश्चलता से सम अवस्था में बने रहने की सामर्थ्य रखने वाला बन, उच्च बुद्धि उच्च ख़्याल कहलाता है। सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार ऐसा होने पर उसके हृदय में सतवस्तु छा जाती है। फिर उसे जैसे ही हृदय में शंख, चक्र, गदा, पदमधारी श्री विष्णु भगवान के प्रगटने का अनुभव होता है तो वह वैष्णव जन उन्हीं का ही होकर रह जाता है। फिर जगत की पालना का उनका कारज, उसका कारज बन जाता है और वह उसे सेवा भाव व निष्कामता से सम्पन्न करता है।

तभी तो ज्ञानस्वरूप सब वेद-शास्त्र कहते हैं कि ऐसे वैष्णव जन के मुख पर विशेष तेज झलकता है जो उसकी आध्यात्मिक शक्ति का परिचायक होता है और इस जगत में उसके पराक्रम का कोई सानी नहीं होता। अन्य शब्दों में कहें तो उस खालस सोना इंसान की भक्ति प्रबल व शक्ति इतनी ताकतवर हो जाती है कि उस दक्ष, होशियार, प्रतिभाशाली या बुद्धिमान तेजोबली के लिए इस

संसार रूपी माया जाल को तोड़ मुक्त अवस्था को प्राप्त करना अत्यन्त सहज व सरल हो जाता है। सजनों यह उस तेजस्वी के सूरजों के सूरज, ज्योतिर्मय परमात्मा सम बन प्रकाश नाल प्रकाश हो जाने की मंगलकारी बात होती है। इसलिए तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अन्तिम कीर्तन के अंतर्गत कहा गया है:-

इलाही सिंगार पहन के प्रकाश नाम कहाइये।

जानो सजनों यही उचित ढंग से परमार्थी विद्या ग्रहण करने की एकमात्र वह युक्ति है जिसके माध्यम से इंसान अपने ही प्रयास द्वारा, आत्मिक ज्ञान प्राप्त कर, निज वास्तविक गुण, शक्ति को जान व धारण कर सहज ही वैष्णव जन बन सकता है। सजनों जानो ऐसा अद्भुत होने पर इंसान का ख़्याल, जगत के पालनहारे लक्ष्मी पति, सूरजों के सूरज, श्री विष्णु अर्थात् सर्वव्यापी परमतत्त्व के साथ जुड़ जाता है और सुदृढ़ता से इस उच्च अवस्था में निरंतर बने रहने का पुरुषार्थ दिखाने पर वह इस कुदरती रहस्य को जान जाता है कि जो ब्रह्म शक्ति, शंख, चक्र, गदा, पद्म के रूप में, अपने मायावी जगत को चलायमान रखने के लिए, प्रभु ने धारण की हुई है, उनमें से क्रमशः 'शंख' ज्ञान का प्रतीक है, 'चक्र' अर्थात् 'सुदर्शन चक्र' काल या संहार शक्ति का है। इसी तरह 'गदा' शक्ति का प्रतीक है तथा 'पदम्' पृथ्वी का प्रतीक है। तभी तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में परमेश्वर कहते हैं कि:-

ओ फुरने दी सृष्टि उदर में ओ उपजे,
उदर में ओ उपजे उदर में समावे।
फिर उदर में ओ प्रगट कर के दिखावे
हम बगीचे दे रक्षक बगीचा हमारा।।
ओ हम हैं ओ हम हैं, ओ हम हैं ओ हम हैं।।

इसका अर्थ यह हुआ कि परम तत्त्व ही सबसे ऊँचा है। इसलिए तो ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी उसी परम शासक परब्रह्म की आज्ञा अनुसार ही चलते हैं।

जानो जब इंसान इस रहस्य को जान जाता है तो वह 'ईश्वर है अपना आप' के विचार पर स्थिरता से खड़ा हो जाता है और जीवन का विचारयुक्त सवलड़ा रास्ता अपना, इस अनमोल मानव जीवन का उद्धार कर परमधाम पहुँच विश्राम को पाता है।

इस संदर्भ में हम सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार 'परमधाम' की महिमा बताते हुए सब सजनों को इस सत्य से परिचित कराना चाहते हैं किः-

परमधाम परमेश्वर राहवे, ईश्वर परमात्मा नाम कहावे,
है ओ प्रकाश कैसा उजियाला,
प्रकाश ही प्रकाश हर समय ओ सुहावे-समय ओ सुहावे

सजनों अब जानो कि अगर हम वास्तविक रूप से जीवन विजयी होने के प्रति दिलचस्पी रखते हैं तो हमें सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की बताई युक्ति के अनुसार अपने ख़्याल को सृष्टि के मूलतत्त्व यानि ब्रह्म में निरंतर एकरस जोड़े रखने का तप करना ही होगा। जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही हम रजोगुण व तमोगुण से विमुक्त रह सतोगुणी बन, समय रहते ही अपना हृदय सचखंड बना सकते हैं। सजनों हम शीघ्रता-अति-शीघ्र इस शुभ कार्य को सम्पन्न करने में सफल हों, उसके लिए हमें सच्चेपातशाह जी की तरह, शब्द गुरु मूलमंत्र आद् अक्षर का दिल से सत्कार करना ही होगा। जानो यह मूलमंत्र ओ३म् ही वह परमाक्षर है जिसका सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की बताई युक्ति अनुसार मन में अफुरता से एकरस जाप करने पर, हमारा मनुराज में घिरा हुआ ख़्याल, ऊपर उठ आत्मप्रकाश में ध्यान स्थिर हो सकता है। जानो ऐसा पराक्रम दिखाने पर ही हमारी सुरत के लिए ब्रह्म शब्द के साथ जुड़ अपने इलाही ज्योति स्वरूप का अनुभव करना सहज हो सकता है।

सजनों यकीन मानो एक बार जब अपने इलाही ज्योति स्वरूप का अनुभव हो गया तो फिर हमारी दृष्टि जिस सजन के हृदय की तरफ भी देखेगी, उसमें अपनी असलियत प्रकाश को ही देखेगी। इस प्रकार बातचीत करने से ख्याल

उसी प्रकाश में ठहरा रहेगा और बातचीत करने से मुस्कराहट आयेगी, बदन प्रफुल्लित होगा, हृदय खिड़ेगा और मुख चमकेगा। सजनों यह अपने आप में 'जो प्रकाश है मन मन्दिर, ओही असलियत ब्रह्म स्वरूप है मेरा अपना आप', इस सत्य पर खड़े होने की बात होगी।

ऐसा होने पर सजनों हम सबसे श्रेष्ठ चैतन्य यानि सत् चित्त आनन्द स्वरूप परमतत्त्व जो परब्रह्म परमेश्वर के नाम से जाना जाता है और बद्ध जीव आत्मा से भिन्न, कार्य-कारण से परे, नित्य, शुद्ध, ज्ञानस्वरूप मुक्त स्वभाव वाला है, उसकी परम अटल आज्ञा का सहर्ष पालन करने में दक्ष हो जाएंगे। इस तरह फिर हमारे लिए आत्मनिर्भरता से समभाव समदृष्टि का सबक़ अपना कर, परस्पर सजन भाव का वर्त-वर्ताव करते हुए निष्पाप, निर्विकार, निर्भयता व निष्कलंकता से इस जगत में स्वतन्त्रतापूर्वक विचरना सहज हो जाएगा। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों हम तो यही कहेंगे कि ऐसे बनो, ऐसे बनो हाँ ऐसे बनो और अपने जन्म की बाजी इसी जीवन में ही जीत लो।

आप सब ऐसा करने में कामयाब हों इस हेतु सजनों आओ अब अपने ख़्याल यानि ईश्वर के प्रतिबिम्ब सुरत को आत्मप्रकाश में ध्यान स्थिर रख प्रभु संग जोड़े रखने का महत्त्व समझते हैं। यह तो आपको विदित ही है कि ख़्याल परमात्मा का प्रतिबिम्ब हमारी सुरत ही है और कुदरती विधान के अनुसार इस सुरत को अपनी दोनों भृकुटियों के मध्य अति सूक्ष्म रूप प्रकाश बिन्दु पर एकाग्रता से ध्यान स्थिर रखने पर ही इंसान, अपने आत्मिक गुणों को धार व आत्मिक स्वरूप को पहचान, परमेश्वर के आदेशों को आदरपूर्वक स्वीकार कर उनकी पालना के प्रति स्थिर बने रह सकता है। इस यथार्थ अवस्था में स्वाभाविक रूप से स्थिर रहने पर यानि आज्ञार्थक वृत्ति में ढलने पर इंसान को इस सत्य का बोध हो जाता है कि सर्व-सर्व एक ही आत्मा है जिसके प्रकाश प्रवाह से सब जड़ शरीरों की गतिविधियाँ चलती हैं।

आप यह भी मानोगे कि ऐसा सुनिश्चित करने हेतु सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विधिवत् युक्ति का वर्णन है और इस युक्ति से आपको बारम्बार बता-बता कर

परिचित कराने का यत्न भी निरंतर चलता रहता है। इसलिए खुद पर कृपा कर जगत में विशेष होते हुए भी निर्लेप अवस्था में सधे रहने के लिए सर्वहित के लिए उचित ढंग से उन्हें प्रयोग में लाने की कला सीखो और अपने ख़्याल को उस प्रकाश बिन्दु पर अखंडता से जोड़े रखते हुए अपने वास्तविक गुणों रुपी आत्मस्वरूप का बोध कर लो। इस तरह अपने यथार्थ गुणों को जान व उन्हें यथा अपने स्वभावों के अंतर्गत कर, निष्काम भाव से मन-वचन-कर्म द्वारा जगत की सेवा करते हुए परोपकार प्रवृत्ति में ढल जाओ। निःसंदेह यह सेवा आपसे तन-मन का त्याग माँगती है। अतः ऐसा करने से भी न सकुचाओ यानि न तो तन का सुख आपको सताए और न ही मन के भाव सताएं।

मानो इसी वास्तविक स्वभाव पर सुदृढ़ता से बने रह आप निर्विघ्नता से 'अलफ से लेकर ये' तक पढ़ाई कर 'ये' शब्द में जुड़ जाओगे। इसके पश्चात् आपके लिए 'ये' में से शब्द लाना व महाराज जी के साथ मेल खाना सहज व सरल हो जाएगा। जानो यही सत्वगुणी हो व हर अच्छी-बुरी परिस्थिति में स्वाभाविक रूप से आत्मिक स्वरूप में डटे रह, अपने मन को शांत, चित्त को एकाग्र व प्रसन्न तथा अपनी बुद्धि को स्थिर रखते हुए, शुभ कर्मों द्वारा, इस जगत में प्रकाश फैलाने में सक्षम होने की बात है। इस तरह अंत जीवन की बाजी जीत जाओगे।

इस संदर्भ में सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में सजन श्री शहनशाह हनुमान जी द्वारा बताई हुई युक्ति को दिलचस्पी में आकर प्रवान करने पर ही ऐसी मंगलकारी सफलता प्राप्त कर सर्वगुण सम्पन्न हो सत्-वादी बन सकोगे। बस फिर तो आप केवल विवेकशील ही नहीं बनोगे वरन् आपका चंचल मन भी असीम शांति को प्राप्त हो जाएगा जिसके प्रभाव से आपका अंतःकरण यानि हृदय निर्मल हो पारदर्शी हो जाएगा। ऐसा होने पर एक तो समभाव नज़रों में स्थित हो जाएगा और दूसरा समदर्शिता के नीति नियमों अनुसार, परस्पर शुद्ध व्यवहार करते हुए, हर पल निगाह महाराज जी के साथ जुड़ी रहेगी। इस तरह एक निगाह एक दृष्टि होकर आपका ख़्याल एक दर्शन में ध्यान स्थिर हो जाएगा। बस फिर तो 'विचार ईश्वर है अपना आप' के भाव की शक्ति के प्रभाव

से इस मायावी जगत में विचरते हुए भी सदा आत्मिक स्वभावों में स्थिर बने रहना और आत्मसिद्धि करना आसान हो जाएगा। इस प्रकार अपने जीवन का असली मकसद बिना किसी कठिनाई सहजता से सिद्ध कर लोगे।

इस परिप्रेक्ष्य में सदा याद रखना कि अगर अपनी स्वाभाविक ऐसी विशुद्ध बनत बनाने में और आत्मीयता के भाव से इस जगत में विचरने के स्वभाव से किसी भी जगतीय प्रभाव में आकर गिर गए तो आप निश्चित रूप से अपने ख़्याल को अपने सच्चे घर में ध्यान स्थिर रखने में असमर्थ हो जाओगे और जगत में रुल जाओगे। इस संदर्भ में हम जानते हैं कि कलुकाल में कोई विरला ही अपने अदम्य पुरुषार्थ द्वारा इस असक्षमता से उबर, इस उच्च अवस्था को प्राप्त कर, उच्च बुद्धि उच्च ख़्याल हो, सजन पुरुष बना रहने में सफल हो पाएगा परन्तु फिर भी आप सबको ऐसे विरलों की श्रेणी में आने का यत्न पूरी दिलचस्पी में आकर सही तरीके से करना है।

इस विषय में सजनों अगर इस सत्य को हकीकत में स्वीकारते हो कि मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं, तो आत्मिक गुणों अनुसार जो आपका आत्मिक स्वाभाविक रूप है उसको, ख़्याल ध्यान को एक कर, पूरी दिलचस्पी में आकर जानने का यत्न करो। इस तरह मानो कि इसी स्वाभाविक आचरण में ढलने पर यानि सदा एकरस चैतन्य अवस्था में स्थिरता से बने रहने पर ही आप अपने चित्त को सत्-प्रकृति में साधे रख सकते हो और शुभ वृत्ति यानि सात्विक वृत्ति में ढल, अपनी आत्मिक शक्ति का साहस व स्फूर्ति से, परमेश्वर की आज्ञाओं के पालन के निमित्त, धर्मसंगत प्रयोग करने में निपुण हो सकते हो। जानो ऐसा सुनिश्चित करना मांगलिक माना जाता है।

इस सर्वहितकर बात को दृष्टिगत रखते हुए सजनों ऐसी सात्विक प्रकृति में ढलने के प्रति अपने मन में उमंग व उत्साह पैदा करने हेतु आओ अब कुदरती वेद-शास्त्रों में वर्णित आत्मा के गुणों को जानते व समझते हैं ताकि हम सांसारिक स्वभावों को छोड़ अपनी सत्वगुण रूपी जीवनीशक्ति से युक्त हो, अत्यन्त ताकतवर व साहसी समझदार इन्सान बन जाएं। जानो अगर उन

सात्विक गुणों को धारने का सही ढंग से उद्यम दिखाया तो निश्चित रूप से सदाचारी और धर्मार्थ बन जाओगे व पुण्य आत्मा कहलाओगे।

अब आत्मिक गुणों को कंठस्थ कर अपने अन्दर उन गुणों से युक्त होने की चाहना पैदा करोः-

पहले बोलो
मैं आत्मिक गुणों अनुरूप स्वभावों को
अपनाऊँगा, शारीरिक स्वभावों को नहीं।
क्योंकि
मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं।

1. हाँ मैं प्रकाश आत्मा हूँ। मेरा अपना स्वाभाविक स्वरूप प्रकाश है, अंधकार नहीं।

2. मैं नित्य आत्मा हूँ। मेरा अपना स्वाभाविक स्वरूप अजरता अमरता है, अनित्यता व नश्वरता नहीं। इसलिए मुझे हथियार काट नहीं सकता, अग्नि जला नहीं सकती, पवन उड़ा नहीं सकती व पानी बहा या गला नहीं सकता। इस तरह मौत मुझे किसी विध् भी डरा नहीं सकती।

3. मैं पवित्रात्मा हूँ यानि मेरा अपना स्वाभाविक स्वरूप पवित्रता है, अपवित्रता नहीं।

4. मैं शांत आत्मा हूँ यानि मेरा अपना स्वाभाविक स्वरूप शांति है, अशांति नहीं।

5. मैं ज्ञानस्वरूप आत्मा हूँ मेरा अपना स्वाभाविक स्वरूप ज्ञान है, अज्ञान नहीं।

6. मैं सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप हूँ यानि मेरा अपना स्वाभाविक स्वरूप सत्य को धारण कर आनन्द अवस्था में बने रहना है, नफरत नहीं।

7. मैं शक्तिशाली आत्मा हूँ मेरा अपना स्वाभाविक स्वरूप शक्ति है, कमजोरी नहीं।

इसको जानने के पश्चात् मानो कि आपका आत्मिक स्वाभाविक स्वरूप तमोगुण और रजोगुण से भिन्न तथा उनसे श्रेष्ठ है और आप सत्वगुणी बन अपने मन को शुभ कर्मों की ओर प्रवृत्त करने वाले बन सकते हो। इस संदर्भ में सदा याद रखो कि सत्त्वगुण से युक्त मानव ही श्रेष्ठ प्रकृति वाला होता है। जानो कि जो इस श्रेष्ठता को प्राप्त कर लेता है वह ही हकीकत में सजन पुरुष कहलाता है क्योंकि वह सत्यदर्शी यानि सत्य व असत्य का विवेक करने वाला 'ईश्वर है अपना आप प्रकाश' के विचार पर खड़ा हो सत्य का इतना धनी हो जाता है कि उसके लिए संतोष, धैर्य अपना कर, सत्य धर्म के रास्ते पर यथार्थता से बने रहना सहज हो जाता है। इस महत्ता के दृष्टिगत ही सजनों सब कुदरती वेद शास्त्र पुकार पुकार कर हर मानव को कहते हैं कि ऐसे बनो हाँ ऐसे बनो और सत्य संकल्पी बन अपने परमार्थ तत्त्व रूप परमात्मा को पा सत्य में प्रतिष्ठित हो सत्यधाम में स्थित हो त्रिगुणातीत हो परब्रह्म परमेश्वर नाम कहाओ।

आज का विचार

ईश्वर कहते हैं:-

ओ३म् ओ३म्, ओ३म् विच जड़या होया हां।
ओ३म् ओ३म्, ओ३म् विच खड़ा होया हां।।

दिनाँक 22 सितम्बर 2019 का सबक़

जीवन - परमात्मा का अद्‌भुत खेल
बुधवार का बोर्ड (विचार ईश्वर आप नूं मान)

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों यह सत्य तो सर्वविदित है कि यह सृष्टि अपने आप में परमात्मा का अद्‌भुत खेल है और उसकी इस लीला का कोई अंत या पारावार नहीं है। इस संदर्भ में सजनों जानो व मानो कि सजन श्री शहनशाह जी की विशेष कृपा प्राप्त होने पर, आज से हम जिस जीवन विजयी मार्ग पर बढ़ने का शुभ आरम्भ कर रहे हैं, वह कुदरत का ऐसा अनोखा खेल है, जिसको विधिवत् मन-चित्त लगा कर उचित ढंग से खेलने वाला इंसान, सुनिश्चित रूप से सफलता प्राप्त कर सकता है। जानो इस प्रयास द्वारा हम सजन इस मनोरंजनात्मक आत्मिक खेल का आनन्द लेने के साथ-साथ, अपना शारीरिक-मानसिक-बौद्धिक विकास भी समुचित ढंग से कर पाएंगे। अतः स्थिर बुद्धि होकर, निश्चित रूप से अपना जीवन इसी जीवन काल में सफल बनाने हेतु, इस खेल को उमंगित होकर उत्साहपूर्वक खेलने के प्रति, अपने मन में दृढ़ संकल्प लेना होगा।

यही नहीं इस कुदरती खेल द्वारा चमत्कारी परिणाम प्राप्त करने के लिए हमें बच्चों जैसी उछल-कूद यानि बाल्यावस्था का भक्ति-भाव भी छोड़ना होगा और इस बात को अति गम्भीरता से ले, सुनिश्चित रूप से जीवन विजयी होने के लिए, आज और अभी से, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित, सरल और साधारण युवावस्था का भक्ति-भाव यानि समभाव-समदृष्टि की युक्ति को पढ़-समझ कर, यथार्थता अपनाने के लिए तत्पर हो जाना होगा। इस प्रकार पुरुषार्थ दिखा, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित आत्मीयता अनुरूप चाल पकड़, अपने जीवन का बिगड़ा खेल प्रसन्नतापूर्वक संवारना होगा।

इस संदर्भ में ध्यान दो कि जो भी संसार में भटका हुआ और विषय-विकारों में अटका हुआ दुर्मति इंसान, मौत के पंजे से आजाद होना चाहता है, उसे इस खेल को खेलने की विधि या नीति नियम, कुशलता से समझने होंगे ताकि वह किसी विध् भी, संसार के मायावी प्रभावों से परेशान होकर, शिथिलता को प्राप्त हो व संकल्प कुसंगी बना रोते-झुखते हुए जन्म की बाजी न हार जाए। इस तथ्य के दृष्टिगत अब बिना परेशानी अपने जीवन लक्ष्य को सिद्ध करने के प्रति शीघ्रता से आगे बढ़ने के लिए, बताई हुई क्रिया को आसान समझते हुए, अपने मन में तीव्र लगन पैदा करो और इस परमार्थी नेक खेल को निपुणता से खेलने में इस तरह दक्ष हो जाओ कि इस सुरत-शब्द के सुन्दर व आनन्दप्रदायक विचित्र खेल को ध्यान से खेलते हुए, आपको अंत परिणाम स्वरूप में मोक्ष प्राप्त हो जाए।

हम सब ए विध् अपने जीवन का कल्याण करने में पूर्णतया समर्थ व सक्षम हो जाएँ उसके लिए सजनों हमें सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति की पालना करते हुए, सर्वोच्च सत्य को धारण कर, परमार्थ बनना ही होगा और ऐसा सुनिश्चित कर, हमें समाज की निष्काम भाव से सेवा करने के कार्य को, परमेश्वरी कार्य समझना होगा।

इस संदर्भ में जानो कि यह विश्व परम उत्कृष्ट ब्रह्म है और केवल परमार्थ-सम्बन्धी ज्ञान का चिंतक और साधक ही ब्रह्मशक्ति धारण कर व आत्मस्थित

यानि परमपद में स्थित रहते हुए कुदरत की रमज़ जान तत्त्वज्ञानी बन सकता है। सजनों यह अपने आप में परम श्रेष्ठ बनने जैसी उत्तम बात है। इस परिप्रेक्ष्य में सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ बार-बार कह रहा है कि स्वार्थपरता का रास्ता छोड़, यथार्थ आत्मज्ञान प्राप्त करो व सत्य के प्रतीक यानि सत्यार्थ बन परमार्थ हो जाओ। ए विध् परोपकार प्रवृत्ति में ढल, परमात्मा के निमित्त इस जगत का निष्काम भाव से उद्धार करते हुए, सजन पुरुष बन जाओ व जन्म की बाजी जीत, प्रकाश नाल प्रकाश हो जाओ।

अंत में सजनों यह जानने-समझने के पश्चात् अब हम इस कुदरती खेल को खेलने का शुभारम्भ करते हैं। हमारी सबसे प्रार्थना है कि इस मंगलकारी खेल को अत्यन्त साहस व कौशल के साथ खेलने का अनथक परिश्रम दिखाना और इस खेल को खेलते समय कदापि उस खेल खिलाड़ी सृष्टिकर्त्ता के साथ किसी प्रकार का छल कपट या चालाकी न करना। कहने का आशय यह है कि नेक नीयती से ही यह खेल खेलना और सदा याद रखना कि वह सर्वव्यापक ईश्वर सब देख-सुन व समझ रहा है। इसी के साथ ही अपने ख़्याल द्वारा इस खेल को खेलने के दौरान अपने सगे-सम्बन्धियों व मित्रजनों से झूठ आधारित कोई दाँवपेच मत खेलना वरना आपका ख़्याल ध्यान इधर-उधर भटक, संसार में अटक जाएगा और जीवन का सारा खेल बिगड़ जाएगा।

सजनों वक्त रहते ही आपको यह चेतावनी इसलिए दे रहे हैं क्योंकि अब सांसारिक सुख-भोगों से विमुक्त रह, निश्चिंत होकर आनन्दपूर्वक जीवन बिताने का समय आ गया है। अतः समय का सत्कार करो क्योंकि अब तो परम पुरुष के गुण-धर्म को धारण कर, उसी के हुकम अनुसार, सब कुछ दक्षता से करते हुए, भवसागर में फँसी केवल अपनी ही नाव को पार लँघाने के योग्य नहीं बनना वरन् एक कुशल खेवट की भांति, मंझधार में फँसे हुए अन्य दुर्मति इंसानों को भी साधुवृत्ति में ढाल, उनकी भी नौका पार करने जैसा परोपकार निष्काम भाव से कमाना है। इस प्रकार ऐसा कमाल दिखा, कुल संसार में भिन्न-भिन्न प्रकार के संकटों आदि में फँसे हुए व परमार्थ से भटके हुए इंसानों के

भी कुशल मंगल के लिए सदा तत्पर रहना है और ए विध् परमपिता के कर्त्तव्यपरायण उत्तम सुपुत्र बन जाना है ताकि वह परमेश्वर प्रसन्न होकर आपको आवागमन के चक्रव्यूह से आजाद कर, परमधाम में स्थित कर दें।

इस उत्तम उपलब्धि के दृष्टिगत आओ सजनों अब इस मंगलकारी खेल का शुभारम्भ करते हैं:-

इसके पश्चात् निश्चित पाँच युवा बच्चों ने समभाव-समदृष्टि के सबक़ों की पुस्तक जिसमें दिनाँक 7 अप्रैल 2019 से 1 सितम्बर 2019 तक के सबक़ों का उल्लेख है, उनमें से पहले सबक़ यथा 'परमार्थ दृष्टि-1' के विषय में पावर प्वाइंट प्रेसनटेशन दी। इस परिप्रेक्ष्य में इस प्रेसनटेशन के माध्यम से, कक्षा में सब उपस्थित सजनों से इस तथ्य का निरीक्षण करने को कहा गया कि क्या हकीकत में वे उपरोक्त सबक़ को भली-भांति पढ़-समझ कर उसमें वर्णित सार्थक विचारों को अपना, आगे बताने के योग्य बनकर आए हैं या नहीं?

सजनों इस डिजीटल क्रिया द्वारा सजनों के अन्दर परमार्थ ज्ञान प्राप्त कर, सजन पुरुष बनने के प्रति भाव मजबूत करने के लिए, जहाँ-जहाँ भी उनमें कमजोरियाँ पाई गई वहाँ-वहाँ उन्हें यथार्थ विचारों से अवगत कराया गया। इस तरह इस खेल के माध्यम से उनके अन्दर परमार्थ को अपनाने के प्रति युक्तिसंगत उत्साह भरा गया।

सबकी जानकारी हेतु यह मनोरंजक खेल सभी सजनों के मन को भाया और कुछ को छोड़कर सभी ने उसमें दिलचस्पी से भाग लिया और उससे लाभान्वित हुए। अब आगे भी दिनाँक 7 अप्रैल 2019 से 1 सितम्बर 2019 तक के सबक़ों पर आधारित यह खेल क्रमवार प्रति रविवार, सबक़ दर सबक़, ऐसे ही चलता रहेगा। ऐसा करना सजनों इसलिए भी आवश्यक समझा गया ताकि प्रत्येक अवस्था का सजन, घर बैठे ही निरंतर पुरुषार्थ दिखा, स्वार्थ का रास्ता छोड़ परमार्थ का रास्ता अपनाने के प्रति दिल से रत

हो जाए और इस प्रकार परमार्थ दृष्टि बन यानि मस्तक की ताकी खोल आत्मज्ञानी बन जाए।

प्रति रविवार चलने वाली इस क्रिया की महत्ता के दृष्टिगत सजनों सबसे प्रार्थना है कि इस खेल का पूर्णतया लाभ उठाने से किसी विध् भी कमजोर मत पड़ना। ए विध् ठोस कदमों से परमार्थ के सत्य धर्म के निष्काम रास्ते पर आगे बढ़ते हुए, अपने संगी-साथियों सहित परिवारजनों को भी जीवन विजयी होने का यह मंत्र अवश्य सिखाने का परोपकार दिखाना।

आप सबकी सुविधा के लिए आप इस PPT को निम्नलिखित लिंक पर जा कर देख सकते हो व उसका समुचित लाभ उठा अपना जीवन सार्थक बना सकते हो https://awakehumanity.org/dhyan-kaksh-presentations

इसी के साथ सजनों आज से सजनों बुधवार के बोर्डों को भी क्रमवार समझाने का सिलसिला आरम्भ किया गया। इसी संदर्भ में आगे जो बताया गया वह इस प्रकार है:-

आओ सजनों अब सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के सार रूप - 'बुधवार के बोर्डों' में वर्णित युक्तियों को धारण कर, दो साल में ही अपने कुसंगी संकल्प को संगी बनाने का विधिवत् प्रयास करते हैं ताकि हम समयबद्ध समभाव-समदृष्टि की युक्ति के अनुरूप संतोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म के चार सवाल हल कर, सजन भाव का व्यवहार करने के पूर्णतः योग्य बन जाएं और इस प्रकार दिव्य दृष्टि का सबक़ ले अपनी असलीयत की पहचान कर, एक दर्शन में स्थित हो जाएँ।

अतः हे कलुकाल के दुष्प्रभाव से आत्मविस्मृत हो, असंतोष व अधीरता को प्राप्त हुए, दुर्भाग्यशाली इंसानों ! होश में आओ और सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के हुकम व युक्ति अनुसार, अविलम्ब अपने ख़्याल का नाता, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित, शब्द ब्रह्म विचारों के साथ जोड़ लो। याद रखो ऐसा हितकर पुरुषार्थ दिखाने पर एक तो आपकी बुद्धि ठीक से काम

करने लग जाएगी और दूसरा शरीर भी अचेतन अवस्था को प्राप्त नहीं होगा।

जानो ऐसे बौद्धिक स्तर को प्राप्त होने पर, आप स्वतः ही गलत विचार छोड़ कर, ठीक विचार अपनाना आरम्भ कर दोगे। परिणामतः नासमझी के कारण, जो असत्य-अधर्म का पापयुक्त रास्ता अपना रखा है, उसे छोड़ कर, सत्य-धर्म के रास्ते पर, निष्काम भाव से प्रशस्त हो जाओगे। मानो ऐसा मंगलकारी होने पर आप अपनी वास्तविकता जान जाओगे और आपके मन में भ्रांति या मोह पैदा करने वाली, काम-क्रोध, लोभ-अहंकार रूपी विकृतियाँ, पूर्णतः नष्ट हो जाएँगी और उसमें स्वतः ही आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने की सद्-वृत्ति जाग्रत होगी। ऐसा शुभ होने पर मान लेना कि आपकी बाल्यावस्था समाप्त हो गई और समझदारी की अवस्था का शुभारम्भ हो गया। अतः जान लेना कि अब आपके लिए युवावस्था की भक्ति यानि समभाव-समदृष्टि की युक्ति अपनाकर, परोपकारी प्रवृत्ति में ढलना किसी प्रकार से भी कोई असम्भव बात नहीं रही क्योंकि अब आप अच्छे-बुरे का अंतर समझने की बुद्धि रखने वाले विवेकशील इंसान बन गए हो।

यहाँ हम आप सबको इस बात से भी भली-भांति परिचित कराना चाहते हैं कि जब इंसान सजन श्री शहनशाह हनुमान जी द्वारा बताई हुई भक्ति-भाव की युक्ति रूपी औषधि, नियमित ढंग से सेवन कर, निर्विकार अवस्था को प्राप्त हो जाता है यानि उसकी बुद्धि टिकाणे आ जाती है तो वह स्वतः ही आत्मस्मृति में आ अपने वास्तविक अस्तित्व को जान जाता है। ऐसा होने पर फिर वह अपने जीवन काल में, कभी भी किसी भी कारण, कोई भी ऐसा अधर्मयुक्त कर्म नहीं करता जिसके परिणामस्वरूप उसे दंड रूप में चौरासी लाख योनियों की त्रास भुगतनी पड़े।

कहने का आशय यह है कि वह इंसान तो सदा अपनी सुध-बुध में रहते हुए अर्थात् जीवन की हर अच्छी-बुरी परिस्थिति में मानसिक संतुलन बनाए रखते हुए, अपने ख़्याल को एकरस आत्मप्रकाश में ध्यान स्थिर रखता है और एक आत्मज्ञानी की तरह, अत्यन्त सावधानी व कुशलता से परमेश्वर की आज्ञाओं

का पालन करने वाला, उत्तम पुरुष कहलाता है।

इसी परिप्रेक्ष्य में सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में जिस प्रकार उत्तम पुरुष की महिमा का वर्णन है, हम आप सबको उससे परिचित कराते हुए बताना चाहते हैं कि:-

उत्तम दा सीस ताज सुकर्म,
उत्तम दा अटल राज सुकर्म।
सुकर्मों में उत्तम जकड़ता है,
दु:ख कलेश कष्ट में आवे तो भी सुकर्म वह छोड़ता नहीं।
सच वर्ते सच वर्त वर्तावे, सुकर्मां नूं धारण कर,
फिर किसी से ओ डरता नहीं।।

सजनों इस उत्तम अवस्था को प्राप्त होने के लिए अपने मन में उमंग व उत्साह पैदा करो और विचारशील बनने हेतु सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से उद्धृत, श्री साजन जी के मुख के निम्न वर्णित शब्दों को, शीघ्रता-अति-शीघ्र धारण कर, आत्मसात करो:-

विचार ईश्वर आप नूं मान।
अवविचार ईश्वर इक जान।
विचार इक अपना आप ही मान।
अवविचार कुल दुनियां जान।
विचार करो है ईश्वर अपना आप।
अव विचार ईश्वर है इक साथ।
ईश्वर है अपना आप प्रकाश।
ईश्वर है जे अजपा जाप।

यहाँ विचार और अविचार का अर्थ स्पष्ट करते हुए बता दें कि जहाँ विचार मन में किसी बात के सब अंग देखकर भली भांति सोच-समझ कर निश्चय लेने का प्रतीक है, वहीं अविचार विवेकहीनता का प्रतीक है। जानो सत्य विचार का आधार है।

विचारशक्ति इस सत्य पर आश्रित है। अतः इस सत्य का आश्रय लो।

अब उपरोक्त विचारों को एक चिंतक की तरह गहराई से समझो और न्यायसंगत, विचारशीलता से इन्हें अपने जीवन में आत्मसात करने के योग्य बनने के लिए सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति अनुसार आद् अक्षर को अपने ख़्याल में रमा कर, ब्रह्म सत्ता का ग्रहण करने में निपुण बनो। इस प्रकार आत्मबोध कर ब्रह्ममय हो जाओ। सजनों हम में से कोई भी, इस संसार में आसक्त होकर, आत्मा के स्वरूप का ज्ञान धारण करने से वंचित न रह जाए यानि जीवन के विचारयुक्त रास्ते से भटक न जाए, उसके लिए श्री साजन जी हमें चेतावनी देते हुए कहते हैं किः-

अव विचार जेहड़ा चलदा है सजन, चार चुफेर हार ओ खांदा है।
विचार है जित तुम्हारी ओ सजनों, हर पासियों ओ जितदा रैहंदा है।
अव विचार है जे कवलड़ा रस्ता, हर पासियों ओ ठोकरां खांदा है।
विचार है जे सवलड़ा रस्ता, सदा ही ओ जितदा रैहंदा है।

इसी के साथ ही वह हमें यह बात भी समझाते हैं किः-

हम तो हैं आज़ाद, हुण किसदी सुनो फ़रियाद,
सजनों हुण किसदी सुनो फरियाद।
एहो फ़रियाद है जे अपनी कमाई, एहो कमाई करो सजनों सुखदाई,
सजनों करो सुखदाई।

अर्थात् वह कहते हैं कि हम तो जगत में विशेष होते हुए भी उससे निर्लेप हैं इसलिए हमें केवल सहायतार्थ पुकारने से कुछ प्राप्त नहीं होने वाला वरन् इस हेतु तो साहसपूर्वक कुशलता से सर्वश्रेष्ठ आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने का वह अदम्य कमाल दिखाना होगा जिसके समुचित प्रयोग द्वारा, आप सम अवस्था में रहते हुए, जगत में परमेश्वर के हुकम अनुसार, सब कुछ समर्पित भाव से व समुचित ढंग से करने में निपुण हो जाओगे। सजनों जानो नेक कमाई करने

वाले ऐसे योग्य ईमानदार व्यक्ति बनने पर ही आपकी फरियाद अमल होगी और सुखदाता परमेश्वर आपको इस तरह कंठ लगा लेंगे कि स्वतः ही आपके हृदय में आनन्दप्रदायक अनुभव होने लगेगा। ऐसा अलौकिक सुखबोध होते ही आप स्वतः ही श्री साजन जी के वचनानुसार कह उठोगे किः-

श्री राम रूप है प्यारा, ओ श्री राम रूप।
राम रूप जगत है सारा, ओ श्री राम रूप।
सब जन एहो ही कैहंदे ने।
हनुमान जी सांवले चरणों में रैहंदे ने।
लेकर चरणों दा सहारा ओ श्री राम रूप।
श्री राम रूप है प्यारा ओ श्री राम रूप।

कहने का तात्पर्य यह है कि आपकी सुरत जैसे ही उस मूलतत्त्व से जा जुड़ेगी व उसमें विलीन हो एकरूप हो जाएगी तो आप चिरंतन शांति को प्राप्त हो जाओगे अर्थात् परमधाम पहुँच विश्राम को पाओगे।

दिनाँक 29 सितम्बर 2019 का सबक़

बुधवार का पहला बोर्ड (भाग-1)
(शब्द गुरु की महानता)

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों गत सप्ताह हमने जीवन के विचारयुक्त सवलड़े रास्ते और अविचारयुक्त कवलड़े रास्ते पर चलने के अंतर को परिणामसहित जाना। हम समझते हैं कि इन तथ्यों की जानकारी प्राप्त होने पर आपने व्यक्तिगत रूप से किस रास्ते पर प्रशस्त होना है उसके प्रति दृढ़ संकल्प ले लिया होगा। इस संदर्भ में हम तो मानते हैं कि समझदारी तो इसी में है कि हम दिल से जीवन का विचारयुक्त रास्ता अपनाने को प्राथमिकता दें। सजनों अगर आप सब हमारी इस बात से सहमत हो तो आप सभी अपना ख़्याल व ध्यान मिथ्या संसार के साथ जोड़ने के स्थान पर, मूलमंत्र आद् अक्षर के साथ स्थिरता से जोड़ने का संकल्प लो। ए विध् हिम्मत में आ सजनों परम पुरुषार्थ दिखाओ और ब्रह्म सत्ता ग्रहण कर आत्मिक ज्ञानी बनने में सक्षम हो जाओ।

सजनों ऐसा उद्यम दिखा हम आत्मज्ञानी बनने में सफल हो जाएँ इस हेतु, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार, सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी, हम स्वार्थपर भ्रमित जीवों को, सर्वश्रेष्ठ परमार्थ के सीधे रास्ते पर प्रशस्त करने के लिए, पुनः सर्वोच्च

सत्य यानि ब्रह्म व जीव सम्बन्धी ज्ञान रूपी उत्तम सम्पति को प्राप्त कर व आत्मज्ञानी बन परोपकार प्रवृत्ति में ढल, मोक्ष प्राप्त करने का परामर्श देते हुए कह रहे हैं कि विचार में आ और मान 'शब्द है गुरु, शरीर नहीं है'। कहने का तात्पर्य यह है कि अपने इस सर्वहितकारी उद्देश्य में निश्चित रूप से सफलता प्राप्त करने के लिए ज्ञानी को नहीं, ज्ञान को अपना यानि निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ा। इसके लिए मान कि मूलमंत्र ही शब्द गुरु है महान।

अतः सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति अनुसार, सबसे बुद्धिमान उस मूलमंत्र संग अपनी सुरत अखंडता से जोड़, उसे अपने हृदय में रमा ले और ए विध् ब्रह्म में लीन हो जा। ऐसा करने से उसका जाप करने की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी और जाप की जगह परमार्थी धन की प्राप्ति होनी शुरू हो जाएगी। इस तरह शब्द ब्रह्म से नाता जोड़ व उसके ज्ञान स्वरूप का परिचय प्राप्त कर अपने वास्तविक ब्रह्म स्वरूप को जान ले। इसके पश्चात् उस आत्मस्वरूप यानि 'ओ३म् अमर है मेरी आत्मा और आत्मा में है परमात्मा', को दिल से प्रवान कर और त्यागशील बन महान आत्मा यानि महापुरुष बन जा। याद रख ऐसा करने से आपका मन स्वतः ही शांत अवस्था को प्राप्त हो जाएगा और आप एक आत्मतुष्ट इंसान की तरह सत्य को धारण कर धर्म के रास्ते पर एकरस प्रशस्त रहते हुए अंत देश-काल परिस्थिति से निरपेक्ष सर्वशक्तिमान परमात्म नाम कहाओगे।

जानो इस उच्चतम अवस्था को प्राप्त होने के पश्चात् उस पर स्थिर बने रहने हेतु जो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी चेतावनी दे रहे हैं उसे सदा याद रखते हुए इस मिथ्या संसार रूपी रंगमंच पर विचरते हुए, तन-मन व धन में से किसी के भी दुष्प्रभाव में आकर, अपनी मानता मत कराना यानि कदापि भी अहंकार प्रवृत्ति में ढल गुरु मत बन जाना वरना काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि विकार मन में घर कर, आपको अविचारयुक्त बर्बादी के कवलड़े रास्ते पर प्रशस्त कर आपका सर्वनाश कर देंगे।

सजनों इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए आज फिर से सबको चेतावनी दी जा रही है कि निर्दोषता से जीवनयापन करने हेतु, इस संसार रूपी रंगमंच पर

विचरते हुए कदाचित् तूं-मैं का सवाल उठा, तेरी-मेरी, वड-छोट, अपने-पराए का स्वार्थपर स्वभाव अपनाने की भूल मत करना। सजनों परमार्थ के रास्ते पर स्थिरता से प्रशस्त रहते हुए, अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम को पाने हेतु ऐसा सुनिश्चित करना अति आवश्यक समझना। अंत में हम तो यही कहेंगे कि इस थोड़े से प्रयत्न द्वारा अपने जीवन की बाज़ी जीतने में ही अपनी शान समझो।

इस संदर्भ में सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ भी सारतः यह संदेश दे रहा है किः-

शब्द गुरु जो जानियों शब्द गुरु करो प्रवान, शब्द गुरु है मूल मन्त्र शब्द गुरु है महान। सजना स्टेज दे उत्ते बैठ, अपनी मानता मत करा, शब्द गुरु जो मानियों, हनुमान जी रहे ने समझा। हनुमान बलवान, हैन ओ शक्तिवान, उच्ची है जे उन्हां दी शान, अमर है उन्हां दा नाम, सम्भलो सजनों मत होवो नादान।

भावार्थः- हे इन्सान स्टेज पर बैठ कर अपनी मानता मत करा, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने यह फरमाया है कि गुरु शब्द है शरीर नहीं है। मूल मन्त्र जो आद् अक्षर है, वही शब्द हमारा गुरु है, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों की पालना करते हुए, शब्द को ही गुरु मान।

सजनों इस भावार्थ को गहनता से समझने का प्रयास करने पर, इस संक्रमण काल में कुदरत का फरमान यानि समभाव समदृष्टि का सबक़ पढ़-समझ कर व एक आत्मज्ञानी इंसान की तरह परस्पर सजन भाव का व्यवहार करते हुए, सतवादी बन, एकता, एक अवस्था में आने का संकेत, स्पष्टतः ज़ाहिर होता है। निःसंदेह इस कार्य की सिद्धि हेतु शब्द को गुरु मानकर सर्वव्याप्त अपनी ब्रह्म सत्ता को ग्रहण करना ही होगा। आप सबकी जानकारी हेतु यह कार्य कैसे सिद्ध करना है, इस विषय में आगामी कक्षा में बात करेंगे।

PPT का लिंक
https://awakehumanity.org/dhyan-kaksh-presentations

दिनाँक 6 अक्तूबर 2019 का सबक़

बुधवार का पहला बोर्ड (भाग-2)
(ब्रह्म सत्ता -1)

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों गत सप्ताह हमने जाना कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के नाते, हमारा यह मुख्य कर्त्तव्य है कि हम जगत हितकारी हनुमान जी के अनमोल विचारों को समयबद्ध विधिवत् धारण करने में किसी प्रकार भी कदाचित् कमजोर न पड़ें। कहने का तात्पर्य यह है कि अविलम्ब उनके कल्याणकारी विचारों को अर्थसहित सहर्ष धारण करने का पुरुषार्थ दिखा हम सुमतिवान यानि सद्बुद्धि इंसान बन जाएँ। इस तरह उत्तम मन वाले यानि निश्छल हृदय बन हर शरीरधारी जीव से मित्रवत् सम्बन्ध स्थापित करें ताकि समभाव समदृष्टि के सबक़ को धारण करने के प्रति हमारे मन में रुचि पैदा हो और सजन भाव पर हमारी मजबूत पकड़ बन जाए। इस प्रकार हमारी सुन्दर मणियों जड़त स्वाभाविक गुणमाला की सुगंधि से देवलोक की सुगंधि मात खा जाए और हम सुन्दर विचारों वाले बन परस्पर सद्भावनापूर्ण व्यवहार में ढलें व सुमार्ग पर बने रहते हुए सबका सुमंगल ही करें। सजनों यह मन में मधुरता का भाव रखते हुए सुन्दर मति-बुद्धि वाला, मनस्वी इंसान बनने की बात है।

सजनों अगर हम भी वास्तव में ऐसा ही विद्वान इंसान बनना चाहते हैं तो हमें सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की मंत्रणा अनुसार मूलमंत्र आद् अक्षर को गुरु रूप में हृदय में धारण करना ही होगा क्योंकि मूलमंत्र के रूप में अभिव्यक्त सर्वव्याप्त अपनी ब्रह्म सत्ता को ग्रहण करने पर ही हम अपने ज्योतिर्मय आत्मस्वरूप का सहज बोध करने में कामयाब हो सकेंगे। इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए आओ अब सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित सजन श्री शहनशाह हनुमान जी द्वारा बताई युक्ति अनुसार ब्रह्म सत्ता को ग्रहण कर आत्मज्ञानी बन, परमतत्त्व की सार पाने का तरीका स्पष्टतः समझते हैं:-

इस संदर्भ में सर्वप्रथम जानो कि ब्रह्म क्या है, सत्ता क्या है और ब्रह्म सत्ता क्या है?

जानो ब्रह्म ही एक मात्र वह नित्य चेतन सत्ता है जो जगत् का कारण है तथा सत्, चित्त, आनंद स्वरूप है। इसके अतिरिक्त और जो कुछ प्रतीत होता है, सब असत्य और मिथ्या है।

इसे ईश्वर, परमात्मा, आत्मा, चैतन्य, प्रणव या ओंकार भी कहते हैं।

यहाँ यह भी ज्ञात हो कि ब्रह्म जगत का कारण है, यह ब्रह्म का तटस्थ (निरपेक्ष) लक्षण है। ब्रह्म सच्चिदानंद अखंड, नित्य, निर्गुण अद्वितीय इत्यादि है, यह उसका स्वरूप लक्षण है तथा ब्रह्म परिणामी या आरम्भक नहीं, यह उसका आदि-अंत से रहित होना जनाता है।

आगे जानो कि सत्ता, अस्तित्व, हस्ती, विद्यमानता के भाव या शक्ति सामर्थ्य को प्रदर्शित करती है। अन्य शब्दों में सत्ता से अभिप्राय उस शक्ति से है जो अधिकार, बल या सामर्थ्य का उपभोग करके अपना काम करती है।

इस अर्थ से सजनों ब्रह्म सत्ता जगत की कारण स्वरूप वह परम आद्य, सर्वश्रेष्ठ प्रधान शक्ति है जिससे उत्कृष्ट, यानि बढ़कर तथा जिसके ऊपर, आगे या अधिक कोई अन्य सत्ता अथवा शक्ति नहीं है। यही शक्ति ही अपने अधिकार,

बल या सामर्थ्य का उपभोग करके, ब्रह्मांड की हर शै में काम कर रही है तथा इसी की ही सर्वब्रह्मांड पर हुकूमत व प्रभुत्व है। यहाँ तक कि सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा, पालनकर्त्ता विष्णु या फिर संहारकर्त्ता महेश भी इसी सर्वशक्तिमान ब्रह्म सत्ता को ग्रहण कर, अपने-अपने कार्य क्षेत्र को कुदरती नियमों के अनुसार पूर्ण निपुणता से करने में सफल हो पाते हैं। कहने का आशय यह है कि ब्रह्म सत्ता ही ब्रह्मांड के हर तत्त्व में यानि कीड़ी से लेकर हाथी तक व ब्रह्मा से लेकर तृण में आत्मिक चेतना के रूप में प्रवाहित हो उसे क्रियाशील कर रही है। अन्य शब्दों में कहें तो सजनों यह ब्रह्म सत्ता ही, वह प्रच्छन्न (छिपी हुई) चेतना है जिसने इस विश्व रूपी चमत्कार की रचना की है और जो इस जड़ जगत के हर भाग में, उसकी हर गति में उपस्थित होने का प्रमाण देती है।

व्यक्तिगत स्तर पर इस तथ्य को समझने हेतु सजनों जानो कि जिस प्रकार सूर्य से असंख्य तेजोमय किरणें निकल कर सारे ब्रह्मांड का पोषण करती हैं उसी प्रकार परम चैतन्य ब्रह्म से उद्भृत यह ब्रह्म सत्ता, प्राणों के माध्यम से, जड़ शरीर में चेतना के रूप में प्रवाहित हो, पंच तत्वों से निर्मित इस भौतिक देह का पोषण करती है और इसकी स्थिति, वृद्धि और विकास का आधार बनती है। इस प्रकार यह ही अपने सान्निध्य में रहने वाले प्राणी को ज्ञाता, दृष्टा व कर्त्ता बनाने वाली सर्वमहान शक्ति है तथा यही इंसान की क्रिया का आज्ञार्थक रूप होने के साथ-साथ आत्मिक ज्ञान का मूल आधार है। अतः इस सत्ता को ग्रहण कर, इस शरीर व अखिल ब्रह्मांड में इसकी अनुभूति करना यानि अपनी वास्तविकता का बोध करना, हमारे सर्वांगीण विकास व जीवन के रहस्य का भेदन करने की चाबी है।

ऐसा इसलिए भी कह रहे हैं क्योंकि सतत् रूप से ब्रह्म सत्ता को ग्रहण करने वाले का ही मन-चित्त सचेतन अवस्था को प्राप्त हो अपने सत्य-धर्म पर सुदृढ़ बना रहता है यानि किसी कारण भी प्रतिक्षण उठने वाली क्रमविहीन अनुभूतियों व संकल्प-विकल्प की तरंगों या धाराओं में बहकर भ्रमित नहीं होता। यही नहीं ऐसा इंसान अपनी निश्चयात्मक बुद्धि के प्रयोग द्वारा जीवन का हर कदम सावधान होकर विचारशीलता से आगे बढ़ाते हुए सदा आत्मस्मृति में बना रह

पाता है और अपनी विवेकशक्ति का समुचित ढंग से प्रयोग कर पाता है। इस तरह उसका अंतःकरण निर्मल, हृदय सदा एक रस प्रकाशित व ख़्याल अफुर अवस्था में सधा रहता है और उसके स्वभावों का टैम्प्रेचर कभी भी ऊपर-नीचे नहीं होता। तभी तो वह आत्मतुष्ट व धीर इंसान अखिल विश्व के प्रति समभाव-समदृष्टि रखते हुए सर्वव्यापक भगवान की अवधारणा पर टिका रहता है और सदा चेतनायुक्त पुण्य व निष्काम कर्म करते हुए समाज को सत्य-धर्म की राह पर प्रशस्त करने का परोपकार कमाता है। कहने का आशय यह है कि ऐसा व्यक्ति जीवन में जो भी करता है वह सदा अपने होश-हवाश में बने रहकर करता है। फलतः उसका परिणाम हितकर निकलता है। इसके विपरीत जो भी इंसान इस ब्रह्म सत्ता के ग्रहण में कमज़ोर पड़ जाता है, उसकी चेतना यह मायावी संसार हर लेता है और उस अपोषणयुक्त जीव का मन चंचल, चित्त वृत्तियाँ मलिन, बुद्धि अस्थिर व शरीर क्षीण हो जाता है। परिणामतः अंतःकरण अशुद्ध व स्वभावों का टैम्प्रेचर घटना-बढ़ना शुरु हो जाता है और समूचे शरीर में असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। यही कारण है कि उस असंतुष्ट व अधीर इंसान की नज़रों से समभाव छूट जाता है और वह परस्पर विषमता युक्त आचार-व्यवहार दर्शाते हुए सर्वत्र द्वि-द्वेष का प्रसार करता है। कहने का आशय यह है कि असत्य की राह पर चलने वाला ऐसा अधर्मी व अधीर मानव फिर किसी काम का नहीं रहता।

अंत में सजनों शहनशाह के द्वारे पर होते हुए हमारे साथ ऐसा न हो और हम भी ब्रह्म सत्ता को ग्रहण कर, ऐसे ही विवेकी इंसान बने उसके लिए सजन श्री शहनशाह हनुमान जी अपनी अपार कृपा द्वारा हम अचेतन इंसानों को सचेतन अवस्था में लाने हेतु कई युक्तियाँ बता रहे हैं। इस संदर्भ में सजनों जानो कि यदि हम उनके वचनों को प्रवान कर, चेतनता से इस जगत में विचरते हैं तो शरीर सहित तमाम जड़ वस्तुओं के दोषमय अवगुण, हमें प्रभावित कर दोषयुक्त नहीं बना सकते। वरन् इस सुबोध से तो हम सदा 'ओ३म् अमर है आत्मा और आत्मा में है शुद्ध चेतन स्वरूप परमात्मा', के सत्य को यादगीरी में रखते हुए, परमश्रेष्ठ परब्रह्म परमात्मा के संग अपनी सुरत को एकरस अखंडता से जोड़े

रखना उचित समझते हैं। परिणामतः उत्तम संग प्राप्त कर, सजीवता से उसी भाव या गुण धर्म अनुसार जीवन जीते हुए श्रेष्ठ मानव बनने में सक्षम हो जाते हैं।

इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों हम रसातल में गिरे हुए जीवों के लिए भी बनता है कि सब संकटों से निवृत्ति पाने हेतु यहाँ से जो चेतना की लहर चल रही है, उसे समझ जाग्रति में आएं यानि जन्म जन्मांतरों की मूर्च्छित अचेतन अवस्था से उबर होश में आ जाएँ और महाबीर जी के वचनानुसार खुद पर विचारपूर्वक ध्यान रखते हुए, खुद को सम्भाल लें व आत्मनियन्त्रण द्वारा आत्मसुधार कर अपना भाग्य आप जगा लें।

आप सबकी जानकारी हेतु ब्रह्म सत्ता को ग्रहण करने का यह महान पुरुषार्थ कैसे दिखाना है इस विषय में और विस्तार से आगामी सप्ताह बताया जाएगा। तब तक आप भली-भांति इस सबक़ का अध्ययन कर, इस पर चिंतन व मनन कर, इसे अच्छी तरह से अपनी यादगीरी में बिठा लेना।

दिनाँक 13 अक्तूबर 2019 का सबक़

बुधवार का पहला बोर्ड (भाग-3)
(ब्रह्म सत्ता -2)

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

गत सप्ताह सजनों हमने जाना कि ब्रह्म ही, ब्रह्म स्वरूप में, सर्व चराचर जीवों में विशेषतया विद्यमान रहते हुए, उन्हें अपनी ब्रह्म सत्ता यानि ब्रह्म शक्ति से संचालित कर रहा है। इस तरह इस कारण जगत में ब्रह्म विशेष भी है, निर्लेप भी है और रूप, रंग, रेखा से बाहर भी है। इसलिए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया हैः-

ओ३म् चमके ओ३म् दा मन्दिर विच चमके ओ३म् दा साईं है।
सर्वव्यापी है नाम तेरा सर्व ही जग माहीं है।।
ओ३म् विच विशेष है ओ३म् तों निर्लेप है।
हर अन्दर ओ चमत्कार है सब सनां दा ओ यार है।।

उपरोक्त महत्ता को जानते-समझते हुए ही सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने मूलमंत्र आद् अक्षर को शब्द गुरु

बताया है और यह कहा है कि 'हे इन्सान ! यह तेरी ही ब्रह्म सत्ता है, अगर तूं इस महान सत्ता को ग्रहण कर ले तो तूं खुद ही भगवान है' ।

इस तथ्य से सजनों स्पष्ट होता है कि प्रणव यानि ओ३म् मूलमंत्र आद् अक्षर तटस्थ होते हुए भी ज्ञान स्वरूप है व सम्पूर्ण ब्रह्मशक्ति से युक्त है। कहने का तात्पर्य यह है कि यह आद् अक्षर, आद्य ज्ञान व शक्ति से भरपूर है और आद् ज्ञान शक्ति का प्रतीक है। इसी शब्द से सृष्टि उत्पन्न हुई है और इसी से क्रियाशील हो रही है। इसी संग जुड़ने पर हम शारीरिक-मानसिक रूप से सचेतन व हृष्ट-पुष्ट बने रह सकते हैं। इस तथ्य के दृष्टिगत ही सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया है:-

ओ३म् दा ही मंत्र है, ओ३म् ही स्वतन्त्र है
ओ३म् दे हिन चार वेद, छः शास्त्रां दा प्रकाश है
ओ३म् दे हिन चार वेद, छः शास्त्रां दा प्रकाश है
ओ३म् तों निर्लेप है, उसे दा जप जाप है

इसी महत्ता के दृष्टिगत सजनों मानव के लिए गृहस्थ आश्रम में प्रवेश से पूर्व ही, मिथ्या जगत के स्थान पर, उठते-बैठते, सोते-जागते यानि समस्त क्रियाक्लाप करते हुए इस नित्य आद् मूलमंत्र के साथ, अपना ख़्याल ध्यान स्थिर कर, मित्रवत् भाव से इसी के संग बने रह, इलाही ज्योति स्वरूप में रंग जाने का कुदरती नियम है। इसी कुदरती विधान की मर्यादा में यथा स्थिरता से बने रहने वाला योग्य इंसान ही आत्मज्ञान से अपना हृदय प्रकाशित कर इस कुदरत के खेल की रमज सही अर्थों में जान सकता है और सशक्त होकर निर्भयता से आत्मविश्वास के साथ अपने यथार्थ गुण, धर्म पर सत्यता से बने रह, प्रत्येक कार्य धर्मसंगत करता हुआ, अपना घर सतयुग बना सकता है।

इस तरह वह अपने हृदय रूपी सचखंड में परब्रह्म परमेश्वर, निरंकार का सहज ही अनुभव कर, परमात्म स्वरूप हो सकता है और अपनी वास्तविक शक्ति, सामर्थ्य को पहचान ताकतवर इंसान बन सकता है। कहने का आशय यह है कि जिस प्रकार किसी मशीनी यन्त्र के निरंतर चलने पर उससे ऊर्जा निष्कासित होती है और हम उस ऊर्जा का इस्तेमाल कर मनचाहा काम सिद्ध कर पाते हैं, उसी प्रकार समस्त नकारात्मकता को दूर कर, मूलमंत्र आद् अक्षर का एकरस अजपा जाप करने पर इसमें से जो शक्ति निकलती है हम उसका ग्रहण कर सदा सकारात्मक व शक्तिशाली बने रह पाते हैं। इस तरह अंग-प्रत्यंग की कमजोरी दूर होती है और हम ताकतवर होकर अफुरता से इस जगत में निर्लिप्तता से विचरने में सक्षम हो जाते हैं।

इस बात को समझते हुए सजनों नितोनित्त मूलमंत्र आद् अक्षर की रटन लगाओ। ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि जब भी कोई सजन, मन में उमंग व उत्साह रखते हुए, ध्यान मग्न होकर, मूलमंत्र आद् अक्षर को एकरस चलाता है तो उसका ख़्याल अखंडता से उस संग जुड़ जाता है। ऐसा अद्भुत होने पर, उस शब्द ब्रह्म में से ब्रह्म सत्ता की पावन अविरल ज्ञानरूप धारा बहती हुई धीरे-धीरे उसके मन में प्रवेश करना आरम्भ कर देती है और हृदय में छाई जन्म-जन्मांतरों की मैल शनैः-शनैः धुलती जाती है। परिणामतः इस विशुद्धिकरण की क्रिया द्वारा इंसान चित्त में असीम प्रसन्नता व शांति का अनुभव कर, अफुर अवस्था में आता जाता है और उसे अपने वास्तविक अस्तित्व का यानि आत्मरूप में इलाही नित्य ज्योति स्वरूप का एहसास होना आरम्भ हो जाता है। इस तथ्य को हम दूसरी तरह से इस तरह भी कह सकते हैं कि मानव को इस अवस्था में अपने हृदय में सर्वोत्तम सत्य के प्रकटीकरण का अनुभव होना आरम्भ हो जाता है और वह अपने सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप का बोध कर हर्षित स्वर में आनन्दित हो आत्मविश्वास के साथ कह उठता है:-

आहा मेरी ब्रह्म सत्ता हनुमान जी दे वचन करो प्रवान,
अपना आप लवो पहचान ओ मेरी ब्रह्म सत्ता
ओ हर अन्दर प्रकाशे कोने-कोने डाली-डाली,
हर अन्दर ओ जापे ओ मेरी ब्रह्म सत्ता
ब्रह्म सत्ता पकड़ो इन्सान पा लवो सजनों आत्मिक ज्ञान,
ब्रह्म सत्ता हिवे हाज़रा हज़ूर निकट हिवे निवे कोई दूर।
ब्रह्म सत्ता है अजपा जाप हम तो हैं सारा जग प्रकाश,
ओ मेरी ब्रह्म सत्ता आहा मेरी ब्रह्म सत्ता
ब्रह्म सत्ता है बड़ी महान खुद हूँ मैं आप भगवान,
ओ मेरी ब्रह्म सत्ता आहा मेरी ब्रह्म सत्ता
ओ हर अन्दर प्रकाशे कोने-कोने डाली-डाली,
हर अन्दर ओ जापे मेरी ओ ब्रह्म सत्ता।

इस तरह सजनों विधिवत् निरंतर साधना द्वारा, अपनी वास्तविक हस्ती व शक्ति का बोध कर जब उस सजन का मन परिपूर्णतया ब्रह्म सत्ता से भरपूर हो जाता है यानि उसमें लीन हो जाता है तो मन का कोई भी किसी प्रकार से, कोई अलग अस्तित्व नहीं रहता यानि बुराई की जड़ मन मिट जाता है और ऐसा विलक्षण घटित होने पर मनुष्य को ऐसे असीम आनन्द का अनुभव होता है जिसके एहसास से हृदय प्रफुल्लित हो जाता है और उसका मुख चमक उठता है क्योंकि उसका निज ब्रह्म स्वरूप उसके हृदय में यथार्थता पूर्ण रूप से प्रकट हो जाता है। इस तरह इंसान 'ईश्वर है अपना आप' के विचार पर खड़ा हो ब्रह्मज्ञानी बन जाता है और फिर उसी अधिकार से इस जगत में एक शक्तिशाली व गुणी इंसान की तरह विचरता हुआ यह जान जाता है कि वह सर्वशक्तिमान, सर्वमहान परमात्मा ही सर्वज्ञ व सर्वव्यापक है। ऐसा होने पर उसके लिए समभाव-समदृष्टि के सबक़ अनुसार, समदर्शिता अनुरूप परस्पर सजन भाव का व्यवहार करना सहज हो जाता है। निःसंदेह ऐसा कमाल होने पर सजनों उस सजन का सर्वांगीण सौन्दर्य देखते ही बनता है।

हम भी सजनों सुनिश्चित रूप से ऐसा करने में समर्थ हो सकें उसके लिए हमें भी सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनानुसार, मूलमंत्र जो आद् अक्षर है उसी को शब्द गुरु के रूप में मानते हुए, उसको घड़ी की टक-टक की तरह एकरस चलाना सुनिश्चित करना ही होगा। जानो चित्त को एकाग्र अवस्था में साधे रख, अगर हम अपने हृदय में यह धारणा क्रिया विशुद्ध भाव से करने में सक्षम हो जाएंगे तो स्वतः ही सर्वोच्च ब्रह्म शब्द से, आत्मिक ज्ञान के रूप में निर्मल सद्-विचारों की गंग धारा बह उठेगी और रोम-रोम, रग-रग, हद-हद, पब-पब में ब्रह्म सत्ता के प्रवाहित होने का अनुभव होगा जिससे पूर्ण सचेतन अवस्था में आ, परम आनन्द की प्रतीति होने लगेगी। यहाँ सतर्क रहना कि इस कुदरती धारणा क्रिया के बीच में कोई भी सांसारिक वृत्ति आड़े न आए यानि किसी भी सांसारिक फुरने के कारण धारणा का यह सतत् क्रम न टूटे। ऐसा सुनिश्चित करने पर ही धारण किए हुए सद्-विचारों का मूल अर्थ, समुचित ढंग से समझ पाओगे और उसे जीवन व्यवहार में ला परोपकार कमा पाओगे। इस तरह धारणावान बन यानि प्रबल धारण शक्ति वाले बन अपने जीवन का उद्धार करने हेतु जो धारणा आवश्यक है केवल वैसे ही सात्विक व सकारात्मक विचार धारण कर अपने स्वभाव के अंतर्गत करते हुए अपना स्वभावों का ताना-बाना निर्मल बना पाओगे। कहने का तात्पर्य यह है कि इस विशुद्धिकरण की क्रिया के पश्चात् आपको सुनिश्चित रूप से इन सद्-विचारों पर सुदृढ़ बने रहने का पराक्रम दिखाना होगा ताकि कलुकाल के किसी भी दुष्प्रभाव में आकर, आपका मन किसी विध् भी दोषयुक्त जगत के साथ जुड़, पुनः मलिनता को प्राप्त न हो जाए। इस तरह जगत से तटस्थ होकर, प्राप्त हुए विचारों अनुकूल अपनी स्वाभाविक रंगत बनानी होगी यानि किसी प्रकार से भी सांसारिक गुण-धर्म अपना, मिथ्यता के बाह्य भाव को धारण करने से बच कर रहना होगा ताकि आपकी वृत्तियाँ विकृत न हो जाएं। जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही आप सत्य-धर्म की भक्ति कर यानि प्राप्त सद्-विचारों पर अच्छी तरह से मजबूत पकड़ रखते हुए इस जगत में निर्लिप्तता व निर्भीकता से सम्भल-सम्भल कर निष्पाप विचरने के योग्य बन पाओगे और दृढ़ संकल्पी बन धार्मिक वृत्ति वाले धर्मशील व न्यायप्रिय इंसान

कहलाओगे। इस तरह फिर जीवन में जो भी करोगे वह धर्म शास्त्रों के अनुकूल ही करोगे यानि संतोष, धैर्य का सिंगार पहन, सत्य भाव से धर्म के सीधे रास्ते पर निष्कामता से चलते हुए परोपकार कमाओगे और सत् कुल के इंसान बन जाओगे। इस महत्ता के दृष्टिगत ही सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा हैः-

भक्ति सच धर्म दी कर, फिर इन्सान नूं मौत दा न रिहा डर।
शक्ति दा हथियार हाथों में फड़, बेखौफा बेखतरा जगत में विचर।।

यहाँ सजनों यदि हम वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ब्रह्म सत्ता को ग्रहण करने की आवश्यकता को समझें तो ज्ञात होगा कि इस कलियुग में हर इंसान उचित पालना के अभाव में ज्ञान, गुण, धर्म रूप से नश्वरता से जा जुड़ा है। यही कारण है कि आज उसका आहार-विहार-विचार व व्यवहार सब मिथ्यता पर आधारित हो गया है। यहाँ यह तो हम सब जानते ही हैं कि मिथ्यता शरीर का धर्म है। मिथ्यता से जुड़ना नकारात्मकता से जुड़ने की बात है। नकारात्मकता से जुड़ना शारीरिक, मानसिक व आत्मिक तौर पर अस्वस्थ हो नकारा होने की व तीनों तापों से ग्रसित होने की बात है। कलियुग में अधिकतर इंसान इस नकारा स्थिति को प्राप्त होने के कारण अपने यथार्थ आत्मबल, गुण व ज्ञान को भूल सर्वरूपेण बीमार हो गए हैं। इसीलिए उन्हें होश नहीं है और वे आत्मविस्मृत हो अचेतन इंसान की तरह मदहोशी भरा जीवन जी रहे हैं। ऐसे में पुनः चेतन अवस्था में आ पूर्णतया स्वस्थ होने के लिए उन्हें औषधि की आवश्यकता है। इस संदर्भ में सजनों जिस प्रकार विभिन्न शारीरिक रोगों से निवृत्ति पाने के लिए, विभिन्न वस्तुओं के सत् यानि सार भाग से बनी दवा का सेवन कर उचित परहेज करना पड़ता है उसी तरह मानसिक व आध्यात्मिक रोगों के उपचारार्थ भी सत्त्व यानि सत्य जो सर्व श्रेष्ठता का प्रतीक है, उसे ग्रहण करना पड़ता है और जो उस सत्ता के विरुद्ध हो उसका दमन करना पड़ता है। इस तरह अपने आत्मिक स्वरूप के अस्तित्व को जान सत्तावान बन वैसे ही स्वाभाविक आचरण यानि प्राकृतिक

गुण अपनाने पड़ते हैं और इस जीवनी शक्ति के बल पर चैतन्य होकर चित्त को शुभ कर्मों की ओर प्रवृत्त करना पड़ता है। ऐसा करने पर ही इंसान इस मिथ्या जगत में किसी के बहकावे में आकर नहीं अपितु, अपनी आँखें खोलकर समझदारी से विचर पाता है और इसमें विशेष रूप से रहते हुए भी इससे निर्लिप्त बना रहता है।

कहने का आशय यह है कि अपनी रुग्ण अवस्था के उपचारार्थ यानि पुनः आत्मस्मृति में आ, चेतन अवस्था में बने रहने के लिए औषधि रूप में निश्चित रूप से युक्तिसंगत ब्रह्म सत्ता को ग्रहण कर भरपूर रहना आवश्यक है। निःसंदेह सतत् रूप से इस औषधि का सेवन करने पर ही हम आत्मप्रकाश का अनुभव करते हुए पुनः आत्मिक स्वरूप में स्थित हो सकते हैं और उसी से सब ग्रहण करते हुए सजन भाव यानि आत्मीयता अनुरूप चलन दर्शा सकते हैं।

सारतः सजनों जान लो कि यह ब्रह्म सत्ता अंतर्जगत व बहिर्जगत दोनों में ही अनेक रूपों में विशेष रूप से विद्यमान होते हुए भी उससे निर्लेप है। अतः समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुरूप 'जो प्रकाश मन मन्दिर में देखो, उसी का सर्व जग अन्दर अनुभव करते हुए', अपनी इस वास्तविक ब्रह्म सत्ता को अन्दरूनी व बैहरूनी दोनों वृत्तियों में समरसता से ग्रहण कर उसका वर्त वर्ताव करने वाले सत्-परायण इंसान बनो। जानो यह अपने आप में ब्रह्म के सत् को धारण कर ब्रह्ममय होने की शुभ बात होगी। इसी प्रकार समवृत्ति हो अनेक रूपता से एकरूपता में आ पाओगे और परमात्मा नाम कहाओगे। सबकी सूचनार्थ समवृत्ति में आने की युक्ति भी आपको समय आने पर क्रमशः समझाई जाएगी। तब तक सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार याद रखो किः-

'भक्ति जेहड़ा सजन लैंदा है फड़, शक्ति लैंदा धारण कर
जेहड़ा वचन करे प्रवान ओहदे कोलों भक्ति बड़ी बलवान
जेहड़ा वचन करे प्रवान ओहदे कोलों शक्ति बड़ी महान

इस बात को समझते हुए सजनों सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचन प्रवान करते हुए, अंतर व बाह्य दृष्टि द्वारा एक प्रकार की सत्-धारणा करो ताकि दोनों वृत्तियाँ समरस बनी रहें। याद रखो ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर ही अपने ज्ञान, गुण व शक्ति से परिचित हो पाओगे और यथार्थ रूप से समभाव-समदृष्टि के सबक़ का अनुशीलन करते हुए, सजन-भाव का वर्त वर्ताव दर्शा सजनता के प्रतीक बन जाओगे। इस संदर्भ में सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ भी कह रहा है:-

समभाव समदृष्टि फड़, बेख़ौफ़ा बेख़तरा विचर।
सजन शब्द है बड़ा महान, जैंदे कोलों भक्ति है बड़ी बलवान।
सजन शब्द है बड़ा महान, जैंदे कोलों शक्ति है बड़ी महान।

अतः ऐसा सजन पुरुष बनने के प्रति सजनों अपने मन में प्रबल चाहना पैदा करो और उत्साहपूर्वक लगन से आगे बढ़ते जाओ। सबकी जानकारी हेतु, ब्रह्म सत्ता ग्रहण कर समभाव समदृष्टि की युक्ति अनुसार सजन भाव को कैसे वर्त-वर्ताव में लाना है इस के विषय में आगामी सप्ताह बातचीत करेंगे।

दिनाँक 20 अक्तूबर 2019 का सबक़

बुधवार का पहला बोर्ड (भाग-4)
(सजन-भाव)

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्
ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात्
ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों हम सब यह तो जानते हैं कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की कृपा से समभाव समदृष्टि का स्कूल खुला। यहाँ समभाव का अर्थ है समान प्रकृति या भाव वाला, वहीं समदृष्टि का अर्थ है सबको समान दृष्टि से देखने वाला।

इसी संदर्भ में सजनों क्या हम यह तथ्य भी जानते हैं कि कलियुग के इस अंतिम चरण में इस अनोखे स्कूल को खोलने की आवश्यकता क्यों अनुभव हुई? जानो इस के बारे में बुधवार के पहले बोर्ड में क्रम संख्या 4 पर स्पष्टता से विदित है कि इस निराले स्कूल को खोलने का मुख्य उद्देश्य है कि यहाँ से समभाव-समदृष्टि के सबक़ में पारंगत हो, हर मानव मन से द्वि-द्वेष का भाव छोड़ सजन भाव अपना ले। इस प्रकार ऐसा पुरुषार्थ दिखा, समान प्रकृति में

आ जाये और समभाव नज़रों में कर सजनता के उसूलों पर स्थिरता से चलते हुए व अन्यों को चलाते हुए वह 'सब सजन हुण वैरी कौन' की धारणा पर स्थित रह मृतलोक पर फतह पा ले। आओ अब आगे समझते हैं कि ऐसा सुनिश्चित करने के प्रति अपनाने योग्य युक्ति क्या है:-

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों जानो व मानो कि सजनता की प्रतीक इस युक्ति को समुचित ढंग से परस्पर व्यवहार में लाना अत्यन्त सरल व सहज है। इसलिए सर्वप्रथम यह स्वीकारो कि समभाव-समदृष्टि का सबक़ अपने आप में वह संजीवनी है जो अधम से अधम अवस्था को प्राप्त हुए इंसान को पूर्ण सचेतन अवस्था में ला उसके व्यावहारिक रूप को पूर्णतया स्वस्थ कर देती है और इस युक्ति का विधिवत् प्रयोग करने पर इंसान की वृत्ति, स्मृति, बुद्धि निर्मल व चारित्रिक स्वरूप सुन्दर व इस तरह आकर्षक हो जाता है कि वह सजन पुरुष सबके दिल को भाने लगता है। इसलिए तो सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है कि 'सजन सदो सजन सदाओ सजन ही पहरेवा पाओ, सजन करो वर्त वर्ताओ, जित्तो मृतलोक नूं'।

इस प्रकार सजनों एकता की द्योतक इस व्यावहारिक क्रिया के अनुकूल परस्पर वर्त-वर्ताव सुनिश्चित करने पर ही इंसान चेतनायुक्त मानसिकता का प्रतीक बन सकता है तथा विचारशीलता और नीति-अनीति के भाव से सदा सम्पन्न रह भक्ति-भाव में सुदृढ़ बना रह सकता है। यही नहीं इसी प्रयास द्वारा उसकी पारिवारिक एकता, दिल और दिमाग की एकता, सुरत शब्द की एकता मज़बूत बनी रहती है। तभी तो वेद शास्त्र कहते हैं कि वास्तविक रूप से ज्ञानयुक्त हो सत्यार्थ बन जाओ और ईमानदारी से यथार्थतापूर्ण निष्पाप जीवन जीते हुए इस जगत से निर्लेप बने रहो यानि कर्मगति से मुक्त रहो। ऐसा अच्छे चरित्र वाला इंसान बनने के लिए चाहे जितने भी कष्ट उठाने पड़ें उनके प्रति निश्चिंत रहो। सजनों परस्पर सजन भाव का व्यवहार करने में पारंगत बनना जगत में सचेत

होकर अफुरता से विचरने की बात है। इसी संदर्भ में सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है कि 'फुरने नाल झगड़ लै, फुरना छोड़ अफुरना कर लै'। इस तरह फुरने की सृष्टि से आज़ाद हो, अपने सर्व-प्रकाशित सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप को पा अखंड शांति प्राप्त कर ले और संकल्प के फुरने से मुक्त हो जाये। इस संदर्भ में यह भी जानो कि परस्पर सजन भाव अनुरूप व्यवहार करने से जो सकारात्मकता पनपती है उस निर्मल वातावरण में इंसान के लिए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित युक्ति अनुसार अपनी जिह्वा स्वतन्त्र, संकल्प स्वच्छ व एक निगाह एक दृष्टि दिखाना सहज हो जाता है। ऐसा ही हो उसके लिए विदित युक्ति अनुसार खुद पर पकड़ रखते हुए खालस सोना अवस्था में बने रहना होता है ताकि हमारा हृदय आत्मप्रकाश से सदा इस प्रकार पूर्णतः प्रकाशित रहे कि हम अपनी विवेकशक्ति का इस्तेमाल करते हुए केवल सत्य को ही धारण करें और उसके अतिरिक्त कुछ भी धारण कर अपने विचारों को दूषित न करें। स्थिर बुद्धि बन ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर हम विशुद्ध चरित्र वाले बन जाएंगे और जीवन की यह बहुमूल्य वस्तु प्राप्त कर विचारशील बन जाएंगे। इस प्रकार हम मननशील बन जीवन के हर कदम पर विचारसंगत विचरते हुए दिव्य दृष्टि हो जाएंगे जो अपने आप में दिव्य धर्मी बनने यानि ज्ञान दृष्टि खुलने पर अलौकिक ज्ञान प्राप्त करने के योग्य पात्र बनने की बात है। सजनों ध्यान से सुनो और समझने का प्रयत्न करो कि जब यह अलौकिक ज्ञान रूपी अलौकिक रत्न किसी को प्राप्त हो जाता है तो उसके जीवन की सब इच्छाएँ पूर्ण हो जाती हैं। तभी तो कहा जाता है कि एक आत्मतुष्ट इंसान ही अपने जीवन काल में सजनता के भाव पर निरंतर स्थिर बने रहने का पराक्रम दिखाने पर ही परोपकारी प्रवृत्ति में ढल सकता है व मृतलोक पर विजय प्राप्त कर सकता है। इस महत्ता के दृष्टिगत ही सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में उपरोक्त का भावार्थ स्पष्ट करते हुए कहा गया है:-

'सजन शब्द बड़ा महान शब्द है'। जिह्वा से सबको सजन बुलाओ और अपने

आप को पाओ। सजन शब्द बुलाने से सारा ब्रह्माण्ड एक सजन हो जाएगा और मौत का भय नहीं रहेगा। सजन शब्द बुलाने से बाकी कोई संकल्प नहीं रहेगा। एक निगाह एक दृष्टि होकर हमारी दिव्य दृष्टि हो जाएगी और एक आत्मा होकर परमात्मा से मेल खाकर ज्योति स्वरूप जो अपना आप है उसकी पहचान कर सकेंगे और रोशन हो जाएँगे। 'सजन है कुल चानणा, सजन है कुल दीपक' उपरोक्त को सुनने-समझने के पश्चात् सजनों हम मानते हैं कि आप सबके मन में भी सजनता का प्रतीक बन कुल चानणा व कुल दीपक बनने की तीव्र उत्कंठा अवश्य उत्पन्न हुई होगी। अतः हिम्मत दिखाओ, हिम्मत दिखाओ और यह शुभ लक्ष्य यथासमय सिद्ध कर परमार्थ की तरफ से सोए हुए अपने परिवारजनों व संगी-साथियों को भी इस उच्च अवस्था को प्राप्त होने के प्रति जाग्रति में ला सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित सतवस्तु की रामसत् परस्पर पूछनी आरम्भ कर दो। सबकी जानकारी हेतु सतवस्तु की रामसत् पूछने का तरीका आगामी कक्षा में आपको बताया व समझाया जाएगा।

दिनाँक 27 अक्तूबर 2019 का सबक़

बुधवार का पहला बोर्ड (भाग-5)
(सतवस्तु की रामसत्)

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों हम मानते है कि पिछले सप्ताह सजन भाव अपना परोपकार प्रवृत्ति में ढलने के प्रति हुई बातचीत से आपके मन में भी परोपकार प्रवृत्ति में ढल परोपकार कमाने की उमंग व उत्साह अवश्य पैदा हुआ होगा। अगर ऐसा ही है तो मानो कि यह केवल अपने लिए ही नहीं वरन् अन्य परिवारजनों व सगे-सम्बन्धियों के लिए भी हितकर बात है क्योंकि मन में ऐसे शुभ भाव का उत्पन्न होना हकीकत में अपने वंश के हर सदस्य के ख़्याल-ध्यान को, जगतीय प्रपंचों से हटा, सृष्टि की मूलाधार आदि शक्ति के साथ जोड़ने की बात है। यकीन मानो सजनों अंतर्मुखी होने की इस सुखदायक क्रिया द्वारा परस्पर सजन-भाव का वर्त-वर्ताव करते हुए आप सब, बुरे आचरण द्वारा कुल के लोगों को दुःखी करने वाला स्वभाव छोड़कर, समान प्रकृति में ढल सकते हो व इस प्रकार आत्मतुष्ट होकर प्रसन्नता से भरा आनन्दपूर्वक जीवन जीने में समर्थ हो सकते हो। अन्य शब्दों में ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर ही आप कुलकर्त्ता के रूप में, कुल के हर छोटे-बड़े सदस्य को, कुलीन बनाने वाले मूल पुरुष बन सकते हो। यही

नहीं ऐसा सुनिश्चित करने पर ही आप सब अपने बुरे कर्मों से कुल की प्रतिष्ठा को नष्ट करने वाली क्रियाएँ करने के स्थान पर, कुल की कीर्ति बढ़ाने वाली क्रियाओं में रत हो सकते हो। इस संदर्भ में आप सब मानोगे कि इससे आपके कुल की प्रतिष्ठा तो बढ़ेगी ही बढ़ेगी साथ ही ऐसा करने पर जो आपके मूलाधार चक्र में आशा-तृष्णा की काली सर्पणी कुंडल मार कर बैठी है वह कुंडलनी शक्ति भी जाग्रत हो जाएगी और ए विध् आपका व्याकुल मन पूर्णतः शांत हो जाएगा।

इस विषय में सजनों जानो कि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ भी हम सबको सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों पर स्थिरता से बने रह इसी प्रकार कुल का श्रेष्ठ व्यक्ति बनने के प्रति आवाहन दे रहा है ताकि हम सब अधर्मयुक्त अशुभ कार्य करते हुए अपने कुल के नाशक न बने वरन् धर्मयुक्त शुभ कार्य करने वाले कुल के तारक बनने का आदर्श अपने बच्चों के सामने स्थापित करें। सजनों मानो कि ऐसे बनकर ही हम अपने परिवारजनों को, वंश गुरु रूप में, अच्छी दीक्षा देकर व उन्हें सद्मार्ग पर प्रशस्त कर, पुनः यथार्थपूर्ण जीवन जीने के योग्य बनाने का परोपकार कमा सकेंगे और परमपद प्राप्त कर सकेंगे। तभी तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में भी कहा गया है:-

आप तरे कुल सगली तारे, सोई सजन परमपद पावे
ओ पहुँच गए परमधाम नूं उन्हां पा लिया अपने स्थान नूं
ओ ओ ओ ओ रोशन जगत विच सारे मारे चमकारे

इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए सजनों हम आपको बताना चाहते हैं कि परमात्मा के महान भक्त कुल तारण होते हैं। वे शब्द ब्रह्म विचारों को आत्मसात् करते हैं और भक्ति भाव से अपने कर्तव्य को ठीक निभाने हेतु यानि शुद्ध आचरण द्वारा अपने वंश को परमार्थ पथ पर प्रशस्त करने हेतु निज तन-मन-धन की बाजी लगाने से भी नहीं सकुचाते। ऐसा होने पर सत्य-धर्म का निष्काम भक्ति भाव उनके खून में रम जाता है इसलिए उनको कोई जप-तप, भजन-बन्दगी या समाधियाँ लगाने की आवश्यकता नहीं रहती अपितु वह तो

युवावस्था के भक्ति भाव अनुसार हर काम मानवता की सेवा के निमित्त भक्ति भाव से करते हुए बिना किसी आडम्बरयुक्त जप-तप के ही जन्म की बाज़ी जीत लेते हैं। इसी संदर्भ में सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में भी कहा गया है:-

फ़र्ज़ अदा जेहड़ा करे इन्सान, बुद्धि लई उस अपनी पहचान।
इन्सानां विचों अक्लवान, उस जीवन अपना बना ही लिया,
पा लिया आत्मिक ज्ञान।।
आत्मिक ज्ञान उसने पा लिया, ओहदी जोत जगे निर्वाण।
ओहदा रूप रंग न रेखा राहवे, ओ पहुंच गया परमधाम।

इसी तथ्य के दृष्टिगत सजनों कहा गया है कि जो भी मानव सजनता का प्रतीक है केवल वह ही कुल चानणा व कुल दीपक नाम कहाता है क्योंकि वह ही अपनी योग्यता, चरित्र आदि से अपने परिवार का सम्मान बढ़ाता है व अपने साथ-साथ पारिवारिक सदस्यों की वृत्ति-स्मृति, बुद्धि व भाव-स्वभाव रूपी ताने-बाने को निर्मल रखने वाला कुल भूषण कहलाता है।

इसी महत्ता को समझते हुए सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें विचार शब्द पकड़ व आद् अक्षर मूल मंत्र को गुरु रूप में धारण कर, समभाव-समदृष्टि की युक्ति पर नीतिनुसार युक्तिसंगत चलते हुए परस्पर सजन भाव का व्यवहार करने का निर्देश दे रहा है और कह रहा है कि सजनों इसी व्यावहारिक धर्म को ही कुल धर्म के रूप में अपने परिवार के सभी सदस्यों में स्थापित कर, उन्हें सदाचारिता यानि सत्य-धर्म के रास्ते पर चढ़ा दो। इस प्रकार निष्कलंकता से इस जगत में विचरते हुए सभी अपने जीवन के महान लक्ष्य को पा लो।

सबकी जानकारी हेतु आज की पारिवारिक, सामाजिक परिस्थितियों के दृष्टिगत सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में हमें ऐसा ही कुल श्रेष्ठ व्यक्ति बनने के लिए परस्पर मिलते समय सतवस्तु की रामसत् पूछने का आदेश दिया गया है और कहा गया है कि जब भी दो सत्संगी सजन आपस में मिलें तो उनको सतवस्तु की रामसत् एक दूसरे से पूछनी चाहिए, इस तरह से :-

1. सर्वप्रथम पूछना है कि आप महाबीर जी के द्वारे पर होने के नाते उनके वचनों पर स्थिरता से बने रह अपना गृहस्थाश्रम ठीक से निभा रहे होंगे यानि गृहस्थ आश्रम का फ़र्ज़-अदा ठीक से व हँस कर, कर रहे होंगे। यह घर के स्वामी या घर की मालकिन दोनों को ही अपने गृहस्थाश्रम को समुचित ढंग से चलाने व घर सतयुग बना सतवस्तु में आने के प्रति जाग्रति में लाने की सर्वहितकारी बात है। इस क्रिया द्वारा हमें मोह-माया या कार्य व्यस्तता आदि के प्रभाव वश, जीवन के उच्च लक्ष्य के प्रति विस्मृत हुए व चिंताओं व दुःखों की ओर बढ़ते हुए दम्पत्तियों को रूढ़ावृत्ति में ढलने की तरफ से रोक सकते हैं और उन्हें समझा सकते हैं कि इस विकृत वृत्ति को छोड़ने हेतु ठहरो और मन से अपने दोषों को खोज निकाल शास्त्र विहित् सद्-विचारों को धारण करो और सत्-वादी बन जाओ। ए विध् अविलम्ब आत्मशुद्धि का यह सरल व सुखद रास्ता अपना आत्मपद में स्थिर हो जाओ। सजनों यह है रुढ़दे हुए सजन को पकड़ लेना।

2. तत्पश्चात् उनसे पूछना है कि सच्चाई धर्म के रास्ते पर आप ठीक चल रहे होंगे। सजनों यह क्रिया अपने संगी-साथियों को इस यथार्थ से परिचित कराने की बात है कि क्या वे अपने सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप में स्थिरता से बने रह, शाश्वत धर्म के अनुसार अपने समस्त कर्त्तव्यों का ठीक तरह से पालन करते हुए, सच्चाई धर्म के रास्ते पर ठीक चल रहे हैं या नहीं? यह अपने आप में सच्चाई-धर्म के रास्ते से गिरते हुए, अपने संगी साथियों को सहारा देकर खड़ा करने की बात है। सजनों जानो कि इस औपचारिकता द्वारा हम उन गिरते हुओं को खड़ा करने हेतु उनका ख़्याल सर्वोच्च सत्य के संग जोड़ने जैसा परोपकार कमा रहे होते हैं। जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही वे सत्य के प्रेमी, सत्यदर्शी यानि सत्य-असत्य का विवेक रखने वाले सजन इस जगत में शाश्वतता के भाव से ही विचरते हुए, सत्य के धनी बन, अमीरों के भी अमीर बन सकते हैं।

3. फिर सजनों से पूछना है कि नाम-ध्यान में आप महाराज जी के साथ जुड़े हुए होंगे? सजनों जीवन की बाज़ी जीतने हेतु इस क्रिया द्वारा अपनों से व सब

सत्संगियों से यह पूछने का कि 'सजन श्री शहनशाह हनुमान जी द्वारा प्रदत्त नाम ध्यान में आप युक्तिसंगत ठीक जुड़े हुए हो या नहीं', तात्पर्य यह है कि अगर वे किसी विध् भी अपना ख़्याल ध्यान अपने इष्ट के साथ जोड़े रखने में कमजोर पड़, सांसारिक फुरनों में उलझ चुके हैं और स्वाभाविक रूप से अपनी मानवीय प्रतिष्ठा से गिर निंदा और अपयश के पात्र बन रोते-झुखते हुए, कष्ट-क्लेशों से भरा जीवन जी रहे हैं तो वे अपने संकल्प कुसंगी को संगी बना, अपने वास्तविक स्वरूप का प्रत्यक्ष कर लें और प्रसन्नचित्तता के स्वभाव में ढल जाएं। ए विध् इस क्रिया द्वारा उन्हें एकाग्रचित्त होकर, परमात्म चिंतन में रत रहते हुए यानि अपने मन को प्रभु में लीन रखते हुए शब्द ब्रह्म विचार धारण कर धर्मज्ञ बनने के प्रति जाग्रति में लाने का परोपकार कमाना है। यह है सजनों रोते हुए सजन को हँसा देना।

4. इसके उपरांत उनसे पूछना है कि भक्ति शक्ति आपने धारण की हुई होगी? सजनों परस्पर एक-दूसरे से यह पूछने की औपचारिकता, चिरनिद्रा में सोए इंसानों को पुनः जाग्रति में लाने हेतु यानि भक्ति शक्ति के बल पर, अफुर अवस्था को धारण करने के प्रति उनका रुझान बढ़ाने हेतु अति आवश्यक है। इस संदर्भ में सजनों हम सब भली-भांति जानते हैं कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी भक्ति-शक्ति के राजे हैं और उन भक्त शिरोमणि के आगे तो मौत भी थर-थर काँपती है। अतः मानो कि उन बलवान की चरण-शरण में युक्तिसंगत सुदृढ़ता से बने रहने पर व उनके वचनों की प्रसन्नचित्तता से पालना करने पर ही हमारी आत्मिक शक्ति खुद-ब-खुद ताकतवर हो सकती है। यही नहीं मोक्ष प्राप्ति हेतु परमात्मा के प्रति ऐसे अखंड भक्ति-भाव में ढलने पर ही हम जीवन का वास्तविक आनन्द प्राप्त कर सकते हैं और परमात्मा की ब्रह्मशक्ति को धारण कर ताकतवर नाम कहा सकते हैं। इस तरह इस क्रिया द्वारा हम अपने साथ-साथ, भक्ति शक्ति की तरफ से सोए हुए अन्य सजनों को भी निष्काम भक्ति भाव पर खड़ा कर जाग्रति में लाने का परोपकार कमा सकते हैं।

5. अंत में सजनों सत्संगी सजनों से पूछना है कि यश और कीर्ति में आपका

फर्क तो नहीं पड़ रहा होगा? यहाँ पहले यह जानो कि गृहस्थ धर्म को ठीक निभाना, सच्चाई धर्म के रास्ते पर ठीक चलना, नाम ध्यान में महाराज जी के साथ जुड़े रहते हुए भक्ति शक्ति धारण करना ही हमारी यश और कीर्ति को प्राप्त होने के मजबूत स्तंभ हैं। इसलिए तो सतवस्तु की रामसत् के अंतर्गत यश और कीर्ति प्राप्त करने की बात पर बल दिया गया है और परस्पर मुलाकात के समय एक दूसरे से प्रश्न उत्तर के रूप में यह सुखद वार्तालाप करने के लिए कहा गया है ताकि दोनों पक्ष बार बार गहनता से विचार करें कि कहीं वे सद्चलन के विपरीत, अधर्मयुक्त रास्ते पर चढ़ अनीतिपूर्ण कर्म करते हुए बुरे रास्ते को तो नहीं अपना बैठे। इस संदर्भ में अगर परस्पर किसी से भी कोई ऐसी भूल हो गई है तो समय रहते ही, एक-दूसरे को सुमार्ग पर लाकर, यश कीर्ति प्राप्त करने का परोपकार कमाना है। इसी महत्ता के दृष्टिगत ही सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में परस्पर एक दूसरे से इस रामसत् को पूछने का भावार्थ बताते हुए कहा गया है:-

'फ़र्ज़ अदा हस कर करो। साग को कड़ाह समझो, तो साग भी एक दिन कड़ाह हो जाएगा और उजड़या घर वस जाएगा, सच बोलो सच चानणा है, झूठ अन्धेरा है। सच घर में वर्तो और दुनियां में फैलाओ। धर्म के रास्ते पर चलो धर्म का रास्ता बड़ा महान है इसमें हमारी जीत है। धर्म मत हारना रे, धर्म के ऊपर तन मन धन सब वारना रे। हर समय महाराज जी के साथ नैन जोड़ने से रोता इन्सान हस पड़ेगा। जुड़ना कैसे है ध्यान महाराज की तरफ हो, शब्द चलता रहे, फुरना न ठहरे। जिसके पास प्रबल भक्ति और तीन वक्त का अखण्ड पाठ होगा तो शक्ति खुद बखुद ताकतवर हो जाएगी। जो प्रकाश महाराज का मन मन्दिर में देखा है वही प्रकाश जग अन्दर देखिये तो बिन हथियारों बिन तीरों आप की जय होगी। अधर्म को छुड़ा कर धर्म का रास्ता दिखाना है। धर्म क्या है निष्काम रास्ता कामना से रहित, कुरस्ते पड़े सजन को जो रास्ते पर लावेगा वही पर उपकारी नाम कहावेगा।'

जानो सजनों यह खुद जाग्रति में रहते हुए अन्यों को जाग्रति में लाने की शुभ

बात है। अतः सजनों परस्पर एक दूसरे से सतवस्तु की रामसत् पूछने की युक्ति की महानता व जीवन उपयोगिता को समझो और इस युक्ति को दिल से स्वीकारते हुए आज से ही इसे समुचित ढंग से वर्त-वर्ताव में लाना आरम्भ कर दो ताकि अपने साथ-साथ अपनी कुल को इंसानियत में ढालने में हमसे कहीं चूक न हो जाए । इस तरह इस फ़र्ज़ अदा को अपना सर्वोच्च कर्त्तव्य समझ एक दूसरे के सजन बन एकता में बँध जाओ ताकि इस मायावी जगत का कोई विषय आपकी बुद्धि को हर आपकी वृत्ति, स्मृति व भाव स्वभाव रूपी ताने-बाणे को विकृत कर आपको अपयश व अपकीर्ति का पात्र बना जन्म-मरण का अधिकारी न बना दे। याद रखो सजनों यह सजन भाव अपना कर, सजन पुरुष बनने व यश और कीर्ति प्राप्त कर यशस्वी इंसान बन युग युगांतरों तक अखंड कीर्ति स्थापित करने जैसी मंगलकारी बात है। इस हेतु सजनों कलुकाल के स्वभाव छोड़ सतवस्तु के स्वभाव अपना, अपने ब्रह्म स्वरूप का बोध करो और अपने यथार्थ गुण, शक्ति को पहचान, ताकतवर होकर परोपकार कमाते हुए श्रेष्ठता को प्राप्त होने का पराक्रम दिखाओ। सबकी जानकारी के लिए यह कार्य कैसे सिद्ध करना है, इस विषय में अगले सप्ताह बताया जाएगा।

दिनाँक 3 नवम्बर 2019 का सबक़

बुधवार का पहला बोर्ड (भाग-6)
(ब्रह्म स्वरूप)

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों यह सत्य तो वेद विदित है कि प्रणव मंत्र यानि ओ३म् आद् अक्षर ब्रह्म का ही स्वरूप है और जो मानव ब्रह्म शक्ति से उत्पन्न वाणी यानि शब्द ब्रह्म को धारण कर, अर्थात् ओ३म् आद् अक्षर में स्थिर कर, चिंतन क्रिया द्वारा उसे अपने ख़्याल में रमा लेता है वह सहज ही अपने ब्रह्म स्वरूप को जान अपना आप पहचान लेता है और कह उठता हैः-

जान गया मैं जान गया
खुद को खुद पहचान गया
मैं आत्मा हूँ शरीर नहीं
जान गया मैं जान गया

ए विध् सजन पुरुष बन वह परोपकार प्रवृत्ति में ढल इस जगत में परोपकार कमाता हुआ जगत में विशेष रहते हुए भी सदा उससे निर्लेप रह, अपने

सच्चिदानंद स्वरूप में निर्विकारता से स्थित बना रहता है।

जानो सजनों इस सर्वोच्च अवस्था में एकरस बने रहने वाले विष्णु भक्त वैष्णव जन का हृदयपटल परिपूर्णतया विशुद्ध अवस्था को प्राप्त हो जाता है और उसकी चित्त भूमि पर, देवलोक की सुगंधि को भी मात करने वाला सर्वाधिक सुगंधित ऐसा ब्रह्म कमल/पुष्प खिल उठता है जिसकी शोभा देखते ही बनती है। ऐसा होने पर हृदय में पवित्रता तथा अपने ब्रह्म स्वरूप के प्रति अपार श्रद्धा व विश्वास का भाव पनपता है और इंसान अपने नित्य ब्रह्म स्वरूप में स्थिरता से बने रह, परमेश्वर की हर आज्ञा को प्रसाद रूप में ग्रहण करते हुए, इस जगत में केवल ब्रह्म कर्म यानि वेद विहित कर्म करते हुए कर्मगति से विमुक्त बना रहता है।

इससे सजनों स्पष्टतः समझ आता है कि ब्रह्मज्ञान ही परम तत्त्व का ज्ञान है। अतः हर इंसान को गृहस्थ होने से पहले के अविवाहित जीवन में ही पुरुषार्थ दिखा आत्मिक ज्ञान की प्राप्ति हेतु ब्रह्म के साक्षात्कार की साधना पूरी कर लेनी चाहिए। जानो ऐसा सुनिश्चित करना इसलिए भी अनिवार्य है क्योंकि इंसान नित्य ब्रह्म को जानने पर ही, ब्रह्मज्ञानी बन, ब्रह्मा से उत्पन्न इस मायावी जगत की रमज उचित ढंग से जान अपने सारे कर्त्तव्यों का निर्वहन समुचित ढंग से मानव धर्म अनुरूप कर सजनता का प्रतीक बन पाता है।

इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए ही तो सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ बार-बार हम पथभ्रष्ट हुए इंसानों को, मिथ्या संसार के साथ जुड़ वैसे ही मिथ्यता से परिपूर्ण, पल-पल परिस्थितियों अनुसार बदलने वाले नकारात्मक स्वभाव अपनाने के स्थान पर, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की सौखी युक्ति अनुसार, अपना वास्तविक ब्रह्म स्वरूप पहचान, उसी प्रकृति में ढलने का भिन्न-भिन्न तरीकों से आवाहन दे, ब्रह्म ज्ञानी बनने का सुझाव दे रहा है।

इस संदर्भ में हम सुनिश्चित रूप से ऐसा करने में सफलता प्राप्त कर सकें उसके लिए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित शब्द ब्रह्म विचार हमें अपने ख़्याल को सर्वप्रकाशित ब्रह्ममय स्वरूप के साथ सुदृढ़ता से जोड़े रखने के

प्रति अदम्य पुरुषार्थ दिखाने का निर्देश दे रहे हैं। यहाँ इस सत्य को जानो कि हमारे इसी वास्तविक नित्य ब्रह्म स्वरूप ने ही, इस जगत का विशेषतः सेवा भाव से उद्धार करने के निमित्त ही, यह मिथ्या शरीर यानि बाह्य आकृति धारण कर रखी है और इसके अतिरिक्त इसका कोई मकसद नहीं। इसलिए तो कहते हैं कि इस मिथ्या शरीर या संसार से किसी विध् भी अपने ख़्याल को जोड़ना आत्मघाती बनने जैसी मूर्खता पूर्ण बात है। हम में से किसी से ऐसी भूल न हो उसके लिए हमारे लिए बनता है कि हम सहर्ष सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति का अनुशीलन करते हुए अपने ब्रह्म स्वरूप के ज्ञाता यानि तत्त्वज्ञ बनने में किसी तरह से भी किंचित् मात्र भी विलम्ब न करें और स्वरूपवान बन इलाही सुन्दरता के प्रतीक बन जाएं व ब्रह्म नाम कहाएं।

अतः इस संदर्भ में हम तो यही कहेंगे कि हे महाबीर जी की चरण-शरण में आए हुए भाग्यशाली इन्सानों ! दिलचस्पी में आकर केवल इतना सा पराक्रम दिखाने पर ही आप अपने ब्रह्म स्वरूप को पहचान लोगे और स्वतः ही कह उठोगे कि 'ब्रह्म स्वरूप है अपना आप, हम तो हैं ओही प्रकाश'।

इस संदर्भ में सजनों जानो कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के नाते हमारा सर्वमहान कर्त्तव्य है कि हम नीतिसंगत परमार्थ के रास्ते पर आगे बढ़ते हुए शीघ्रता-अति-शीघ्र ब्रह्म होने की अवस्था को प्राप्त करें और समय की इस चाल को दृष्टिगत रखते हुए कि 'कलुकाल जा रहा है और सतवस्तु आ रहा है', सभी स्वार्थपर, जड़-बुद्धि, अंत दग्ध-भस्म को प्राप्त होने वाले इंसानों के मन में, समय रहते ही, अपने ब्रह्म स्वरूप को जानने के प्रति उमंग व उत्साह भरने जैसे शुभ कार्य में रत हो जाएं। इस प्रकार उन कर्मों के मारे हुओं को भी, जीव-ब्रह्म के सत्य से परिचित कराने का परोपकार कमा, उनका कल्याण करने में अपना तन-मन वारने से भी न सकुचाएं।

सजनों आओ अब ऐसा मंगलकारी परोपकार कमाने की युक्ति समझते हैं। जानो जिस सौभाग्यशाली को अपने ही पराक्रम द्वारा ब्रह्मज्ञान प्राप्त हो जाता है उस निज ब्रह्म स्वरूप के पारखी का तेज व बल सामान्य से इतना

प्रभावशाली हो जाता है कि उस के मन में स्वतः ही दीप्ति, वीरता और उत्साह जैसे गुणों का विकास होता है और इसलिए वह ओजस्वी इंसान अपने कुदरत द्वारा निर्धारित जीवन के परम पुरुषार्थों को बड़े-बड़े आघात आदि सह कर भी समयबद्ध पूरा करने में भली-भांति समर्थ हो जाता है। ऐसा अद्‌भुत होने पर वह सुमतिवान अपने ब्रह्म स्वरूप का भान होते ही सम्पूर्ण जगत के हर प्राणी को ही वैसा अनुभव करने के प्रति जाग्रति में लाने के लिए ब्रह्मवाद का समर्थन करते हुए पुकार-पुकार कर कह उठता है कि जानो व मानो यह सम्पूर्ण विश्व ब्रह्ममय है अथवा ब्रह्म-निर्मित है और उसी की शक्ति से यह ब्रह्मांड चल रहा है। इसलिए आप भी इस मिथ्या संसार की चकाचौंध में उलझ कुमति को प्राप्त होने के स्थान पर अपने मन को ब्रह्म के ध्यान में लीन रखने को प्राथमिकता दो। जानो यह कार्य अत्यन्त शांत वातावरण में ही सिद्ध कर पाओगे। अतः मौन वृत्ति अपना शांत हो जाओ। इस प्रकार अपने अन्दर आत्मा की आनन्दरूप या ब्रह्मरूप होने की भावना उत्पन्न करो और ऐसा सर्वहितकारी पुरुषार्थ दिखा व अपने मन को ब्रह्मलीन रखते हुए आध्यात्मिक ज्ञानी बन जाओ। अंत में जानो व मानो कि इस सर्वोच्च अवस्था को प्राप्त होने पर आप इस सत्य का समर्थन करते हुए परमार्थ की तरफ से सोए हुए इंसानों को जाग्रति में लाने के लिए हर्षित स्वर में गा-गा कर कह उठोगेः-

जेहड़ा प्रकाश देखो मन मन्दिर, ओही प्रकाश देखो जग अन्दर
ओही प्रकाश देखो रग रग में, ओही प्रकाश देखो सारे जग में
ओही प्रकाश हुआ जनचर बनचर, ओही प्रकाश हुआ जड़ चेतन
ओही प्रकाश है हद हद में, ओही प्रकाश है सारे जग में
ओही प्रकाश सप्तद्वीप गगनमंडल, ओही प्रकाश हुआ भूमंडल
ओही प्रकाश है पग पग में, ओही प्रकाश है सारे जग में
ओही प्रकाश हुआ आद अंत, ओही प्रकाश हुआ सूरज चन्द
ओही प्रकाश है सर्व सर्वज्ञ में, ओही प्रकाश है सारे जग में
ओही प्रकाश हुआ निर्वाण दे अन्दर, ओही प्रकाश हुआ जगत जितेन्द्र
ओही प्रकाश है घट-घट में, ओही प्रकाश है सारे जग में।

भावार्थः-जो प्रकाश या स्वरूप मैंने अपने मन मन्दिर में देखा है, जिस स्वरूप के साथ मेरा प्यार है (श्री राम, रहीम, श्री कृष्ण करीम या दस पातशाह जी के साथ) वही स्वरूप मेरा बाहर हर एक में है और वही मेरी असलियत है। यह सारा प्रतिबिम्ब मेरा ही है। इसी प्रतिबिम्ब को हर एक में देखना है, जनचर बनचर में वही है, जड़ चेतन में उसी का प्रकाश है। यही असलियत मेरा ब्रह्म स्वरूप है 'वृत्ति है जे एहो कमाल वृत्ति है जे एहो विशाल' एहो कोई मुश्किल फड़दा विरला कोई धारण करदा। जेहड़ा देखो सजनों मन मन्दिर प्रकाश ओही ब्रह्म स्वरूप है अपना आप।

इस प्रकार खुद ए विध् परोपकार कमाते हुए अन्य परमार्थ के रास्ते से भटके हुए स्वार्थपर भ्रमित बुद्धि इंसानों को भी परोपकार प्रवृत्ति में ढलने के प्रति उत्साहित करने के लिए कह उठोगे कि हे जीवन के वास्तविक पथ से भूले भटके इन्सानों! आप भी ब्रह्म बीज अर्थात् प्रणव मंत्र को धारण करो और विधिवत् सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ पढ़-समझ कर ब्रह्म सम्बन्धी चिंतन में रत हो जाओ। ए विध् अपने मस्तक की ताकी खोल आत्मिक ज्ञान प्राप्त करो व ब्रह्मरूप हो मोक्ष को प्राप्त कर लो।

दिनाँक 10 नवम्बर 2019 का सबक़

बुधवार का पहला बोर्ड (भाग-7)
(मूलमंत्र-शब्द गुरू, अमर आत्मा, बोर्ड का सार)

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों जैसा कि हमने पिछली कक्षा में जाना कि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें स्पष्ट शब्दों में निर्देश दे रहा है कि युक्ति अनुसार मजबूती से परम लक्ष्य की ओर आगे बढ़ते हुए पहले जानो कि 'ब्रह्म स्वरूप है अपना आप, हम तो हैं ओही प्रकाश', और इसके पश्चात् इस सत्य को धारण कर, कमाल आनन्द प्रदायक महान वृत्ति पर स्थिरता से खड़े हो जाओ। ऐसा सुनिश्चित करने के लिए, अपने ख़्याल द्वारा मूलमंत्र शब्द गुरु का निरंतर चिंतन व मनन करते हुए, मन-मन्दिर में अपने ब्रह्म स्वरूप का अनुभव करो और ए विध् पुरुषार्थ दिखा अपने यथार्थ ब्रह्म स्वरूप को जान जाओ।

इसके पश्चात् अपने आत्मिक स्वरूप की अमरता का यथार्थतः भान करने हेतु नितोनित ख़्याल द्वारा ओ३म् मूलमंत्र की एकरस रटन लगाने में इस तरह समर्थ हो जाओ कि यह पावनता व सुन्दरता का प्रतीक परब्रह्मवाचक प्रणव मंत्र आपके ख़्याल-ध्यान में रम जाए। सजनों जानो ऐसा विचित्र होने पर आपका

ख़्याल जगत में विचरते हुए भी स्वतः ही उससे स्वतन्त्र रहने में सक्षम हो जाएगा और हृदय सत्य के प्रकाश से भरपूर हो जाएगा। जानो इस उत्तम अवस्था में आपके ख़्याल को ईश्वर की यह जगतीय माया, किसी विध् भी भ्रमा कर अपने संग नाता जोड़ सत्य पथ से विचलित नहीं कर सकेगी।

इस संदर्भ में सजनों हम सब यह तथ्य तो जानते ही हैं कि 'सत्य ही चानणा है' और जिस किसी विद्वान मानव के मन में सत्य प्रकाशित रहता है वह सहज ही 'अमर है मेरी आत्मा' के तथ्य को पूर्णतः जान-पहचान जाता है और ऐसा कमाल होने पर वह उसी धर्म पर खड़े हो अपना सोया भाग्य जगा लेता है। कहने का तात्पर्य यह है कि वह आत्मतुष्ट व धीर मानव अपनी जीवनी शक्ति अमर आत्मा के भाव को धारण कर उसकी रमज़ को जान जाता है। इस तरह उस ब्रह्म स्वरूप का पारखी इंसान अन्यों के समक्ष निर्भयता से आत्मविश्वास के साथ कह उठता है कि 'अमर है मेरी आत्मा, न जन्म में है, न मरण में है, न रोग में है, न सोग में है, न ख़ुशी में है, न ग़मी में है, न मान में है, न अपमान में है, न अमीरी में है, न ग़रीबी में है, वह अमीरों का भी अमीर है। इस आत्मतुष्टि के पश्चात् सजनों वह इंसान इस जगत में कदम-कदम पर विचार पकड़ते हुए व विचार से ही प्यार रखते हुए परमार्थ की राह अपना कर, अंत अपने रूप-रंग-रेखा रहित असलियत स्वरूप को जान, प्रकाश नाल प्रकाश हो जाता है।

आप सब भी यथोचित पुरुषार्थ दिखाते हुए ऐसा मंगलकारी परिणाम प्राप्त करने में सुनिश्चित रूप से समयबद्ध सफल हों उसके लिए आपको ऊपरलिखित तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए अमरता का भाव अपनाकर वज्र अवस्था को प्राप्त हो जाना होगा। अवश्यमेव ऐसा ही हो उसके लिए आपको संकीर्णता के भाव को अविलम्ब त्याग, उदार हृदय बनना होगा यानि छोटी-छोटी बातों को दिल में स्थान नहीं देना होगा। याद रखो अपने ख़्याल को हर तरफ से हटा, जिसके मन में इस प्रयास द्वारा अमरता का भाव स्थिर हो जाएगा, वह समवृत्ति अमीरों का भी अमीर इंसान जन्म-मरण, रोग-सोग, खुशी-गमी, मान-अपमान, अमीरी-गरीबी इन समस्त अवस्थाओं से अप्रभावित रह व मन को संकल्प-रहित अवस्था में साधे रखते हुए, निरन्तर अपने लक्ष्य की साधना में तब तक एकरस बना रहेगा, जब तक कि उस लक्ष्य को भेद नहीं लेता।

इसी संदर्भ में अगर इसके विपरीत कोई संकीर्ण हृदय दुःख-सुख रूपी विभिन्न बदलती परिस्थितियों में भूलवश विचलित हो, उन परिस्थितियों का गुलाम हो जाएगा, वह अपने निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति की तरफ से डगमगा जाएगा और काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी सांसारिक भावों को आमंत्रित कर, दुर्जन पुरुष बन जाएगा और ए विध् दुष्कर्मों के चक्रव्यूह में फँस अपना अनमोल जीवन बरबाद कर बैठेगा।

इस विषय में सजनों हम तो यही कहेंगे कि अब जब चौरासी भुगतने के पश्चात्, परमेश्वर ने कृपा कर यह अनमोल मानव चोला आपको बख़्शा है तो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों की दिल से पालना करने का भरसक पुरुषार्थ दिखाओ। इस तरह जिस उत्तम लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु यहाँ पर आते हो, उसके प्रति सदा सचेत बने रह, जन्म की बाजी जीत जाओ और श्रेष्ठ मानव कहलाओ।

सजनों ऐसा श्रेष्ठ इंसान बनने हेतु जानो कि जो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के, सार रूप बोर्डों में से, अब तक क्रमशः आपको बताया गया है, उन समस्त क्रियाओं को दिलचस्पी में आकर नियमित रूप से युक्ति अनुसार अपने मन-वचन-कर्म से आत्मसात् करने का पुरुषार्थ दिखाने पर ही आप, दो साल के निर्धारित अन्तराल में पढ़ाई करते हुए, आत्मज्ञानी बन, अपने इस वास्तविक यथार्थ का कि 'असलीयत स्वरूप है जे ब्रह्म, जैंदा रूप रेखा नहीं रंग' और 'ओ३म् विच विशेष हूँ ओ३म् तूं निर्लेप हूँ' सत्य बोध करने में कामयाब हो पाओगे वरना कदाचित् नहीं।

इस संदर्भ में सजन श्री शहनशाह महाबीर जी हम कलुकालवासियों पर अपनी अपार कृपा दर्शा, हमारी यादाश्शत को पुनः तरोताजा करते हुए व हमारा ध्यान प्रणव मंत्र, आद् अक्षर की ओर आकर्षित करते हुए बारम्बार कह रहे हैं कि हे इन्सान मान कि 'मूलमंत्र है शब्द गुरु, मूलमंत्र है शब्द गुरु'।

इस तरह वह हमारी धारणा को शब्द गुरु के प्रति और सुदृढ़ करने के लिए अपने मुख से मूलमंत्र शब्द को गुरु बताते हुए कह रहे हैं कि 'हे इन्सान जान

यह तेरी ही ब्रह्म सत्ता है' । अगर परम पुरुषार्थ दिखा तूं इस महान सत्ता को ग्रहण करने में समर्थ हो जाए तो तुझे स्वयंमेव ही समझ आ जाएगा कि 'मैं खुद ही भगवान हूँ' । जान ले यह आत्मस्मृति में आने की शुभ बात है।

इसी के साथ वह इस उत्तम अवस्था को प्राप्त इंसान को, इसी भाव अनुसार आगे बढ़ने का समझौता देते हुए कहते हैं कि इस जगत से स्वतन्त्र मूलमंत्र आद् शब्द गुरु के साथ अपनी सुरत का अटूट नाता जोड़। ए विध् युवावस्था के भक्ति भाव यानि समभाव-समदृष्टि के सबक़ अनुसार, व्यावहारिक रूप से नीतिसंगत सजन भाव पर डटे रहते हुए, सतवस्तु की रामसत् के अंतर्गत बताए गए गृहस्थ धर्म के वचनों पर परिपक्व हो जा और ए विध् अपना घर सतयुग बना सत्यार्थ बन जा। इसके पश्चात् सत्य कमाते हुए सत्यरूप हो ब्रह्म नाल ब्रह्म हो अपना जीवन सफल बना ले।

याद रख ऐसा मंगलकारी पुरुषार्थ दिखाने के उपरान्त आपको स्वतः ही 'जो प्रकाश मन मन्दिर में देखा है, वही प्रकाश सारे जग में दिखाई देगा' । इस श्रेष्ठ अवस्था को प्राप्त होने पर उस प्रकाश में अटल होकर हर हालत में एकरस बने रहना क्योंकि 'तूं अजन्मा है, तेरी आत्मा अमर है' । इस तरह से एकात्मा होकर तूं स्वतः ही देखेगा कि सर्व-सर्व ब्रह्म ही ब्रह्म है। यह ब्रह्म सर्व में विशेष भी है, निर्लेप भी है और रूप, रंग, रेखा से बाहर है।

इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों आप भी पिता के वचन प्रवान कर ऐसा करना सुनिश्चित करो और अपने जन्म की बाजी जीत श्रेष्ठ मानव कहलाओ।

दिनाँक 17 नवम्बर 2019 का सबक़

बुधवार का दूसरा बोर्ड
(भाग-1)

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के माध्यम से, श्री साजन जी हमें विधिवत् ब्रह्म सत्ता ग्रहण कर, मन मन्दिर में शोभित, अपने ही ब्रह्म स्वरूप या प्रकाश में, अपना ख़्याल व ध्यान सदा स्थिर रखते हुए, आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने का आवाहन् दे रहे हैं। इसी के साथ सक्षमता से इस कार्य की समयबद्ध सिद्धि करने हेतु परोपकारी सजन श्री शहनशाह हनुमान जी समय की चाल को देखते हुए, हमें बैहरूनी वृत्ति को छोड़ कर, अन्दरूनी वृत्ति को धारण करने हेतु यानि महाराज जी के साथ जुड़ने हेतु केवल प्रोत्साहित ही नहीं कर रहे वरन् अपने इष्ट सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी द्वारा प्रदत्त युवावस्था की युक्ति का महत्त्व सहित स्पष्टता से बखान करते हुए उनके इन वचनों को अविलम्ब प्रवान करने का आग्रह भी कर रहे हैं। सजनों इसी महत्ता को ध्यान में रखते हुए उनके उपरोक्त वचन बार-बार सभा में दोहराए जाते हैं ताकि सभा में आने वाला हर सदस्य सुनिश्चित रूप से अपने जीवन लक्ष्य की प्राप्ति हेतु उन्हें सुदृढ़ता से प्रवान करने योग्य बनें।

इस संदर्भ में जानो कि वह शहनशाह चेतावनी देते हुए कह रहे हैं कि सभा में आँखें बंद करके बैठने के स्वभाव को पकड़ो ताकि आपका ध्यान महाराज जी के साथ इस तरह जुड़ा रहे कि किस विध् भी टूटने न पाए। जानो इस निपुणता को प्राप्त होने पर ही आपकी बंदगी यानि उपासना स्वीकार्य होगी और हमारे मन में सेवकत्व का भाव जाग्रत होगा जो अपने आप में मैं-भाव यानि अहंकार के मिटने का सूचक होगा।

ऐसा ही हो इस हेतु सजनों सजन श्री शहनशाह महाबीर जी कड़े शब्दों में हमें सतर्क करते हुए कहते हैं कि जो सजन सभा में वृत्ति लगाकर खलबली मचाते हैं वह बिल्कुल बंद हो गई है। अब जो सजन तीन बार मना करने पर भी काबू में नहीं आएंगे उनको कहा जाएगा कि वे घर पर बैठें। उनको सभा में आने की आज्ञा न होगी। सजनों इस हितकारी निर्देश को स्मरण रखते हुए सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के ऊपरलिखित वचनों को सहर्ष प्रवान करो और बाल अवस्था के खलबली से भरे रास्ते पर चलना बंद कर दो। कहने का तात्पर्य यह है कि अपने ख़्याल व ध्यान को संसार के साथ जोड़, दुष्टता के प्रतीक खलनायक बन, किसी विध् भी सभा में हलचल मत मचाओ क्योंकि यह तुच्छ कर्म कर अपने को आप नष्ट करने जैसी बुरी बात है। याद रखो जो बार-बार इस चेतावनी को सुन कर भी सावधान नहीं होता यानि बुराई को त्याग कर सम्भलता नहीं वह दुर्जन अधम अवस्था को प्राप्त हो जाता है और यही कारण है कि कभी भी अन्दरूनी वृत्ति को धारण नहीं कर पाता।

सजनों अब इस परिणाम को याद रख, महाबीर जी के वचनों की यथा पालना करते हुए अपना जीवन बनाना या उनके निर्देश के विरुद्ध बैहरूनी वृत्ति में बने रह अपना जीवन बरबाद करना, स्वयं आपके अपने हाथ में है। इस संदर्भ में यदि चाहते हो कि हम अपना जीवन बनाने हेतु, अपने आप सम्भल जाएँ तो फिर अपनी सुरत को संवार कंचन करना होगा। यहाँ जानो कि सुरत क्या है?

जानो सुरत है अन्दर का अपना ख़्याल जोकि स्त्री भाव में नज़र आता है। यह सुरत महाराज जी के साथ बातें करती है। उनको कई तरीकों से रिझाती है।

वहाँ शरीर का कोई सवाल नहीं। चूंकि सजनों आत्मज्ञान के अभाव से हमें आत्मविस्मृति हो गई है इसलिए हम अपनी सुरत को नहीं समझ पा रहे हैं। इस मंद अधम अवस्था से उबरने के लिए हमें अपने ख़्याल को मिथ्या संसार की तरफ से पलटा खवा, आत्मप्रकाश में ध्यान स्थिर रखना होगा। जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही हम अपने वास्तविक स्वभाव यानि गुण, धर्म को समुचित ढंग से धारण करने में सक्षम हो पाएंगे। इस प्रकार फिर जैसे-जैसे मिथ्यता से परिपूर्ण दोषयुक्त स्वभाव छोड़, यथार्थ मूल स्वभाव पकड़ते जाएंगे, वैसे-वैसे हमारी सुरत कंचन होती जाएगी। इस तरह हमारा स्वाभाविक रूप से हुआ घाटा यानि हानि पूरी हो जाएगी। कहने का तात्पर्य यह है कि हम अपने यथार्थ स्वभाव यानि अलौकिक गुण-धर्म को धारण कर , सर्व शक्तिमान इंसान की तरह अपनी सुरत को पूरी तरह से एकरस कंचन अवस्था में साधे रखने में कामयाब हो जाएंगे।

इस संदर्भ में सजनों आगे परमेश्वर चेतावनी देते हुए कहते हैं कि अगर किसी कारण भी ऐसा सुनिश्चित न किया तो यत्न करने पर भी आप अपनी स्त्री रूपा सुरत को कंचन रखने में कामयाब नहीं हो पाओगे। अतः विधि अनुसार सुरत को कंचन रखते हुए, महाराज जी के साथ मेल खा कर, सब कुछ देख पाने के योग्य बनने के लिए, सर्वप्रथम स्त्री होने का भाव अपनाओ। तत्पश्चात् इस धर्म पर स्थिर रहते हुए, आद् पुरुष के साथ निश्चित रूप से मेल खाने हेतु, महाबीर जी की मंत्रणा अनुसार, सत्य धर्म के भक्ति भाव पर स्थिर बने रह, इस तरह शक्तिशाली बन जाओ कि आपके मन से उनके प्रति प्रेम व मस्ती का सद्भाव सदा एकरस बना रहे। इस प्रकार ऐसा पुरुषार्थ दिखा सम, संतोष व धैर्य का सिंगार पहन विचार पर खड़े हो जाओ तथा एक वैरागी की तरह अपनी सुरत को प्रभु चरणों में जोड़ दो और उनके रंग में रंग महाराज जी के साथ मेल खा जाओ।

सजनों ऐसा पराक्रम दिखाने से डरो मत अपितु इस शुभ परिणाम को प्राप्त करने के लिए अपने हृदय में भरपूर उमंग पैदा करो। इस प्रकार परमेश्वर के

वचन प्रवान कर अपने सच्चे शौह को पा लो और आकाशों-आकाश, पातालों पाताल देखने के योग्य बन महान आत्मा कहलाओ। अंत में सजनों परमेश्वर कहते हैं कि इस युक्ति को अपनाने के प्रति अपने अन्दर आत्मविश्वास पैदा करो और उन द्वारा बताई युक्ति को प्रवान कर, सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त करने में कामयाब हो जाओ।

सजनों आप सब इस सर्वोत्तम परिणाम को प्राप्त कर सको इसीलिए सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के द्वारे पर गृहस्थ आश्रम की (घरेलू बातों की) कचहरी बंद हो गई है। जानो अब घरेलू बातें नहीं सुनी जावेंगी। अब कचहरी लगेगी सम, संतोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म की। अतः सबके लिए बनता है कि वे सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में बताई युक्ति अनुसार सन्तोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म के चार सवाल धारण कर हल कर लें। यह है सब सजनों की पढ़ाई - जो कि माह चैत्र तक समाप्त करनी है और पास होना है। यह सवाल हल करने पर आप सम पर खड़े हो जावेंगे। फिर आप देखेंगे कि 'जेहड़ा मन मन्दिर प्रकाश ओही असलियत ब्रह्म स्वरूप है मेरा अपना आप'। इस एक शब्द पर फिर पांच साल गुढ़ना है। इस पर परिपक्क होने पर आप की दिव्य दृष्टि होगी और आप तीन कालों की पहचान कर सकोगे।

इसी परिप्रेक्ष्य में सजनों जानो कि भक्ति पहले बाल अवस्था में थी। जब से समभाव-समदृष्टि की पढ़ाई आई है भक्ति युवा अवस्था में आ गई है। इसलिए बैरूनी वृत्ति अब शोभा नहीं देती। वृत्ति मौन की होनी चाहिये। मौन का नतीजा है विश्राम। अतः खलबली को हटाते हुए सब सजन विश्राम को पावो और अपना जीवन सफल बनाओ।

विषय विकारों को त्याग कर यह कारज कैसे सिद्ध करना है इस विषय में सजनों आगामी कक्षा में बात करेंगे।

दिनाँक 24 नवम्बर 2019 का सबक़

बुधवार का दूसरा बोर्ड
(भाग-2)

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों गत सप्ताह हमने सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी के मुख की युवावस्था की युक्ति को प्रवान करने योग्य बनने हेतु जाना कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की मंत्रणा अनुसार जब कोई इंसान बैहरूनी वृत्ति को छोड़कर अन्दरूनी वृत्ति को धारण कर लेता है तो स्वतः ही उसके नयन महाराज जी के साथ जुड़ जाते हैं यानि ख़्याल ध्यान स्थिर हो जाता है। ऐसा अद्भुत होने पर उसके हृदय में कई सूरजों के सूरज के प्रकाश का उद्भव होता है जिसके सद्प्रभाव से वह इंसान नादानी छोड़, नौजवान युवावस्था को धारण कर लेता है और उसके लिए एकाग्रचित्तता से अपना ख़्याल, अलौकिक प्रकाश में स्थिर रखते हुए, आत्मिक ज्ञान प्राप्त करना, अति सरल व सहज हो जाता है। इस प्रकार वह सौभाग्यशाली इंसान सजनों आत्मिक ज्ञान प्राप्त कर आत्मतुष्ट हो जाता है, और परम आनन्द को प्राप्त कर विश्राम अवस्था को पा जाता है। सजनों हम सब भी सुनिश्चित रूप से इस आनन्दप्रदायक अवस्था को प्राप्त करने योग्य बनें इस हेतु सजन श्री शहनशाह महाबीर जी हमें आवाहन देते हुए

इस प्रकार निर्देश दे रहे हैं कि:-

हुन अन्दर जुड़ो जी, बैरूनी छडो वृत्ति।
बैरूनी वृत्ति विच लाभ न कोई।
अन्दरूनी वृत्ति विच प्रसन्नता होई।
हुन प्रसन्नता होई जी बैरूनी छडो वृत्ति।
हुन अन्दर जुड़ो जी बैरूनी छडो वृत्ति।

सजनों इस अमोलक बात को ध्यान से समझो और उनके वचनानुसार विधिवत् आत्मिक ज्ञान प्राप्त करो यानि आत्मा और परमात्मा के स्वरूप को जानने वाले बन, अपने वास्तविक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करो और इस जगत से आजाद हो जाओ। कहने का तात्पर्य यह है कि मलिन विकारयुक्त बैहरूनी वृत्ति छोड़ जितेन्द्रिय बन जाओ। सजनों यकीन मानो यह आत्मविजय प्राप्त करने जैसी मंगलकारी बात है। अतः हिम्मत दिखाओ, हिम्मत दिखाओ और हिम्मत दिखा कर अपनी वृत्ति, स्मृति, बुद्धि व स्वभावों का विकृत ताना-बाना निर्मल बना लो। इस प्रकार एकता, एक अवस्था में बने रह, इस जगत में सचेतनता से इंसानियत अनुरूप विचरते हुए, निष्कलंकता से जीवन जीने के योग्य बन मोक्ष प्राप्त करने के अधिकारी बन जाओ।

इस संदर्भ में सजनों जानो कि कृपानिधान सजन श्री शहनशाह महाबीर जी चाहते हैं कि चाहे इस सृष्टि में हमारा आगमन कलियुग में हुआ है, तो भी हम, उनकी चरण-शरण में समर्पित भाव से बने रह, उनके वचनों की दिल से पालना करें व ऋषि विश्वामित्र की तरह ब्रह्मपदवी को पा अपना जीवन सकार्थ करने में सुनिश्चित रूप से सफल हो जाएं।

ऐसा ही हो इस हेतु वह हमें धर्मग्रन्थों में विदित ब्रह्म ऋषि विश्वामित्र का उदाहरण देकर हर तरह से समझाते हैं कि 'ऋषि विश्वामित्र राज ऋषि, श्रेष्ठ ऋषि, उत्तम ऋषि और महाऋषि तो हो गए लेकिन काम पर फतह न पाने के कारण ब्रह्म ऋषि की पदवी पर न पहुँच सके'। इस तरह इस दृष्टांत द्वारा वह हमें इस बात से परिचित कराते हैं कि इस अवस्था को प्राप्त रह, वह चाहे

अपनी तरफ से ब्रह्म ऋषि की पदवी पाने का यत्न तो लड़ाते थे लेकिन फिर गिर जाते थे। आखिर में जब उन्होंने काम को जीता तो फिर उन्होंने सहज ही ब्रह्म ऋषि की पदवी प्राप्त कर ली।

अतः सजनों अगर आपके मन में भी ब्रह्म पदवी पाने की प्रबल इच्छा है तो इस अभिलाषा की सिद्धि हेतु सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के परामर्श अनुसार गृहस्थ आश्रम में रहते हुए आहिस्ता आहिस्ता अपनी इन्द्रियों पर कंट्रोल करके काम पर फतह पाने में अब किसी प्रकार से भी विलम्ब न करो और इस प्रकार अपने जीवन का यह महान कारज सिद्ध कर लो।

इस परिप्रेक्ष्य में सजन श्री शहनशाह हनुमान जी हमें स्पष्ट शब्दों में सावधान करते हुए कहते हैं कि अगर हकीकत में ब्रह्म पदवी को इसी जीवन में प्राप्त करने का प्रण ले लिया है तो आपको पुरुषार्थ दिखा सुनिश्चित रूप से भयंकर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार को जीतना ही होगा। हम मानते हैं कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के नाते व सीस ताज सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से प्राप्त होने वाले सद्-विचारों के सद्-प्रभाव से आप यह कारज सिद्ध करने हेतु यत्न तो लड़ाते होंगे लेकिन जब कोई कामना पूरी नहीं होती होगी तो ऋषि विश्वामित्र जी की तरह मन में क्रोध अवश्य उत्पन्न होता होगा। इन पाँचों विकारों पर फ़तह पा बैहरूनी वृत्ति छोड़ने के योग्य बनने हेतु, वह मेहरों के वाली महाबीर जी, इसके प्रति सावधान करते हुए, हम सांसारिक बैहरूनी वृत्ति में फँसे हुए व दोषयुक्त पापकर्म करने वाले इंसानों को समुचित ढंग से समझाते हुए कहते हैं कि जानो इन पाँच विकारों में से सबसे बड़ा है स्वार्थयुक्त काम। काम का परिवार है कामना। काम की दोस्ती है क्रोध से। लोभ का दोस्त है मोह। अगर कोई हमें लालच दिखाता है तो उसके साथ हमारा मोह पड़ जाता है। इस विषय में सब सजनों को मालूम ही है कि अहंकारता कुल नाशक है। अतः यह सब जानने के पश्चात् हमारे लिए भी इन सब हानिकारक विकारों को छोड़ना ही हितकर है। इसी तथ्य के दृष्टिगत सजनों वह दाता कहते हैं कि अगर यह सब सुनने-समझने के उपरांत भी आपके मन में ब्रह्म नाल ब्रह्म होने की चाहना है तो अविलम्ब युवावस्था की

युक्ति अपना सम, संतोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म की पढ़ाई समाप्त करने के बाद यानि स्वाभाविक रूप से ताकतवर हो काम पर फ़तह पा लो और अपने ब्रह्म स्वरूप को जान लो।

इस संदर्भ में सजनों अंत में हम भी यही कहेंगे कि यह सब सुनने के उपरान्त यदि ब्रह्म पदवी को इसी जीवन में प्राप्त करने के प्रति आपके मन में उमंग व समुचित उत्साह का वर्धन हुआ है तो अदम्य पुरुषार्थ दर्शाओ और यह मानते हुए कि सच्ची लगन और सतत उद्योग से सब कुछ संभव है, इस कार्य को सिद्ध कर दिखलाओ। क्या हम मानें कि आप ऐसा करने के लिए तत्पर हो?

हाँ जी।

सजनों अगर ऐसा ही है तो फिर बैहरूनी वृत्ति छोड़, अन्दरूनी वृत्ति धारण करने हेतु भरपूर लगन के साथ अपने मन को प्रभु में मग्न रखते हुए सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की आज्ञाओं का पालन करते हुए ब्रह्म पदवी को पा लो।

दिनाँक 1 दिसम्बर 2019 का सबक़

बुधवार का तीसरा बोर्ड, (भाग-1)
(श्री रामचन्द्र जी के मुख की भक्ति)

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजन दयालु श्री राम चन्द्र जी के मुख की भक्ति

सजनों जैसा कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अंतर्गत, सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी, आप अपने मुख से, समय रहते ही हम जीवों को भक्ति भाव यानि ईश्वर-दर्शन या मोक्ष प्राप्ति का वह साधना पथ जिसमें परमात्मा के प्रति श्रद्धापूर्वक आराधना की प्रधानता होती है, को अपनाने का आवाहन दे रहे हैं, अतः हमें आने वाले समय के प्रति उनके इस संकेत को समझते हुए, उस वास्तविक भक्ति भाव को यथा अपना कर, उस पर स्थिरता से बने रहने हेतु, इस सकारात्मक बात को भली-भांति समझ लेना चाहिए। इस संदर्भ में हमें सदा याद रखना चाहिए कि जो-जो भी कुदरती ग्रन्थ और पुस्तकें युग-युग में

आ रही हैं, उन ग्रन्थों में दो भक्तियाँ लिखी हुई हैं। जानो एक तो है बाल अवस्था की युक्ति और भक्ति और दूसरी है युवा-अवस्था की युक्ति भक्ति। इन दोनों भक्ति भावों के विषय में बताते हुए परमेश्वर हमें कहते हैं कि सजनों सुनो, इन दोनों भक्तियों की कोई विरला सजन पहचान कर सकता है।

इसके पश्चात् इन दोनों भक्ति भावों के अंतर का स्पष्टीकरण देते हुए वह हमें सचेत करते हुए कह रहे हैं कि हे कलुकालवासियो ! ध्यान से सुनो कि बाल अवस्था की भक्ति है नाम चलाना और ध्यान लगाना। यह बुद्धि थोड़ी अनजानपने के कारण नचनी टपनी होती है। इसके विपरीत युवा अवस्था के भक्ति भाव की महिमा का वर्णन करते हुए वह कहते हैं कि हे मेरे सजनों ! इसके प्रति एकाग्रचित्तता से सुनो कि युवा अवस्था की भक्ति है समभाव-समदृष्टि की युक्ति। इस में एक तो बल की प्राप्ति होती है और दूसरा शक्ति ताकतवर हो जाती है।

फिर वह हमें बताते हैं कि सजनों ध्यान दो कि युवावस्था की युक्ति को सम्पूर्णतया धारण कर अचेतन अवस्था को प्राप्त हुआ इंसान इस तरह चेतनायुक्त हो जाता है कि उस विवेकी के लिए दो साल में ही अपने कुसंगी संकल्प को संगी बना सद्गति को प्राप्त करना सहज व सरल हो जाता है। तभी तो सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हर सजन को कई तरीकों से बार-बार चेता रहा है कि समय की चाल को दृष्टिगत रखते हुए अविलम्ब अपने संकल्प कुसंगी को संगी बनाओ और ए विध् अपने मन से मैं-तूं का सवाल मिटा, संतोष, धैर्य और सच्चाई, धर्म के सवाल हल करके कलुकाल के स्वभावों पर फ़तह पा जाओ। इस प्रकार सतवस्तु के स्वभाव में ढल अपना हृदय सचखंड बना लो। ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा

है 'सचखंड वस्से निरंकार'। यह है सजनों अपने वास्तविक स्वरूप में आ जाना।

इसी संदर्भ में आगे परमेश्वर कहते हैं कि सजनों याद रखो ऐसा पराक्रम दिखाने पर सम का कोई सवाल नहीं रहेगा और नौजवान युवावस्था आ जाएगी। कहने का तात्पर्य यह है कि समभाव समदृष्टि का सबक़ सर्वरूपेण आपके हृदय में इस तरह घर कर जाएगा कि आपके लिए स्थिर बुद्धि द्वारा अपने मन को वश में रखते हुए, उसको परमेश्वर में लीन रखना सहज हो जाएगा। इस तरह इस अवस्था को प्राप्त होने पर आपके लिए आध्यात्मिक विद्या प्राप्त करने हेतु ज्ञान, कर्म आदि अन्य तत्त्वों की अपेक्षा भक्ति को प्रमुख मानने का सिद्धान्त अपनाकर न केवल अपने चित्त को हर अन्य विषय से हटा, अपने सच्चिदानंद स्वरूप में लगाना सरल हो जाएगा अपितु वहाँ से हट जाने पर आप उसे फिर से वहीं खींच कर लाने में भी समर्थ हो जाओगे। जानो यह सामर्थ्यता आपके उच्च बुद्धि, उच्च ख्याल, भक्ति प्रबल और शक्ति ताकतवर हो जाने की परिचायक होगी। इस प्रकार भक्ति की अखंड चित्त वृत्ति आपको भक्तिमान ऐसा वैष्णव जन बना देगी जो हर अवस्था में निष्ठापूर्वक सत्य पर धर्मसंगत खड़ा रह सकेगा। सजनों ऐसा मंगलकारी होने पर आप रोमांचित हो उठोगे और 'ईश्वर है अपना आप' के विचार पर खड़े हो, अमर नाम कहाओगे।

दिनाँक 08 दिसम्बर 2019 का सबक़

बुधवार का तीसरा बोर्ड, (भाग-2)
(बैहरूनी वृत्ति)

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों बुधवार के बोर्डों के क्रम अनुसार हमने अब तक जितना भी समझा है उस सबको दृष्टिगत रखते हुए अब अपने निर्धारित लक्ष्य की समयबद्ध प्राप्ति सुनिश्चित करने के लिए आगे बढ़ते हैं। यहाँ आगे बढ़ने से पहले हम सबको चेतावनी देना चाहते हैं कि जैसे-जैसे हम आगे बढ़ रहे हैं वैसे-वैसे समय अनुसार हर बताई जा रही क्रिया को उसी विध् सम्पन्न करने में कदापि कमजोर मत पड़ना वरना ऐसी महान मूर्खता करने पर जीवन हार बैठोगे। यहाँ हम पूछना चाहते हैं कि क्या यह हितकर बात सबको मंजूर है?

हाँ जी।

अगर हाँ, तो आओ अब दिलचस्पी में आ, और उमंग व उत्साह के साथ अपनी अलौकिक मंजिल की ओर स्थिरता से आगे कदम बढ़ाते हैं।

सजनों सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के कथनानुसार हम इस सत्य से भली-भांति परिचित हो चुके हैं कि जीवन बनाने हेतु हमें सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी द्वारा प्रदत्त युवावस्था की युक्ति अनुरूप बैहरूनी वृत्ति को छोड़ अन्दरूनी वृत्ति को धारण करना ही होगा ताकि हमारे नयन महाराज जी के साथ जुड़े रहें और ए विध् कोई सांसारिक फुरना हमारे मन में न ठहर सके यानि हमें न सताए। इस तरह हमारे लिए अपने मन को परमेश्वर के चरणों में लीन रखते हुए शीघ्रता-अति-शीघ्र संतोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म के सवाल हल करना सहज हो जाए।

सजनों हम ऐसे योग्य इंसान बन सकें, इस विषय में सजन श्री शहनशाह महाबीर जी हम कलुकालवासियों को संक्षिप्त रूप से वेद-शास्त्रों अनुसार सरल व सहज युक्ति बताते हुए, अपनी दोनों वृत्तियों को समरूपता से निर्मल रखने का आवाहन दे रहे हैं। इस संदर्भ में वह दीनों पर दया करने वाले शहनशाह हम सजनों पर कृपादृष्टि रखते हुए हमें स्पष्टतया निर्देश दे रहे हैं कि हे मेरे सजनों ! सबसे पहले अपने रिहायशी मकान को साफ़-सुथरा रखना सुनिश्चित करो। इसी के साथ ध्यान रखो कि हमारे घर में हर एक चीज़ तरीके से पड़ी हो और घर सदा चमकता हुआ नजर आए। इसके अतिरिक्त वह हमें अपने शरीर रूपी मकान को भी साफ़-सुथरा रखने का आदेश दे रहे हैं। यही नहीं वह कृपालु तो बैहरूनी वृत्ति में हमें स्वच्छता का प्रतीक बनाने हेतु, अपनी हैसियत अनुसार साफ़-सुथरे व उजले कपड़े पहनने के लिए भी कह रहे हैं। इसी के साथ हमारी सेहत ठीक रहे उसके लिए वह हमें हैसियत अनुसार सात्विक ख़ुराक खाने के प्रति भी जाग्रति में ला रहे हैं।

यहाँ सजनों क्या जानते हो कि वह मेहरों के वाली हमें ए विध् बैहरूनी वृत्ति में सदा निर्मल अवस्था में बने रहने के स्वभाव में ढलने के प्रति क्यों कर प्रेरित कर रहे हैं?

नहीं जी।

अगर नहीं, तो जानो कि जब तक हम शारीरिक रूप से स्वस्थ रहना सुनिश्चित नहीं करते यानि अपनी सेहत ठीक नहीं रखते तब तक हम उचित ढंग से भजन-बंदगी करने में भी समर्थ नहीं हो सकते। ऐसा इसलिए क्योंकि सेहत के बिना हमारी भजन-बंदगी हो ही नहीं सकती।

यह सब जानने व समझने के पश्चात् मानो कि आज जो हम सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के बावजूद विधिवत् भजन-बन्दगी कर पाने में खुद को असमर्थ पा रहे हैं उस कमजोरी के पीछे भी इन्हीं कारणों में से कोई कारण ही रहा होगा। अतः इन सब बातों के प्रति सत्यता से आत्मनिरीक्षण करो और अपने आचार-विहार-आहार-व्यवहार में उचित सुधार कर अपनी बैहरूनी वृत्ति को निर्मल बनाने में अब किंचित् मात्र भी और विलम्ब मत करो।

इसी संदर्भ में सजन श्री शहनशाह हनुमान जी हम सब पर अपार मेहर करते हुए बताते हैं कि हे मेरे सजनों ! जिस किसी भी लापरवाही के कारण आपके साथ जीवन में बुरा हो चुका है, वैसा बुरा अब आपके बच्चों के साथ न हो, उसके लिए एक तो उन्हें हर प्रकार से साफ़-सुथरा रखना सुनिश्चित करो, दूसरा परस्पर वर्त-वर्ताव के दौरान, जी-जी करके बुलाने के स्वभाव को उनकी प्रकृति के अतंर्गत करो। इसके लिए पहले आप बड़े परस्पर आओ जी, बैठो जी ऐसे बोलकर उनके सामने बैहरूनी वृत्ति में उचित रैहणी-बैहणी का आदर्श स्थापित करो, ताकि उनके संस्कार अच्छे हो जाएं और वे भी इसी तरह से बोलें। इसी के साथ अपने बच्चों के प्रति सजनता का भाव रखते हुए उनके अन्दर यह बात बिठाओ कि हमारा रास्ता सच्चाई-धर्म का है और वे भी इसी रास्ते पर चलें। इस परिप्रेक्ष्य में सजनों आप सब स्वीकारोगे कि वर्तमान कलियुग के अंतिम समय में बच्चों को इस सत्य-धर्म के रास्ते पर प्रशस्त करना जितना आवश्यक है उतना कठिन भी क्योंकि इसके लिए उन पर कड़ी नजर रखने की आवश्यकता है। अतः सजनों अगर अपनी व अपने बच्चों की भलाई चाहते हो यानि उनके जीवन की राह निष्कंटक बनाना चाहते हो तो उनको

सदाचारी बनाने के प्रति अपने जीवन के इस महान कर्त्तव्य का उचित ढंग से निर्वाह करना मत भूलना और न ही किसी विध् भी संसारी बन्धनों में गलतान होकर, इसके प्रति किसी तरह की लापरवाही कर उनके जीवन पर घात लगाने का पाप कमाना।

जानो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति अनुसार ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर आपके बच्चे स्वतः ही सीधे रास्ते पर चलने लगेंगे और कुरस्ते पर चढ़ कुकर्म-अधर्म करने से बच जाएंगे यानि ताप-संताप के रूप में जन्म-जन्मांतरों की त्रास भुगतने से बच जाएंगे व सत्य परायण व धर्मनिष्ठ बन, अपना जीवन सफल बनाने के प्रति प्रयत्नशील हो जाएंगे।

इस महत्त्वपूर्ण तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए सजनों हमारे लिए आवश्यक है कि हम अभी से ही अपने बच्चों को शास्त्रविहित् विचारों को धारण करने के प्रति प्रेरित तो करें ही, साथ ही वे यथार्थ में उन विचारों को आत्मसात कर कितना अपने व्यवहार में ला पा रहे हैं, इस पर अपनी कड़ी निगाह रखें। जानो ऐसा करना अति आवश्यक है। ऐसा करने से सजनों सतवस्तु के कुदरती शास्त्र में विदित परमार्थ के सुगम रास्ते पर निष्कामता से खुद बने रह, अपने बच्चों को भी उस विचार युक्त रास्ते पर चलाने में सक्षम हो जाओगे और आनन्द से जीवन बिताओगे। इस संदर्भ में सजनों मानो कि यह अपने आप में घर-परिवार में चिरस्थाई शांति स्थापित कर एकता व एक अवस्था में मजबूती से बने रह उन्नति पथ पर प्रशस्त होने की बात है। इस विषय में सजनों आज की सामाजिक भयावह परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए, इस कठिन पर आवश्यक कार्य को सिद्ध करने के प्रति बच्चों को प्यार से समझौता दें, मारें नहीं, बल्कि कड़ी निगाह से समझाएं। अगर वह फिर भी न समझें तो छठी बार मार सकते हैं। याद रखें जितना बच्चे का कसूर हो उतनी ही सज़ा दें यानि यह नहीं कि क्रोधावेश में आकर उनको अनुचित रूप से पीड़ित करें।

इस शुभ कारज में हम अवश्यमेव सफल हों उसके लिए आगे शहनशाह महाबीर जी हमें उत्साहित करते हुए कह रहे हैं कि सजनों अगर हम सजनों

की दृष्टि ठीक हो गई तो हमारे बच्चे अपने आप ठीक हो जाएंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि जब तक हम बताई युक्ति अनुसार बाहर की सफ़ाई नहीं रख सकेंगे तो अन्दर की सफ़ाई सजनों किस तरह कर सकेंगे? अंत में जानो कि हम बैहरूनी वृत्ति को इस प्रकार धारण करते हुए और अपने गृहस्थाश्रम को ठीक चलाते हुए ही अन्दरूनी वृत्ति को पकड़ सकते हैं।

आप सबकी जानकारी हेतु हमने शारीरिक स्वभावों की सफाई किस प्रकार करनी है और 'जो प्रकाश है मन मन्दिर, वही प्रकाश है जग अन्दर' देखते हुए अन्दरूनी वृत्ति को समरस निर्मल रखने की युक्ति को कैसे पकड़ना है, इसके बारे में आगामी कक्षा में बात करेंगे।

दिनाँक 15 दिसम्बर 2019 का सबक़

बुधवार का तीसरा बोर्ड, (भाग-3)
(अन्दरूनी वृत्ति)

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों गत सप्ताह हमने जाना कि बैहरूनी वृत्ति को धारण करते हुए और अपने गृहस्थ आश्रम को ठीक चलाते हुए हमने अन्दरूनी वृत्ति को पकड़ना है और फिर शारीरिक स्वभावों की सफाई करनी है। अन्य शब्दों में अन्दरूनी वृत्ति को पकड़, शारीरिक स्वभावों की सफ़ाई करने हेतु हमें अपना गहनता से आत्मनिरीक्षण करना है। इस क्रिया को ठीक ढंग से सम्पन्न करने के पश्चात् शारीरिक स्वभावों में वास्तविक रूप से पाई गई हर सूक्ष्म से सूक्ष्म कमी को ढूँढ निकालना है। ए विध् निरर्थक और अनुचित असभ्यतापूर्ण स्वभावों का सहर्ष त्याग करने के लिए तत्पर हो जाना है यानि बाह्य आडम्बरयुक्त दुराचारिता से परिपूर्ण विनाशकारी आचार-व्यवहार छोड़ महाबीर जी द्वारा बताई युक्ति अनुसार अपने शारीरिक स्वभावों के ताने-बाने की सफ़ाई कर अपनी अन्दरूनी बैहरूनी वृत्ति को निर्मल बनाना सुनिश्चित करना है ताकि हमारी सोच सकारात्मक, निर्मल व स्पष्ट हो।

इस संदर्भ में सजनों जिह्वा स्वतन्त्र कैसे करनी है, उसकी विधिवत् युक्ति पहले से ही बुधवार के प्रथम बोर्ड के अंतर्गत आपको बताई जा चुकी है। सजनों आप में से जिन विरले हिम्मतवान समझदार इंसानों ने उस युक्ति का यथोचित वर्त-वर्ताव करते हुए व अपने गृहस्थ धर्म को ठीक निभाते हुए अपनी जिह्वा स्वतन्त्र कर ली है उन सब पुरुषार्थी इंसानों को अब सजन श्री शहनशाह महाबीर जी अविलम्ब संकल्प को स्वच्छ रखने का आवाहन दे रहे हैं। इस कार्य की सुनिश्चित सिद्धि की युक्ति बताते हुए सजनों सजन श्री शहनशाह हनुमान जी कहते हैं कि अपनी आत्मिक शक्ति से संकल्प पर पकड़ रखते हुए उसको सजन और संगी बनाने का दृढ़ता से प्रयास करो।

अन्य शब्दों में कथित युक्ति के वर्त वर्ताव द्वारा बैहरूनी वृत्ति में यदि आप सजनों की जिह्वा यानि रसनेन्द्रिय व वाकेन्द्रिय, राजसिक-तामसिक आहार के सेवन व असत्य भाषण/झूठ, कटु शब्दों तथा अपशब्दों जैसे गाली-गलौच, निंदा-चुगली आदि के उच्चारण से स्वतन्त्र हो, सात्विक आहारी तथा विचारसंगत जी-जी व सजनता सूचक हितकारी सकारात्मक व मीठे शब्दों का स्पष्टतः उच्चारण कर, सत्यवादी हो गई है तो अब अन्दरूनी वृत्ति में अपने संकल्प यानि इच्छा, विचार, इरादे या निश्चय को काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के कुसंग से बचाए रख, उसे स्वच्छ यानि निर्मल व निष्कपट रखने की कला सीखो। इस तरह आत्मनिरीक्षण द्वारा क्षण-प्रतिक्षण अपने अन्दर उठने वाले संकल्पों यानि इच्छाओं, कामनाओं के औचित्य यानि उपयुक्तता व सत्यता की विचारसंगत जाँचना-तुलना कर, उस विचार में तुल खड़ोवो और जो हितकारी हो, उसी को महत्त्व दे दृढ़-निश्चयी हो जाओ। मात्र ऐसा करने से संकल्प पकड़ में आना आरम्भ हो जाएगा। यहाँ जानो जप-तप-संयम सब संकल्प को पकड़ कर उसे स्वच्छ बनाए रखने के ही साधन हैं। इसीलिए मूलमंत्र आद् अक्षर का अजपा जाप व युवावस्था का भक्ति-भाव अर्थात् समभाव-समदृष्टि की युक्ति पर अडिग बने रहने का महातप करने का विधान है। अतः हिम्मत दिखाओ और इस महातप द्वारा अपने संकल्प को सजन और संगी बनाओ व समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुरूप व्यवहार दर्शाओ।

इसी संदर्भ में आगे सजन श्री शहनशाह महाबीर जी संकल्प को सजन और संगी बनाने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहते हैं कि दिल से मानो कि हमारा और कोई भी कुसंगी नहीं है। संकल्प ही हमारा कुसंग है। इस बात को खोल कर बताते हुए वह कहते हैं कि संकल्प के रूप में मन में उठने वाली बुरी इच्छाएँ व कलुषित नकारात्मक विचार ही कुसंग के द्योतक हैं। अतः हमारे लिए बनता है कि हम शास्त्रविहित् सकारात्मक सार्थक कुदरती विचार धारण कर अपने संकल्प को पूर्ण रूप से सजन बना लें।

तत्पश्चात् वह परोपकारी कहते हैं कि यकीन मानो ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर जब वैर-विरोध की जड़ हमारा संकल्प पूर्ण रूप से सजन हो जाएगा तो फिर घर भी सजन, परिवार भी सजन और कुल संसार भी सजन हो जाएगा। यही नहीं इस सुखदाई अवस्था को प्राप्त होने पर हमारे मन में जिस आनन्द का अनुभव होगा उसके सद्भाव से हमारा झुखना भी बंद हो जाएगा और चित्त स्वतः ही प्रसन्न हो उठेगा। याद रखो यहाँ झुखने से तात्पर्य संकल्प के झुरने से है यानि बहुत अधिक दुःखी या शोक ग्रस्त होकर, नकारात्मक बातें सोचने, बोलने व करने से है। सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार झुखना ही हमारा रोना है अर्थात् इसी के कारण हम किसी वस्तु या काम के प्रति निराश होकर या तो अंतर्मन में या फिर परस्पर वार्तालाप के दौरान अपने दुःख का वर्णन करना अपने स्वभाव के अंतर्गत कर लेते हैं। जानो बुरा मानना, चिढ़ना, विलाप करना, कल्पना करना, हताश होना सब झुखने का ही प्रतीक है। इस बात को समझते हुए सजनों हमारे लिए बनता है कि हम आत्मनियन्त्रण द्वारा अपने संकल्प को स्वच्छ रखते हुए, झुखने-रोने के स्वभाव से निज़ात पा जाएं।

सजनों हम सब भी इस अवस्था को प्राप्त होने में समर्थ हो सकें यानि झुखने व रोने के स्वभाव से मुक्त हों, इस यथार्थ से परिचित कराने के साथ-साथ सजनों वह परमपिता हमें यह भी समझाते हैं कि सजन क्या है, सजनों सुनों 'जो मन मन्दिर सो ही महाराज का रूप सारे जग अन्दर, जनचर, बनचर, जड़ चेतन एक ही रूप'। इस तरह संकल्प स्वच्छ हो जाने से दृष्टि अपने आप ठीक हो

जाएगी यानि सजन भाव मन में स्थित होने पर स्वतः ही समभाव हमारी नजरों में हो जाएगा और सजन वृत्ति पर हमारी पकड़ बन जाएगी। परिणामतः हमारी दोनों वृत्तियाँ समरस निर्मल अवस्था को प्राप्त हो जाएंगी और आत्मिक-ज्ञान प्राप्त करना सहज हो जायेगा । इस तरह हमारा संतोष का सवाल हल हो जाएगा। अंत में इस शुभ परिणाम को दृष्टिगत रखते हुए सजन श्री शहनशाह महाबीर जी कहते हैं कि संकल्प को सजन बनाओ और संतोष पर फतह पाओ।

इसी संदर्भ में सजनों इस मंगलकारी कार्य (जिसकी सिद्धि करने में हम अभी तक असमर्थ रहे हैं) की समयबद्ध सिद्धि हेतु आपको पैंतालीस दिन का समय दे रहे हैं ताकि आप एक सुपात्र की तरह सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के वचनों का आदर सहित पालन करते हुए इस अवधि में अपने संकल्प पर मजबूत पकड़ बना लो। यकीन मानो कि अगर जीवन विजयी होने के इच्छुक आप सजनों ने इस अवधि के दौरान अपने संकल्प कुसंगी को संगी बनाने का यह महान कमाल कर दिखलाया तो संकल्प पर पकड़ रखते हुए, अपनी सुरत को कैसे देखना है, उसकी युक्ति से आपको पूरी तरह आगामी कक्षा में परिचित करा देंगे।

आप सब यह हितकर पुरुषार्थ दिखाने में किसी विध् भी कमजोर न पड़ो उसके लिए सजनों आप सबकी सहायतार्थ सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अंतर्गत प्रथम सोपान में विदित भजनावली को अर्थ सहित पुस्तक के रूप में संकलित करके दिया जा रहा है। इस पुस्तक को प्राप्त करने के पश्चात्, सजनों यह अब खुद आप पर निर्भर करता है कि आप इसमें वर्णित सत्य-धर्म के भक्ति भाव पर, निष्कामता व स्थिरता से अग्रसर रहते हुए, अपने कुसंगी संकल्प को संगी बना अपनी सुरत कंचन करने में कितने समर्थ हो पाते हो। इस विषय में सजनों अंत में हम तो यही कहेंगे :-

जन्म दी बाजी जित चाहे हार, जीत हार है तेरे हाथ
अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात

आप सबकी जानकारी हेतु इस अन्तराल में आपको शारीरिक स्वभावों की सफाई सुनिश्चित रूप से कर पाने के योग्य बनाने के लिए हर सप्ताह आवश्यक अपनाने योग्य आत्मिक स्वभावों से भी परिचित कराया जाएगा ताकि आपके लिए संकल्प को संगी बना अन्दरूनी वृत्ति पर स्थिरता से खड़े होना सहज हो जाए। अतः सजनों इस मानव चोले की अनमोलता को स्वीकारते हुए हिम्मत दिखाना, हिम्मत दिखाना और हिम्मत दिखा इसी जीवन में जन्म की बाजी जीत जाना। आप सब ऐसा करने में कामयाब हों इन्ही शुभकामनाओं के साथ।

दिनाँक 22 दिसम्बर 2019 का सबक़

सत्य धारणा का महत्त्व

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा हैः-

सत-सत बोलना सीखो सजनों सत-सत करो प्रवान
सत है गुरु, सत नाम सत ध्यान लाणां सीखो सजनों
सत-सत है बड़ा महान, सत-सत वर्त्त वर्त्ताव करना सीखो
सजनों सत-सत करो प्रवान
सत-सत बोलना सीखो सजनों, सत आप पढ़ो ते सजनां नूं पढ़ाओ
इसे शब्द नाल हिवे विश्राम

आओ सजनों आज हम भी इस सर्वमहान सत्य को समझ कर विश्राम पाने हेतु मानव के जीवन में सत्य धारणा का महत्त्व समझते हैं। इस संदर्भ में सजनों यह बात तो सर्वविदित है कि विश्व-रचयिता परमतत्त्व परमात्मा सत्यपुरुष के नाम से जाना जाता है। उसे पुरुष कहो या ब्रह्म, वही अपने आप में पारमार्थिक सत्ता समेटे हुए, आत्मतत्त्व के रुप में, शरीरधारी जीवों में समरस विद्यमान रहता है। तभी तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया हैः-

आत्मा विच परमात्मा तो ओही है, सचखण्ड वस्से निरंकार

इस सत्य के दृष्टिगत ही तो सजनों सभी वेद शास्त्र कहते हैं कि जो भी शरीरधारी जीव समर्पित भाव से पुरुषार्थ दिखा, आत्मिक ज्ञान प्राप्ति द्वारा, अपनी इस वास्तविक प्रकृति में ढल, उस सत्य को अपने मन-वचन-कर्म द्वारा प्रमाणित कर देता है केवल उसी सत्-वादी के हृदय में परमात्म स्वरूप, शंख-चक्र-गदा-पद्मधारी, श्री विष्णु भगवान प्रगटते हैं और उस सच्चे इंसान का ख़्याल सतवस्तु में प्रवेश कर जाता है। ऐसा होने पर सहसा प्रभु कह उठते हैंः-

उस प्यारे दे मैं संग राहवां सतवस्तु दा साज पावे ओ जेहड़ा।
सतवस्तु दे सतवादी होवन कैसा राज है मेरा।।
सतवादी सचखण्ड ब्रह्माण्ड हर अन्दर स्थान है जेहड़ा।
हां मैं सर्वव्यापी युग युग रोशन नाम है मेरा।।

जानो जो इस उत्तम अवस्था को प्राप्त कर लेता है उस पराक्रमी पुरुष की सुरत को इस कारण जगत की माया किसी विध् भी अपने वश में नहीं कर सकती। इसलिए तो ऐसा सत्य से पवित्र किया हुआ आत्मनिग्रही इंसान, इस जगत में विशेषतया विचरते हुए भी, सहजता व सरलता से परमात्मा की साधना में लीन रहता है। इस विषय में भक्त शिरोमणि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का उदाहरण हमारे समक्ष ही है जिनके विषय में सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया हैः-

महाबीर जी पाया ए हार, ओ सचयाई वाला
मिल गया यारां दा यार, ओ सचयाई वाला

जानो इस प्रकार परमतत्त्व की सतत् साधना द्वारा जब कोई अपने आत्मस्वरूप में ध्यान स्थिर हो, आत्म साक्षात्कार करने में सफलता प्राप्त कर लेता है तो इस यथार्थ तथ्य को जान जाता है कि परमात्मा अर्थात् सत्य हर मानव के हृदय में समरस व्याप्त है व ब्रह्म-जीव में कोई अंतर नहीं। अन्य शब्दों में हम कह सकते हैं कि उस अंतर्ध्यानी को इस सच्चाई का बोध हो जाता है कि सत्य सार्वकालिक है व सबका है। ऐसा होने पर वह सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार कह उठता हैः-

सच जगत रचैय्या, सच सर्व वसैय्या, सच नीतियां दा वर्ताओ करैय्या, सच दी है सारी साम्रगी, सच होवे स्वभाव, रस्ता पकड़ो निष्काम सर्वव्यापी ओन्हां दा नाम।।

इस सत्य का बोध होने पर वह पूरी तरह आत्मतुष्ट हो जाता है और उसकी सब कामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं। यह होती है सत्य धारणा की सर्वोत्तम उपलब्धि।

इस महान उपलब्धि के दृष्टिगत सजनों हमें मानना होगा कि सत्य अपने आप में सर्व उपयोगी तत्त्व है, इसलिए हर मानव के लिए बनता है कि वह हृदय व्याप्त सत्य को भक्ति भाव से उजागर करे, निष्काम भाव से सत्य पथ पर धर्मसंगत प्रशस्त रहना सुनिश्चित करे और सार्वभौतिक हित को दृष्टिगत रखते हुए संकल्प पर फतह पा मृतलोक पर विजय प्राप्त कर ले और ए विध् अपना जीवन सर्व उद्धार के निमित्त पूर्णतया समर्पित कर दे। ऐसा करना इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा हैः-

वेला छुटकिया हथ नहीं आवना।
कूड छड के ते सच नू कमावना।।
पल्ले बन, लै सच्चाई वाला दाम जी।

सजनों मानव को ऐसा सर्वहितकारी इंसान बनाने हेतु ही तो समस्त वेद-शास्त्र कुल मानव जाति को, अपनी वाणी द्वारा समरूपता से, सत्य का प्रेमी बन, ब्रह्म को जानने वाला बनने का आवाहन दे रहे हैं ताकि वह ब्रह्मविद् बन, सत्यता के भाव से अपने जीवन में सत्यकृत्य करने के योग्य बन जाए। इस संदर्भ में सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ भी कह रहा हैः-

जेहड़ा सजन विचार पकड़े एक, उस सजन दी बुद्धि हो गई विवेक
सत् हो गया बोलचाल, उच्च बुद्धि उच्च ख्याल ओ सूरज चढ़ पिया जे

स्पष्ट है सजनों कि जो भी मानव सत्य का अनुयायी बन इस प्रकार सत्य का धनी बन जाता है उस सत्यदर्शी के मन में सत्य और असत्य का विवेक जाग्रत

हो जाता है और वह अपने इस शाश्वत तत्त्व पर आजीवन स्थिर बने रह, अंत सत्य में प्रतिष्ठित हो जाता है। तभी तो कहा गया है:-

सत्-असत् दा विचार जेहड़ा करदा, सत्-सत् बात इन्सान ओ फड़दा
सच्चाई-धर्म दे विच ओ विचरदा, श्री राम जी दे दर्शन ओ करदा

साथ ही यह भी कहा गया है:-
सच नू धारण करके, जेहड़ा सच कमावे, बेखौफा, बेखतरा, बेडर ओ हो जावे।

आगे जानो कि परमात्म-भक्ति पर खरा उतरने के लिए, किसी भी मानव के लिए सद्-वृत्ति में ढल सत्-वादी होना आवश्यक होता है क्योंकि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है:-

अनुरागी ते सत्-वादी दी बन्दगी है ओथे मन्जूर

ऐसा इसलिए क्योंकि कोई भी मानव सद्-वृत्ति में ढलने के उपरान्त ही, ईमानदारी से सत्य का आचरण और व्यवहार करने में सक्षम बन सकता है व सत्-पुरुष कहला सकता है। इस तरह सत्य पर सदा स्थित रहने वाला वह मानव सदा सत्य संकल्पी बना रहता है। यही नहीं वह सत्यवान तो सत्य की रक्षा और पालन का आग्रह करने के लिए अत्याचार सहने से भी नहीं सकुचाता। इस विषय में युग पुरुषों का जीवन प्रमाण रूप में हमारे समक्ष ही है।

सत्य धारणा की इस महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए सजनों अगर आपके मन में भी सत्यपुरुष यानि सजन बनने की उत्कंठा पैदा हुई है तो सत्य धारणा हेतु, अविलम्ब ईमानदारी व निःस्वार्थ भाव से प्रयत्न करना आरम्भ कर दो और सत्त्वगुण से युक्त होकर सदाचारी व धर्मात्मा इंसान बन जाओ क्योंकि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है:-

सतवस्तु जिन्हां ने पहचान लई, सत करे वर्ताओ
सत है ओन्हा दे घर दी रसम, सत है रसम रिवाज़
सतवस्तु दी रमज़ जैं समझ लई, सत चीज़ जिन्होंने पछान लई आ आ आ

ओ खावे खुराक निराली है, अक्ख होवे परखन वाली है।

अर्थात्

सतवस्तु सच बोलचाल है, सच ओ कमावे।
सच दी ओ खुराक खाकर दिव्य दृष्टि ओ पावे।।

इन पंक्तियों से सजनों स्पष्ट होता है कि सात्विक भाव में स्थित रह नियमित ढंग से ऐसा अदम्य पुरुषार्थ दिखाने पर ही आपका मन ज्ञान, प्रकाश, शांति आदि से सराबोर हो श्रेष्ठ कर्मों की ओर प्रवृत्त हो सकता है। परिणामतः आपके स्वभाव स्वतः ही विशुद्ध हो जाएंगे और आप अपनी प्रकृति में स्थित हो संतोषी व धैर्यवान इंसान बन जाओगे। जानो ऐसा शक्तिशाली इंसान बनने पर आपके लिए शास्त्र द्वारा बताया गए धर्म मार्ग पर स्थिरता से बने रह श्रेष्ठ मानव बनना सहज हो जाएगा। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा हैः-

सत्य शास्त्र दा तू विचार करीं, बली नाम दी ध्वनि लगा सुरति।

सजनों यह अपने आप में 'ईश्वर है अपना आप' के विचार पर स्थिर बने रह जीवन के निष्कंटक विचारयुक्त सवलड़े रास्ते पर समरस बने रहने की शुभ बात है। इस मंगलकारी तथ्य के दृष्टिगत ही तो सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हर मानव को सत्य आचरण के विपरीत झूठ का अधर्मयुक्त रास्ता न अपनाने का निर्देश दे रहा है और कह रहा हैः-

नाम दा संदूकचा ते दाज संवार, सच्चाई दा बना लै हार।

साथ ही यह ग्रन्थ यह भी समझा रहा है कि इस अंधकारमय रास्ते पर चलने वाला इंसान बेईमानी का चाल-चलन अपनाकर, अपना जीवन ही बिगाड़ बैठता है यानि उसका जीवन नष्ट व भ्रष्ट हो जाता है। जैसा कि कहा भी गया हैः-

इन्सान वनजणे आया था धर्म सचयाई खरीद लियो ने झगड़ा
झूठ चतुराईयाँ, चोरियाँ कर कर पा लियो ने रगड़ा।।

निश्चित ही सजनों यह कुछ और नहीं अपितु अविचारयुक्त अवलड़े रास्ते पर चलते हुए अपना सर्वनाश करने की बात है जिसके विषय में सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया है:-

सच्चा व्यापारी ओ तर गया, झूठ डुब्बे विच मंझधार।
सच किनारे ओ जा लगा, झूठ डुबिया अधविचकार।।

सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के पास होते हुए भी हम दुर्मति बन इस दुर्गति को प्राप्त न हों, इस हेतु शास्त्र कह रहा है:-

असत्य नू भैणां छोड़ के, सत्य नू लवो धार।
महाबीर जी दी शरणी आवो, बेड़ा कर देसन पार।।

इस संदर्भ में सजनों सत्य धारणा के संदर्भ में अपनी जाँचना-तुलना करनी आवश्यक है ताकि हम समय रहते ही सम्भल जाएं और जीवन के विजय पथ पर आगे बढ़ते हुए परमार्थ बन जाएं। अंत में सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार हम तो यही कहेंगे:-

सजनों जे सचखण्ड विच सैर करनी जे, सच्चाई दा शब्द तुसां पकड़ लवो
सचखण्ड विच जोत निरंकार दी, उसे जोत नाल सजनों तुसां जुड़ो

आप सबकी जानकारी हेतु आगामी कक्षा में सजनों हम संतोष धारणा का महत्त्व समझेंगे।

दिनाँक 29 दिसम्बर 2019 का सबक़

संतोष धारणा का महत्त्व

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों सत्य को धारण कर जब इंसान आत्मज्ञान प्राप्त कर लेता है तो उसका मन आत्मतुष्ट हो जाता है यानि उसके मन को संतोष धन प्राप्त हो जाता है और वह सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार सहसा ही कह उठता हैः-

शास्त्र नूं विचार के सम संतोष नूं धार के मिल गए परमानन्द
दासियां रल चलिए

इस प्रकार इस संतोष रूपी अमोलक धन को प्राप्त करने पर इंसान मिथ्या धन को धूरि समान समझने लगता है इसलिए वह अपने ख़्याल को माया के स्थान पर मायापति के साथ जोड़ना उत्तम समझता है। तभी तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार वह कहता हैः-

ब्रह्म है सम, संतोष, धैर्य दा सिंगार
ब्रह्म है ओ शब्द विचार

इस उत्तम पुरूषार्थ द्वारा उस संतोषशील के मन में इस जगत से कुछ भी प्राप्त करने की इच्छा नहीं पनपती और वह सहज ही प्रसन्नता व आनन्द का अनुभव करते हुए सदा अपनी वर्तमान दशा में पूर्ण सुख का अनुभव करते हुए अपना जीवन प्रयोजन सिद्ध करने में निरंतर रत रहता है। इसलिए ऐसे इंसान के विषय

में सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में भी कहा हैः-

सम संतोष है धैर्य, सत्-शास्त्र दा विचार
मनुराज नूं छोड़ के, पावे असली सिंगार

यहाँ हम यह भी बताना उचित समझते हैं कि जब इंसान इस कारण जगत में विचरते समय, किसी विध् भी माया के साथ जुड़ने जैसी भूल नहीं करता तो उसके मन में कभी भी इन्द्रिय-विषयों के प्रति रुचि नहीं पनपती यानि वह जगतीय आकर्षणों को देख उनको प्राप्त करने के प्रति कभी भी लालायित नहीं होता। इस तरह उस कामना रहित इंसान के अन्दर 'मेरे पास सब कुछ है' होने का भाव सदा विद्यमान रहता है और उसके अन्दर पंच विकार घर नहीं कर पाते।

यही कारण है कि विषय-विकारों से मुक्त वह निर्मल वृत्ति इंसान सांसारिक चिंता या परेशानी से आजाद रहता है और उसका मानसिक संतुलन जीवन में आने वाली अच्छी-बुरी परिस्थितियों में बिगड़ता नहीं। इस तरह इस संतुलित अवस्था को प्राप्त इंसान के मन में कदापि अपनी वास्तविक वृत्ति से हट कर आचार-व्यवहार करने की प्रवृत्ति नही पनपती और वह निर्विकारी इस जगत में अविचलित निष्पक्षता से विचरते हुए सदा एकरस साम्य अवस्था को प्राप्त रहता है।

सजनों कहने का तात्पर्य यह है कि परमात्मा की रजा में सदा संतुष्ट रहने वाला वह इंसान, ब्रह्म सत्ता से युक्त हो सर्वांगीण रूप से सदा स्वस्थ रहता है और उस ओजस्वी व तेजस्वी के लिए सुकर्म करते हुए, अन्य असंतोषी व अप्रसन्नता को प्राप्त अधीर इंसानों को भी, पुनः शांतिप्रिय बनाना, हर तरह से संभव हो पाता है।

सजनों संतोष की इस महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए इन्द्रिय निग्रही बन संतोष युक्त हो जाओ और धीरता से जीवन के सत्य पथ पर आगे बढ़ते हुए अपने जीवन की बाजी जीत, अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम को पाओ क्योंकि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा हैः-

सम, संतोष और धैर्य धर्म, सच्चाई दा जिस पा लिया पहरेवा
फिर बने जीवन अपना, कर लै निबेड़ा

याद रखो यदि समय रहते ऐसा न किया तो मन में संतोष का अभाव हो जाएगा और संकल्प कुसंगी हो जाएगा। परिणामतः पाँच विकार मन में स्थाई रूप से अपना घर बना लेंगे और अपने दुष्प्रभाव से आपकी वृत्ति-स्मृति व बुद्धि को हर, इस तरह पतित कर देंगे कि फिर हम विवेकहीन किसी विध् भी सांसारिक रस से छुटकारा पा सदाचार का रास्ता नहीं अपना पाएंगे।

सजनों यदि हकीकत में इस सर्वनाश से बचना चाहते हो तो होश में आओ और सत्यता से आत्मनिरीक्षण कर खुद पर आत्मनियन्त्रण रखते हुए संभल जाओ। कहने का आशय यह है कि संकल्प कुसंगी को सजन और संगी बनाओ और संतोष पर फ़तह पाओ। इस संदर्भ में सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ भी कह रहा हैः-

सजनों संकल्प नूं संगी बनाओ संकल्प दा झुरना हटाओ
फिर सजनों संतोष वल्लो जित पाओ।।

इस तरह सजनों धीरता से इस जगत में धर्मसंगत निषंग विचरते हुए अपना जीवन सफल बनाओ। अंत में सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार हम तो यही कहेंगेः-

सम ते संतोष बक्षना, धैर्य दी हस्ती, धैर्य दी हस्ती।
धन धन पूर्ण महाबीर प्यारे, हर जगह अंग संग राहवना।।

प्रेम ते वैराग बक्षना, सांवले चरणां विच मस्ती चरणां विच मस्ती।
धन धन पूर्ण महाबीर प्यारे, हर जगह इलाही रंग चढ़ावना।।

आप सबकी जानकारी हेतु सजनों आगामी सप्ताह हम धैर्य धारणा का महत्त्व जानेंगे।

दिनाँक 5 जनवरी 2020 का सबक़

धैर्य धारणा का महत्त्व

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों जब विधिवत् पुरुषार्थ द्वारा किसी मानव के हृदय में सत्य स्थित हो जाता है और मन को संतोष प्राप्त हो जाता है तो मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार सहित उसका समुच्चय अंतःकरण निर्मल हो जाता है। इस उत्तम अवस्था में सजनों मन दृढ़ व चित्त स्थिर हो जाता है और इंसान के अन्दर धीर होने का भाव जाग्रत होता है। ऐसा होने पर इंसान सहज ही कह उठता हैः-

जदों दी ओन्हां दी कृपा आई, तदों दी ओन्हां ने धैर्य बंधाई
सदैव जपो सजनों ओन्हां दा नाम जी, होय मेहरबान दयालु होय मेहरबान जी।

इस धीरता के भाव से युक्त हो इंसान सहज ही चंचलता से हीन और अहंकार शून्य स्थिति को प्राप्त हो इतना गंभीर हो जाता है कि उसका चित्त विपरीत परिस्थितियों में भी कदाचित् विचलित नहीं होता। तभी तो ऐसे धैर्यवान के विषय में कहा जाता है कि 'जीवन में सुख-दुःख निरन्तर आते-जाते हैं, सुख तो सभी भोग लेते हैं पर दुःख धीर ही सहन कर पाता है'।

स्पष्ट है सजनों धैर्यवान इतना सहनशील होता है कि उसका मन क्षुब्ध यानि उत्तेजित नहीं होता। अन्य शब्दों में कहें तो धैर्यवान में हड़बड़ाहट, व्याकुलता,

बेचैनी, क्रोध, ईर्ष्या आदि दुर्गुणों का अभाव होता है। यही नहीं उस शांत चित्त, विवेकशील, शक्तिशाली व साहसी इंसान की बुद्धि भी निश्चयात्मक होती है इसलिए तो वह धीर जीवन के किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के प्रति सदा आश्वस्त रहता है और निश्चित रूप से सफलता को प्राप्त कर लेता है। तभी तो ऐसे व्यक्ति के बारे में सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया हैः-

जेहड़ा सजन सहनशक्ति लवे फड़, ते सहनशक्ति फड़ के ओ दिखावे।
आवागमन मिट गया उसदा, फिर ओ जन्म किवें पावे।।

सारतः याद रखो कि कोमल स्वभाव वाला धैर्यवान इंसान प्रशान्त, मनस्वी, विनय, क्षमा, मधुरता, त्याग, दयालुता, निरभिमानता, वीरता आदि जैसे महान सद्गुणों से अलंकृत होता है इसलिए तो वह ईश्वरीय प्रेम से युक्त हो सदा निश्चिंत व आनन्दमय अवस्था में स्थिर बना रहता है। इस विषय में सजनों सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का उदाहरण हमारे सामने ही है व जिनके विषय में सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में भी कहा हैः-

महाबीर हुये रणधीर हुये, धैर्य दा सिंगार दिखा कर के।
बलवान दिस्सन सारी नगरी ऊपर, लंका जित ओ डंका बजा कर के।।

हम मानते हैं कि धैर्य धारणा की इस महत्ता को जानने के पश्चात् आपके मन में भी धैर्यवान बनने की भावना अवश्य जाग्रत हुई होगी। अगर ऐसा ही है तो सजनों इस शुभ काम को अविलम्ब सिद्ध करने के प्रति अदम्य पराक्रम दिखाओ और धीर शिरोमणि बन परमात्म नाम कहाओ। आप इस प्रयास में कामयाब हो सको इस हेतु सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा हैः-

'गृहस्थ आश्रम में रैंहदियां होयां, घर वाले परिवार वाले कुल संसार वाले कोई ऐसी वैसी बात कहें तो सोचो तोलो कोई अन्दर सट तो नहीं लगी। आप नूं देखो कि अंग-अंग मेरा सबूत है। फिर हृदय में महाराज दे अग्गों प्रार्थना करो कि महाराज जी एन्हां नू वी सुमत्ति बख़्शो। ए सजन वी मन्दी खरीद न करें।

ओ३म् शान्ति शान्ति ओ३म्

जानो अगर हिम्मत दिखा ऐसा कर दिखलाया तो आपके लिए शारीरिक स्वभावों की सफाई करना यानि अपनी जिह्वा को स्वतन्त्र रखना व संकल्प पर पकड़ रखते हुए अपनी सुरत को कंचन रखना सहज हो जाएगा। जैसा कि कहा भी गया है:-

फिर धैर्य दा पा लिया सिंगार, सुरत हो गई कंचन।
शब्द इस तरीके नाल चलया फिर सजन धैर्य वल्लों फ़तह पा गया।।

कहने का आशय यह है कि फिर सत्य को धारण कर व संतोष-धैर्य का सिंगार पहन, धर्म के रास्ते पर सीधे विचरते हुए, जो प्रकाश मन मन्दिर में देखा है वही प्रकाश सारे जग अन्दर देखते हुए एक निगाह एक दृष्टि हो जाओगे और सतवस्तु के इंसान बन विश्राम को पाओगे। यह होगा अपने आप में समुचित ढंग से निर्विकारी जीवन जीते हुए श्रेष्ठता को प्राप्त होना। आप भी ऐसे श्रेष्ठ मानव बनने हेतु सत्यता से अपना आत्मनिरीक्षण करो और इस संदर्भ में स्वयं में पाई कमियों को सुधार कर अच्छे मानव बन अपना शुभ कर लो। अंत में सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार हम तो यही कहेंगे :-

सम संतोष धैर्य दा सिंगार ए, सम संतोष धैर्य दा सिंगार ए।
सच्चाई धर्म पकड़ो विशाल ओये, सम संतोष धैर्य दा सिंगार ए।।

सजनों एकता पकड़ो एकता दिखाओ, सजनों एकता पकड़ो एकता दिखाओ।
सजनों एकता दा पवे प्रभाव ओये, सजनों एकता पकड़ो एकता दिखाओ।।

आप सबकी जानकारी हेतु आगामी सप्ताह सजनों हम धर्म धारणा का महत्त्व जानेंगे।

दिनाँक 12 जनवरी 2020 का सबक़

धर्म धारणा का महत्त्व

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों आओ आज जानते हैं कि सत्य को धारण कर व संतोष, धैर्य का सिंगार पहन, हमें कुदरत द्वारा प्रदत्त आद् संस्कृति, धर्म, गुण आदि पर मर्यादित रूप से हर विध् खुद सुदृढ़ता से बने रहते हुए, धर्मपरायण कैसे बनना है व उस विश्वसनीय ईश्वर प्रदत्त धरोहर को अगली पीढ़ी तक पहुँचा, अपने दायित्व को कुशलता से कैसे निभाना है ताकि हम ईश्वर के कर्त्तव्यपरायण सपुत्र कहला उनके स्नेह पात्र बन सकें?

इस संदर्भ में सजनों मानो कि जिस प्रकार विश्व का धर्त्ता परमात्मा है, उसी प्रकार हम मानव भी कोई विशेष प्रयोजन सिद्ध करने की जिम्मेवारी लेकर इस धरा पर रमण कर रहे हैं। इसी प्रयोजन की यादगीरी दिलाते हुए ही, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा भी गया हैः-

सब विच व्यापक सबनी थाईं, दास धारो धर्म पकड़ो सांवले चरण

याद रहे उस उद्देश्य की समयबद्ध सिद्धि करने में हम तभी सफल हो सकते हैं अगर हम जीवन की हर परिस्थिति में अपने मूल स्वाभाविक गुण (जो हमारा

सनातन तत्त्व है) पर सुदृढ़ता से बने रहने का पराक्रम दिखा पाते हैं। इस संदर्भ में शास्त्र भी हमें सचेत करते हुए कह रहा है:-

धर्म ते चलीं, अधर्म न करीं, खुशी विच उमर बिता
नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा

इसी परिप्रेक्ष्य में आओ अब प्रत्येक पदार्थ की तरह एक मानव का जो विशेष धर्म है उसका व्यावहारिक रूप जानने हेतु सुनिश्चित रूप से हमें क्या प्रयास करना है उसे सूक्ष्मतया समझते हैं ताकि हम निज धर्म के अनुयायी बन, धार्मिक विधि-विधान अनुसार, सदाचारिता से अपने लौकिक कृत्यों का निपुणता से निष्पाप निर्वहन करने के योग्य बन सकें। इस विषय में सजनों जानो कि आज के कलुषित समयकाल में धर्म रूपी रथ के रुके हुए पहिए को तत्त्वज्ञान के उत्तम उपदेश तथा उसके व्यवहार में प्रयोग द्वारा चलाना पड़ता है। इसके लिए आवश्यकता होती है आराधना द्वारा धर्म के वास्तविक मर्म को जानने की क्योंकि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है:-

अराधना धर्म दी साधना करके पहुँचे दयालु दे द्वारे

अतः इस धर्म की मर्म को समझने हेतु सर्वप्रथम यह जानो कि धर्म वह सनातन तत्त्व है जिससे मनुष्य को जीवन में अभ्युदय व मृत्यु के बाद कल्याण की प्राप्ति होती है। इस संदर्भ में सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार:-

सजनों इक धर्म सारी दुनियां अन्दर, इक धर्म ही सजनों पालो तुम।
श्री राम रमणे वाले धर्म ते चल गए, फिर धर्म दी मौज उड़ा लो तुम।।

याद रखो धर्म पर चलने वाला धर्मज्ञ इंसान आत्मा की शाश्वतता, शाश्वत जीवन और शाश्वत मूल्यों पर विश्वास, नैतिक व्यवस्था को भौतिक व्यवस्था से उच्चतर मानने में विश्वास रखता है और उन विश्वासों के अनुसार ही आचार-व्यवहार करता है। तभी तो वह बाह्य आध्यात्मिक कर्म जैसे प्रार्थना, पूजा, परोपकार, सत्य भाषण, अहिंसा, इन्द्रियनिग्रह, क्षमाशीलता, यज्ञ, दान,

तप इत्यादि जैसे पुण्य कर्म सहजता व सरलता से कर पाने में सक्षम हो पाता है। इस तरह वह धर्मदृष्टि अपने धर्म के स्वरूप को जानने वाला सुदृढ़ता से धार्मिक सिद्धान्तों और नियमों का पालन करते हुए इस जगत में सब कुछ निष्कामता व परोपकारिता के भाव से करता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि वह अपने मूल धर्म में श्रद्धा और दृढ़ विश्वास रखते हुए अन्य निज धर्म से भटके हुए अधर्मी पतित इंसानों को भी, उनके यथार्थ धर्म सम्बन्धी सिद्धान्तों, नियमों से परिचित करा, तद्नुसार व्यवहार करने की रीति सिखलाता है और ए विध् उन्हें पुनः धर्मज्ञ बनाने की चेष्टा करता है। इस तरह धर्म-अधर्म का विवेक रखते हुए उसकी रक्षा करने वाला वह धर्मबुद्धि व धर्मप्रेमी इंसान, धर्म पालन में सदा तत्पर रहता है और सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के इस कथन को याद रखते हुए कि 'सुकर्म और धर्म दा सजनों ईश्वर साथी होता है', कभी भी अपना कोई मनोरथ सिद्ध करने के लिए झूठ का सहारा नहीं लेता। यहीं नहीं धार्मिक विषयों का मनन करने वाला ऐसा इंसान कभी भी इस मायावी जगत में अन्य फैले हुए मनगढ़ंत धर्मों को अपनाकर, अपने यथार्थ धर्म से नहीं गिरता यानि कदाचित् किसी विध् भी पथभ्रष्ट नहीं होता। तभी तो धर्मपालन में निपुण वह धर्मवीर कहलाता है और अपने धर्म आचरण के कारण अत्यन्त श्रेष्ठ माना जाता है। ऐसा श्रेष्ठ मानव बनाने हेतु सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें कह रहा हैः-

धर्म नूं जो जितना चाहो, महाराज जी दे नैनां नाल नैन मिला के, फिर जो मन मंदिर सोई जग अंदर मुकम्मल एहो दृष्टि सजनों दिखाओ सम दा कोई सवाल नहीं फिर दिव्य दृष्टि दा शब्द लै के अपना जीवन बनाओ।

सजनों अपने मूल धर्म पर स्थित बने रहने की इस उपरोक्त महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए हमें भी सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का गहनता से अध्ययन कर धर्म के मर्म को जानना होगा व धर्मान्धता छोड़, इतना श्रेष्ठ धर्मात्मा व्यक्ति बनना होगा जो धर्म का अवतार जैसा प्रतीत हो। इस हेतु शास्त्र के कथनानुसारः-

धर्म सच्चाई नूं फड़ लवो, महाराज नाल न छडो प्रीत सजनों
सच्चाई धर्म ही नाल चलेगा, इसे विच है तुहाडी जीत सजनों

निःसंदेह इस के लिए हमें अपने जीवनकाल में सब कुछ धर्मसंगत निष्कामता व सेवा भाव से करते हुए सब कुछ धर्मार्थ के निमित्त कुशलता से करने के योग्य बन परोपकारी नाम कहाना होगा और अपना जीवन सफल बनाना होगा। अंत में सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार हम तो यही कहेंगेः-

चलदे चलो चलदे चलो धर्म दे मार्ग है जित तुम्हारी
चलदे चलो सजनों मुख न मोड़ो,
उस मार्ग मिलन श्री राम बिहारी, मिलन श्री राम जगत भंडारी
धर्म दा रस्ता धर्म दा मार्ग है जे ओ महान
पौड़ी -पौड़ी चढ़दे जाओ सजनो पावो अपना स्थान
कैसा ओथे है विश्राम

इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों
धर्म मत हारना रे धर्म के ऊपर सजनों तन मन धन सब वारना रे

आप सबकी जानकारी हेतु सत्य, संतोष, धैर्य व धर्म धारणा का महत्त्व जानने के पश्चात् आगामी सप्ताह हम सम के विषय में बात करेंगे।

दिनाँक 19 जनवरी 2020 का सबक़

सम धारणा का महत्त्व

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों जब कोई सजन, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी द्वारा विदित युक्ति के वर्त-वर्ताव द्वारा, संतोष-धैर्य का सिंगार पहन, सच्चाई-धर्म के रास्ते पर चलते हुए व सुदृढ़ता से अपने कदम जीवन लक्ष्य की ओर आगे बढ़ाते हुए, निष्काम भाव से परोपकार प्रवृत्ति में ढल जाता है तो सुरत को स्वतः ही परमेश्वर का संग प्राप्त हो जाता है। ऐसा शुभ होने पर उसकी सुरत रानी बन कर, अन्दर महाराज जी के साथ टापू-टापू में विचरती हुई, सर्गुण में पहुँच जाती है और ए विध् महाराज जी के संग रहते हुए पटरानी बनकर उनकी चालें पकड़ती है। इस तरह इस युक्ति की प्रवानगी द्वारा सुरत सहजता से परमेश्वर से मेल खा जाती है व आवागमन का चक्कर मिट जाता है।

इस महत्ता के दृष्टिगत ही सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है कि घर का सब कार्यव्यवहार करते हुए हर समय अपना ध्यान प्रभु चरणों में रखो और एक ख़्याल हो फर्स्ट का नतीजा सुनावो। जानो ऐसा करने से तीनों तापों का रोग मिट जाएगा और हमारे सब सवाल हल हो जाएंगे। तत्पश्चात् समभाव जो एक निगाह एक दृष्टि देखनी होती है, बिना यत्न के उसकी प्राप्ति हो जाएगी। परिणामतः इस विचार पर खड़े हो जाओगे कि 'असलियत ज्योति स्वरूप है जो अपना आप, वही प्रकाश कुल दुनियां में है'।

जानो इस विचार पर खड़े होते ही सजनों परमेश्वर के वचन प्रवान करते हुए अपनी निगाह उस चमत्कार के साथ जोड़ पाना सहज हो जाएगा और ए विध् संसारी व परमार्थी दोनों राज्य प्राप्त कर त्रिकालदर्शी नाम कहाओगे। इस तरह रूप-रंग-रेखा मिट जाएगी और बिन सूरजों चानणा हो, अपने स्थान को पा लोगे यानि ज्योति स्वरूप परब्रह्म परमेश्वर नाम कहाओगे।

सजनों जीवनोपयोगी इस महत्त्व को समझते हुए हमारे लिए भी बनता है कि हम ऐसा हितकर पुरुषार्थ दिखाने में कदापि कमजोर न पड़ें यानि शास्त्रविहित् युक्ति अनुसार प्रयत्न कर संतोष, धैर्य और सच्चाई, धर्म के चारों सवाल हल कर अपनी सुरत को कंचन कर लें। इस हेतु सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसारः-

सम मानो सम जानो सम लवो पहचान समदृष्टि जानो।

सजनों जानो अगर हम ऐसा कल्याणकारी करने में सफल हो गए तो एक निगाह एक दृष्टि पर फतह पा जाएंगे और सम का कोई सवाल नहीं रहेगा क्योंकि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा हैः-

इक निगाह इक दृष्टि दिखा फिर सम दा कोई सवाल नहीं।
आत्मिक ज्ञान तुसां पावो।।
फिर जाँचो तोलो तुल खड़ोवो,
जनचर बनचर जड़ चेतन अपने प्रकाश नूं पावो।।

इस तरह सजनों हम दिव्य दृष्टि का सबक़ लेने के योग्य अधिकारी बन जाएंगे जो इस प्रकार हैः-

'अपनी असलीयत की पहचान, जेहड़ा मन मन्दिर प्रकाश, ओही असलीयत ज्योति स्वरूप मेरा अपना आप। एक निगाह ओ एक दृष्टि ओ एक दृष्टि ओ एक दर्शन, जनचर बनचर ओ जड़ चेतन ओ एक दर्शन ओ एक दर्शन' ।

सजनों इस सबक़ पर खड़ा होने पर समभाव नजरों में हो जाएगा और समदर्शिता अनुरूप परस्पर सजन भाव का व्यवहार करना सहज हो जाएगा। सजनों यह अपने आप में पक्षपातहीन सम्-मार्ग पर सुव्यवस्थित ढंग से प्रशस्त होने की बात होगी। ऐसा समझदार इंसान बनने पर हमारे लिए भेदभाव व राग-द्वेष रहित होकर, ईमानदारी से सबके प्रति समान भाव रखने वाला समदर्शी बनना सहज हो जाएगा। कहने का आशय यह है कि हमारे मन से वासना का शमन हो जाएगा और हम जितेन्द्रिय व क्षमाशील बन सबको समतुल्य मानने लगेंगे। इस तरह सजनों निर्द्वन्द्व, निर्वैर होने पर हमारे मन में शांति का वास हो जाएगा। इस अनुपम अवस्था का वर्णन करते हुए सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ भी कह रहा हैः-

सप्तद्वीप में पहुँचदियां, महाराज जी दर्शन दिखा ही रहे।
दिन खुशियाँ राती सुखां दी नींदर,
सम नूं धारण कर के एकता ही दिखा रहे।।
ओन्हां दी निर्मल भक्ति निर्मल शक्ति,
निर्मल चाल सजनां नूं सिखा ही रहे।
शक्तिवान शक्ति हत्थां विच दे के, ओ शक्ति कैसी चमका ही रहे।।

इस संदर्भ में सजनों जानो कि जिस भी इंसान के हृदय में शांति का स्थाई वास हो जाता है उस समचित्त सजन के लिए आत्मसाक्षात्कार कर, अपने वास्तविक स्वरूप को जानना सहज हो जाता है। इस तरह जो आत्मस्वरूप को जानता है वह समान मानसिक स्थिति वाला विरक्त मानव सर्वव्याप्त आत्मा का सत्कार करते हुए सदा सभी चराचर जीवों के साथ समानता का व्यवहार करता है व अपने जीवन के वास्तविक आनन्द को प्राप्त कर लेता है। तभी तो सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कहता हैः-

दुःख-सुख जेहड़ा सम कर जाने, असलीयत अपनी ओ पहचाणे
ओही परमधाम दियां मौजां माणें।

स्पष्ट है सजनों सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप में स्थित ऐसे इंसान की विचारशक्ति इतनी प्रबल होती है कि उसके लिए शब्द ब्रह्म विचारों को ग्रहण कर, ध्यानपूर्वक उनका मनन करना व अपने साथ-साथ परामर्श द्वारा अन्यों के मन-मस्तिष्क में भी उन सद्-विचारों को जमा, उनका विवेक जाग्रत करने जैसा परोपकार कमाना सहज होता है। तभी तो वह समर्थवान समबुद्धि इंसान, इस मायावी जगत में धीरता व एकरूपता के भाव से निर्लिप्त विचरते हुए, अपने आप को अखण्डता से परमेश्वर में लीन रख पाता है और प्रभु की आज्ञाओं की पालना के निमित्त प्रसन्नतापूर्वक समर्पित रह, समभाव-समदृष्टि के सबक़ को आत्मसात् कर, उसका आदर्शतम रूप कुल दुनियां के समक्ष रखने में कामयाब हो जाता है।

आप सबको भी ऐसा ही कामयाब इंसान बनाने हेतु सजनों सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनानुसार, सतयुग दर्शन वसुन्धरा पर समभाव-समदृष्टि का सबक़ पढ़ाने का प्रबन्ध किया गया है ताकि इस सुविधा का लाभ उठाकर हर पतित मानव अपना जीवन उद्धार करने के योग्य बन सके। अतः यह सब जानने समझने के पश्चात् आप सबके लिए भी बनता है कि न केवल आप स्वयं इस सुविधा का भरपूर लाभ उठाओ अपितु अपने संगी-साथियों व सम्बन्धियों को भी इस से परिचित करा, सर्वहितकारी बनो।

इस परिप्रेक्ष्य में आपको ऐसा ही सर्वहितकारी बनाने हेतु आगामी सप्ताह हम निष्काम धारणा से परोपकार कमाने का महत्त्व समझेंगे।

दिनाँक 26 जनवरी 2020 का सबक़

निष्काम धारणा से परोपकार कमाने का महत्त्व

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें ब्रह्म भाव धारने हेतु अविचार छोड़ निष्कंटक विचारयुक्त निष्काम सवलड़ा रास्ता अपनाने का निर्देश दे रहा है। कहने का तात्पर्य यह है कि शत्रुओं से रहित उस निर्भय सहज रास्ते पर प्रशस्त होने का आवाहन दे रहा है जिसमें कोई बाधा/आपत्ति/उपद्रव/संकट, झंझट आदि न हो। जैसा कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा भी गया हैः-

सजनां दे मेल खावणे दा तरीका, एहो हिवे इन्सान, रस्ता पकड़ो निष्काम
साथ ही यह भी कहा गया है
पकड़ो निष्काम रस्ता, रस्ता पकड़ो निष्काम
फिर भक्ति शक्ति चमके महान।

इसी तथ्य के दृष्टिगत यह कुदरती शास्त्र हमें समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुसार, समस्त सांसारिक वासनाओं से रहित, निष्कपटता से परस्पर सजन भाव अनुकूल आचार-व्यवहार करते हुए, निष्काम कर्म करने का आदेश दे रहा है। जानो यह अपने आप में निष्काम भाव अपनाकर अपने हृदय को एकरस विशुद्ध अवस्था में साधे रखने की शुभ बात है। इसलिए सतवस्तु के कुदरती

ग्रन्थ में कहा भी गया है:-

सजन निष्काम रस्ता लवन ओ फड़ बेटा
फिर झगड़े रोग हो जावन हल बेटा
तदों विश्राम सजन पा जावेगा

मानो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही अर्थात् निष्काम भाव अपना कर ही एक इंसान अपनी वृत्ति, स्मृति, बुद्धि व भाव स्वभाव रूपी ताना-बाना निर्मल यानि निष्कलंक रख सकता है व उच्च बुद्धि, उच्च ख़्याल हो शास्त्रों के नियमित अध्ययन द्वारा आत्मसार को पा, ब्रह्म शब्द विचारों पर अटलता से खड़ा होने का पराक्रम दर्शा सकता है। इस संदर्भ में सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में भी कहा गया है:-

निष्काम नूं धारण करके जेहड़ा निष्काम हो जावे
बिन औखियाईयों, बिन खेचलों, बिन तकलीफों पार हो जावे
निर्भय, निर्वैर ओ ऐसे पद नूं पाये
ओ चमक रिहा चमके कुल जहान, जपो भगवान जपो भगवान

स्पष्ट है सजनों करुणा का सागर निष्काम कर्म करने वाला दृढ़ संकल्पी इंसान जगत में जो भी करता है वह निरासक्त भाव से ही करता है। इसलिए तो समस्त वेद-शास्त्र कह रहे हैं कि निष्कामी ही ब्रह्मज्ञानी बन, मोक्ष का वास्तविक अधिकारी सिद्ध होता है व आत्मोद्धार कर परोपकार के रास्ते पर प्रशस्त हो जाता है। जैसा कि कहा भी गया है:-

निष्काम रस्ते ते विश्राम असां पाया ओ दाता।
निष्काम रस्ते ते ब्रह्म दा ज्ञान आवे,
महाराज जी दे दर्शन करवाये ओ दाता।।

इस प्रकार सजनों वह पुण्य आत्मा, लोक-कल्याण की भावना से शुभ कर्म करते हुए चारित्रिक रूप से पवित्रता का प्रतीक बन उत्तम यश प्राप्त कर लेता है। आप भी सजनों इस उत्तम यश को प्राप्त करने हेतु सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसारः-

साधना करो ते लावो ध्यान, रस्ता पकड़ो निष्काम
रस्ता पकड़ो निष्काम

इस संदर्भ में याद रखो कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ सहित समस्त वेद-शास्त्र, हर मानव को इस प्रकार शास्त्रविहित् निष्काम कर्म करने के स्वभाव में ढल परोपकार प्रवृत्ति में ढलने का आवाहन इसलिए भी दे रहे हैं क्योंकि केवल ए विध् ही मानव सजन पुरुष बन सकता है और अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम को पा सकता है। इस तथ्य की पुष्टि करते हुए ही सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया हैः-

आहा निष्काम रस्ते चढ़ आये के ते पहुँच गया जे दसवें द्वार सजनों

इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों आप भी मन-चित्त लगाकर अपने अदम्य पुरुषार्थ द्वारा इस प्रकार धर्मात्मा व्यक्ति बन जाओ और यशस्वी बन भाग्यशाली नाम धराओ क्योंकि शास्त्र कह रहा हैः-

अपनी अकल दा है प्रकाश पर उपकार कुल दुनियां ते दिखाओ,
पर उपकार कुल दुनियां ते दिखाओ

इस परिप्रेक्ष्य में जानो कि ए विध् परोपकार प्रवृत्ति में ढल निःस्वार्थ दूसरों की भलाई के निमित्त धर्मानुकूल सुकर्म करने पर अंतर्मन में ऐसे आनन्द का अनुभव होता है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता है। अतः इस बात को समझते हुए हम सबके लिए भी बनता है कि पापयुक्त कर्म करने का स्वभाव छोड़ अपने तन-मन-धन से आजीवन शुभ कर्म करने वाले बनें और पवित्रता के प्रतीक बन अवर्णनीय कीर्ति के भागी बन इस जगत में अपना नाम रोशन करें। इस विषय में शास्त्र कह रहा हैः-

जेहड़ा सजन असां ताईं ओ मिलना चाहवे।
मुख मोड़े जगत दे फुरने वल्लों जे मिलना चाहवे।
ख़्याल असां ताईं ओ जोड़ लवे, ख़्याल असां ताईं ओ जोड़ लवे
पर उपकारी ओ नाम कहावेगा।

अंत में सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ अनुसार हम तो यही कहेंगेः-

सुन लौ इक बात, सुन लौ इक बात।
पर उपकार जेहड़ा कमावेगा, पर उपकारी नाम कहावेगा।
जेहड़े सोये पड़े ओ सोये पड़े, जेहड़े सोये पड़े, ओ सोये पड़े।।
सोयां होयां नूं जागृति में लियावेगा पर उपकारी ओ नाम कहावेगा।।

सजनों आप सबकी जानकारी हेतु आगामी सप्ताह से हम पहले की तरह बुधवार के बोर्डों को क्रमशः क्रमवार आगे समझने का सिलसिला पुनः आरम्भ करेंगे। इस संदर्भ में आगामी सप्ताह का विषय है 'सुरत क्या है'? अतः आपसे निवेदन है कि आगे की पढ़ाई ठीक से पढ़ने हेतु, बुधवार के बोर्डों में से अब तक जो भी बताया है वह पिछली सारी दोहराई ठीक से करके आना। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

दिनाँक 2 फरवरी 2020 का सबक़

बुधवार का तीसरा बोर्ड (भाग-4)
(सुरत क्या है)

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों हम मानते हैं कि सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के द्वारे से जुड़े हुए आप सब सजनों ने गत पैंतालीस दिनों में अपने परमार्थी पिता के वचनों को युक्तिसंगत प्रवान करते हुए, अपने संकल्प कुसंगी को अवश्यमेव संगी बनाने का पराक्रम कुशलता से दिखाया होगा। अगर ऐसा ही है, तो जानो कि अब आपको नीतिनुसार दो साल में आत्मिक ज्ञान की पढ़ाई समाप्त कर, अनुभवी आत्मज्ञानी बनने व अपने इस अनमोल जीवन की बाजी इसी जीवन में जीतने से, कोई भी किसी विध् भी नहीं रोक सकता।

इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों अब, बताई जा रही शास्त्र विहित जीवन उपयोगी युक्तियों को, विधिवत् अपना कर, एक पुरुषार्थी व निष्कामी इंसान की तरह ठोस कदमों से मंजिल की ओर आगे ही आगे बढ़ने के प्रति कदापि कमजोर मत पड़ना। याद रखना अगर यह बात मान, तद्नुरूप वैसा ही कर दिखाने का निश्चय ले लिया तो कोई कारण नहीं बनता कि आप अविचारयुक्त अवलड़ा यानि कठिनाईयों भरा रास्ता छोड़, विचारयुक्त निष्कंटक सवलड़ा रास्ता अपनाने में सक्षम न बनो। इस संदर्भ में यह भी याद रखो कि केवल शास्त्र विहित् शब्द विचार अपना कर, व्यवहार में लाने पर ही आप अपनी सुरत

को कंचन रखने में समर्थ हो सकते हो।

हम सब सजन भी, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की मंत्रणा अनुसार, अपनी सुरत को कंचन रख, अपने जीवन यज्ञ को निर्विघ्न समाप्त कर, अभिलाषित परम लक्ष्य को प्राप्त करने में सफ़ल हों, उसके लिए सजनों दिनाँक 22 सितम्बर 2019 से लेकर दिनाँक 15 दिसम्बर 2019 तक की कक्षाओं में बताई हुई युक्तियों को अपनाना सुनिश्चित करना होगा व संकल्प पर पकड़ रखते हुए अपनी सुरत को कंचन कर, महाराज जी को देखने के योग्य बनना होगा ताकि हम उन संग बने रह, धैर्य का सवाल हल करने में सक्षम हो जाएं।

सजनों जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही हम धृतात्मा बन यानि मन को अपने वश में रखते हुए एक स्थिर चित्त वाले धीर व गंभीर इंसान बन सकते हैं और ऐसा बनने पर चंचलता रहित अहंकार शून्य मानसिक स्थिति में दृढ़ता से डटे रह अपनी धारणा-शक्ति को सबल बना सकते हैं। इसलिए तो वेद-शास्त्र कहते हैं कि जिस धैर्ययुक्त इंसान का चित्त विपरीत परिस्थितियों में भी विचलित नहीं होता उस शक्तिशाली, शांत व सुन्दर मन वाले धर्म धुरंधर विद्वान इंसान के मन में ईर्ष्या आदि दुर्गुणों का अभाव रहता है। सजनों जानो मन की इस विशुद्ध अवस्था में ही इंसान विनय, मधुरता, त्याग, बुद्धिमत्ता आदि गुणों से युक्त हो आत्मतुष्टता व निश्चिंतता से आनन्दमय जीवन जीने के योग्य बन सकता है।

इसी परिप्रेक्ष्य में सजनों सजन श्री शहनशाह महाबीर जी हमें आत्मविश्वास के साथ अपने जीवन लक्ष्य की ओर आगे बढ़ने के प्रति समर्थ बनाने हेतु कहते हैं कि हे सजनों ! जानो कि सुरत क्या है ? दीनों पर दया करने वाले वह दयालु जी आगे इस प्रश्न के उत्तर को स्पष्ट करते हुए बताते हैं कि जानो 'सुरत है अन्दर का ख़्याल, अपना प्रतिबिम्ब'। जैसा कि वेद-शास्त्रों में कहा भी गया है कि 'जीवात्मा वास्तव में ईश्वर का प्रतिबिंब मात्र है'। अतः आओ इस सत्य को इस प्रकार समझते हैं कि 'मायायुक्त सगुण ब्रह्म जो इस सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और लय का कारण व सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापक परमात्मा है, वह माया/अविद्या में प्रतिबिंबित चैतन्य स्वरूप परब्रह्म ही मेरा अपना आप है'। अतैव शरीरधारी जीवात्मा के लिए यथार्थतापूर्ण निष्पाप जीवन जीने हेतु,

चेतनता से इस मायावी जगत में ईश्वरत्व के भाव से विचरना अनिवार्य है। जानो ऐसा सुनिश्चित करना अपने आप में एक ईश्वर भक्त की तरह, ईश्वर परायण होकर विचरने जैसी महान बात है। इस विषय में जो भी जीव इस प्रकार अपने कर्मों तथा उनके फल को ईश्वर को निष्काम भाव से अर्पित कर जीवनयापन करता है वही जीव-ब्रह्म के खेल यानि इस कुदरती ईश्वर लीला को वास्तविक रूप से जान पाता है। हकीकत में ऐसा आत्मबोधी जीव ही मनमत लगाये बगैर अपने आप को ईश्वर के अधिकार में समर्पित कर, उसके हुक्मानुसार सब कुछ धर्मसंगत करते हुए सदा समभाव में स्थित बना रह पाता है। ऐसा कमाल होने पर उस सजन का आचार-विचार और रहन-सहन उत्तम हो जाता है और वह ईश्वर का सुपुत्र बन जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि उसका व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन श्रेष्ठ बन जाता है और वह श्रेष्ठता का प्रतीक सद्‌गुण सम्पन्न हो, निष्पक्षता व ईमानदारी से यथार्थता अनुरूप जीवन जी पाता है। तभी तो वह समदृष्टि के प्रताप से जीवन की हर अवस्था में एकरस रहते हुए अपनी सुरत को अखंडता से एक दर्शन में स्थित रख परमार्थ स्वरूप हो पाता है।

सजनों हम सब के अन्दर भी निज धर्म पर, अटलता से सत्यतापूर्वक स्थिरता से बने रहने के प्रति उमंग व उत्साह पैदा हो और हम सुरत-शब्द के खेल को नीतिसंगत अफुरता से खेलने में निपुण बनें, उसके लिए सजन श्री शहनशाह महाबीर जी हम संसार में भटके हुए जीवों को समझाते हुए कहते हैं कि जानो सुरत स्त्री है। ध्यान शक्ति द्वारा इसे देखने का यत्न करने पर, यह सुरत स्त्री भाव में नजर आती है। मानो कंचन सुरत यानि जिसकी सोच सकारात्मक है व जिसका संकल्प स्वच्छ है वह महाराज जी का संग प्राप्त कर उन्हें कई तरीकों से रिझाती है और आत्मा के यथार्थ स्वरूप का बोध कर सदा संतुष्ट रहती है। इस तरह आत्म-तुष्ट ख्याल सदा अपने घर में स्थिर बना रहता है और बाहर यानि इधर-उधर नहीं भटकता।

इसी संदर्भ में सजन श्री शहनशाह महाबीर जी सुरत को देखने की युक्ति बताते हुए समझाते हैं कि पहले हम महाराज जी को देखने की कोशिश करें। जब हमने उनको देख लिया, तो फिर देखें कि वह कौन है जो महाराज जी को देख

रहा है, क्योंकि बाहर का शरीर तो सुन्न होता है। इस तरह महाराज जी के नज़र आने पर सजनों उनका प्रतिबिम्ब होने के नाते स्वयंमेव हमें अपनी सुरत नजर आएगी। सजनों जब सुरत को देख लिया तो फिर उसी को नहीं देखते रह जाना अपितु जिनका वह प्रतिबिम्ब है, हमें उन महाराज जी का श्रृँगार देखना है और इस तरह समझना है कि महाराज जी का श्रृंगार कैसा है, इस तरह हमारा घाटा पूरा हो जावेगा और हमारी सुरत दिन प्रतिदिन चमकती जाएगी। इसी परिप्रेक्ष्य में वह आगे बताते हुए कहते हैं कि जैसे-जैसे हमारी सुरत चमकती गई तो मानो हमने धैर्य का श्रृंगार पहन लिया, यह है हमारा दूसरा सवाल जोकि हल हो गया।

फिर सजनों संतोष और धैर्य, ये दोनों सवाल हल होने पर जैसे ही हम आत्मतुष्ट होकर धीरता के प्रतीक बन जाते हैं तो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी तीसरा और चौथा यानि सच्चाई-धर्म का सवाल हल करने के प्रति हमें प्रेरित करते हुए कहते हैं कि हमारा बोलचाल सत्य हो क्योंकि सत्य चानणा है। हमने अपने शरीर को सचखण्ड बनाना है। यह सच्चाई से इस कदर भर जावे कि इसकी सुगन्धि देवलोक की सुगन्धि को भी मात कर देवे। सत्य को धारण करते हुए धर्म के रास्ते पर हम सीधे विचरते जावें। इस तरह जो प्रकाश महाराज जी का हमने मन मन्दिर में देखा है, वही प्रकाश सारे जग अन्दर देखते हुए हमारी एक निगाह एक दृष्टि हो जावेगी और हम अन्दर-बाहर परमेश्वर को देखते हुए सतवस्तु में इन्सान बन सकेंगे। परिणामस्वरूप हमारी सुरत रानी बनकर अन्दर महाराज जी के साथ टापू-टापू में विचरती हुई सर्गुण में पहुँच जावेगी और महाराज जी के साथ मेल खा जावेगी। इस तरह आवागमन का चक्कर मिट जावेगा।

उपरोक्त के दृष्टिगत सजनों हम कलुकाल के जीव भी परम पुरुषार्थ दर्शा अपनी सुरत को सदा तटस्थता से एकरस कंचन अवस्था में साधे रखते हुए, आवागन के चक्कर से बच जाएं, इस हेतु आओ अब उपरोक्त शास्त्रविहित् युक्ति को गहराई से समझते हैंः-

इस संदर्भ में सतवस्तु के कुदरती शास्त्र अनुसार जानो कि कुदरत ने इस

संक्रमण काल में हर शरीरधारी जीव के मन से कलुषित वातावरण को समेट पुनः सत्य को प्रतिष्ठित करने का कार्यभार सजन श्री शहनशाह हनुमान जी को सौंपा है। इस तथ्य के दृष्टिगत हम सबके लिए आवश्यक हो जाता है कि हम भी सच्चेपातशाह जी की भांति दासी भाव में आ, अपनी सुरत को उन्हीं द्वारा बताई हुई युक्ति अनुसार उन सृष्टि के वाली महाबीर जी संग जोड़, उसे कंचन अवस्था में साधे रखने के प्रति मेहर माँगें। इस कार्य की सिद्धि हेतु हमें उनकी मेहर प्राप्त हो ही हो उसके लिए ध्यानपूर्वक उन संग अखंडता से बने रहें यानि उनके वचनों की पालना करते रहें। इस प्रकार निर्विकारी हो उन द्वारा बताए धर्मयुक्त निष्काम रास्ते पर सहर्ष सत्यनिष्ठा से चलते हुए, इस तरह प्रसन्नचित्त बने रहें कि हमारा अंतःकरण पारदर्शी हो जाए और हम अफुरता से आत्मदर्शन करते हुए अपने वास्तविक आत्मिक स्वरूप को जान जाएं।

सजनों जानो कि ऐसा विचित्र होने पर जैसे ही हमारे मन में अपनी सुरत प्रभु संग जोड़े रखने की प्रबल लगन, श्रद्धा और विश्वास पैदा होगा वैसे ही हमारा अंधकूप में गिरा हुआ ख़्याल स्वतः ही अधोपतन की स्थिति से उबर आत्मप्रकाश में ध्यान स्थिर होता जाएगा। फिर हमें निर्लिप्तता से सारी उमर प्रभु चरणों में समर्पित रहते हुए, अफुरता से प्रेमपूर्वक जीवन व्यतीत करना आनन्दप्रदायक लगेगा।

इस परिप्रेक्ष्य में जानो कि जिस किसी के हृदय में भी ऐसा भरपूर निर्मल प्रेम जाग्रत हो जाता है उसके अन्दर पाँच विकार कदाचित् घर नहीं कर पाते। ऐसा इसलिए क्योंकि जब सुरत कंचन हो जाती है तो हृदय में कई सूरजों के सूरज सम प्रकाश का उद्भव हो जाता है और इंसान के लिए विवेकशक्ति द्वारा सत्य-धारणा सुनिश्चित करना सहज हो जाता है। ए विध् उसके हृदय में सत्य स्थापित हो जाता है और वह आत्म-विश्वास के साथ आनन्दमय जीवन व्यतीत करते हुए परम आनन्द को प्राप्त हो जाता है। इस तरह इस क्रिया द्वारा इंसान कुदरती सत्-शास्त्र में विहित् अमृत रूपी शब्द ब्रह्म विचारों को धारण कर व जीवन व्यवहार में समुचित ढंग से लाते हुए इस जगत से आजाद हो जाता है।

उपरोक्त महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए सजनों सजन श्री शहनशाह महाबीर जी की युक्ति अनुसार अपनी सुरत को इसी आनन्दप्रदायक मस्ती में साधे रख उन्हीं की तरह प्रभु के मस्ताने बन, भक्त शिरोमणि बन जाओ व इलाही स्वाभाविक पोशाक पहन सुरत-शब्द के अपरम्पार खेल की रमज़ जान जाओ।

इसी परिप्रेक्ष्य में सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में आगे परमेश्वर कहते हैं कि इस सृष्टि की रचनाकार, शक्ति रूपा कुदरत का मैं स्वामी हूँ। इस तरह जहाँ एक तरफ मैं इस शक्ति का प्यारा हूँ वहीं दूसरी तरफ लक्ष्मी रूपा सुरत मेरी रानी है और मैं उसका सिरताज हूँ। अतः जो भी सुरत एक निगाह एक दृष्टि द्वारा सर्व-सर्व एक प्रकाश देखते हुए आत्मबोध कर लेती है और मुझ शब्द ब्रह्म संग अफुरता से एकरस जुड़ी रहती है, उस पटरानी रूपा कंचन सुरत का मैं अटल सुहाग कहलाता हूँ। इस तथ्य से अवगत कराते हुए परमेश्वर हर सुरत को आगाह करते हुए कह रहे हैं कि जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही सुरत सदा स्थिरता से आत्मस्मृति में बनी रह पाती है व संतोष-धैर्य का सिंगार पहन विश्रामपूर्वक अपने सच्चे शौह संग जुड़ी रहती है।

सजनों हम सब भी निषंग सच्चे शौह संग सुदृढ़ता से जुड़े रह इस मायावी जगत में निष्पाप विचरते हुए अंत प्रभु संग मेल खा सकें उसके लिए अविलम्ब जगत की तरफ से मुख मोड़, प्रभु संग जोड़ लो ताकि वियोग का भारी दुःख न सहना पड़े। ए विध् अपनी सुरत शब्द में मिला अपने सच्चे शौह का दर्शन पा लो और कंचन नाल कंचन हो जाओ। कहने का तात्पर्य यह है कि सुरत शब्द के खेल को एक बुद्धिमान इंसान की तरह समझो और महाबीर जी द्वारा प्रदत्त सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते को पकड़ अपनी सुरत को इस प्रकार कंचनता का प्रतीक बना लो कि परमात्मा आपकी सुरत को कंठ लगा हर्षा उठें। इस प्रकार प्रकाश नाल प्रकाश हो एकरूप हो जाओ और अपना जीवन सफल बनाओ।

सबकी जानकारी हेतु अगले सप्ताह हम पिछले सबकों की पुनरावृत्ति करते हुए जानेंगे कि सतवस्तु में क्या होता है।

दिनाँक 9 फरवरी 2020 का सबक़

बुधवार का तीसरा बोर्ड (भाग-5)
(सतवस्तु में क्या होगा)

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों अभी तक हमने जो भी बुधवार के बोर्डों में से क्रमशः जाना-समझा, उस संदर्भ में हम आशा करते हैं कि एक दृष्टि एक दर्शन हो, सतवस्तु में पुनः इंसान बन आवागमन के चक्कर से छुटकारा पाने हेतु, एक उत्तम पुरुष की तरह महाराज जी के वचनों की सही अर्थों में पालना करते हुए आप सभी नेः-

1. श्री साजन जी के वचनानुसार अपने ख़्याल का नाता, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित, शब्द ब्रह्म विचारों के साथ जोड़, असत्य-अधर्म का पापमय अविचारयुक्त कवलड़ा रास्ता त्याग दिया होगा व परिवार सहित सत्य-धर्म के विचारयुक्त सवलड़े रास्ते पर चलना आरम्भ कर दिया होगा। इस तरह उत्तम पुरुष की भांति ईश्वर के मननकार सुपुत्र बन, आप अपने ख़्याल को एकरस आत्मप्रकाश में ध्यान स्थिर रखते हुए 'ईश्वर है अपना आप' के श्रेष्ठतम विचार पर खड़े हो स्वतन्त्र अवस्था में स्थित हो गए होंगे।

2. सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी के वचनानुसार शब्द को गुरु मानकर, अपना ख़्याल व ध्यान, मिथ्या संसार के साथ जोड़ने के स्थान पर, आत्मप्रकाश ग्रहण करने हेतु मूलमंत्र आद् अक्षर के साथ स्थिरता से जोड़ लिया होगा।

3. सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनानुसार मूलमंत्र आद् अक्षर की एकरस रटन लगा व सर्वव्याप्त अपनी ब्रह्म सत्ता को ग्रहण करते हुए आत्मिक ज्ञानी बनना आरम्भ कर दिया होगा। इस तरह शब्द ब्रह्म से प्रवाहित ब्रह्म सत्ता की अविरल पावन धारा से अब आपका तन-मन रोमांचित हो शीतलता का अनुभव कर रहा होगा व हृदय में सर्वोच्च सत्य यानि सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप के प्रकटीकरण का अनोखा एहसास होना आरम्भ हो गया होगा।

4. जिह्वा से सबको सजन बुलाते हुए अपनी जिह्वा को स्वतन्त्र व संकल्प को स्वच्छ कर, एक निगाह एक दृष्टि होने के प्रयास में अवश्यमेव रत हो गए होंगे। यही नहीं इस हेतु आपने विचार द्वारा खुद पर पकड़ रखते हुए व खालस सोना हो दिव्य धर्मी बनने हेतु अपना हृदय प्रकाशित कर लिया होगा। कहने का तात्पर्य यह है कि आपने अब एकात्मा के भाव में आ कुल दीपक बनने की ठान ली होगी।

5. परोपकार प्रवृत्ति में ढल, कुल तारक बनने हेतु परस्पर मिलते समय सतवस्तु की रामसत् पूछनी आरम्भ कर दी होगी। इस रामसत् के माध्यम से सजनों आपः-

क. अपना गृहस्थ-धर्म ठीक निभाते हुए जो अन्य सजन कर्त्तव्यविमुख हो, विपरीत दिशा में रुढ़ रहे हैं, उन्हें भी पकड़ कर सही राह पर ला रहे होंगे।

ख. स्वयं सच्चाई-धर्म के रास्ते पर ठीक चलते हुए, जो अन्य सजन इस सत्य-धर्म से गिर कुकर्म-अधर्म में फँस गए हैं, उन गिरे हुओं को फिर से खड़ा कर रहे होंगे।

ग. समस्त कार्यव्यवहार करते हुए विधिवत् नाम-ध्यान में ईश्वर से जुड़े रहते हुए, अन्य ईश्वर विमुख रोते-झुखते सजनों को भी अपने असलियत स्वरूप से जुड़े रहने के लिए प्रेरित कर रहे होंगे ताकि वे रोते हुए सजन भी हँस पड़ें।

घ. भक्ति-शक्ति धारण कर, दूसरे अन्य जो भक्ति-शक्ति की तरफ से सोए पड़े हैं, उन्हें भी जाग्रति में ला रहे होंगे।

च. अपनी यश-कीर्ति में फ़रक न पड़ने देते हुए अन्य जो कुरस्ते चढ़ गए हैं यानि कुकर्म-अधर्म कर रहे हैं उन दुराचारी व दुश्चरित्र सजनों को भी चरित्रवान बनने की युक्ति बता सही रास्ते पर ला रहे होंगे।

6. 'ब्रह्म स्वरूप है अपना आप, हम तो हैं ओही प्रकाश', इस कथन को अपने जीवन का यथार्थ मान, (इस मिथ्या संसार की चकाचौंध में उलझने के स्थान पर) अपने मन को ब्रह्म के ध्यान में लीन रखना सुनिश्चित कर लिया होगा। इस तरह अब आप जो प्रकाश या स्वरूप अपने मन मन्दिर में देख रहे होंगे उसी को हर एक में देखने का प्रयास भी कर रहे होंगे।

7. अपने आत्मिक स्वरूप का यथार्थतः भान करने हेतु, अमर आत्मा के भाव को धारण कर जन्म-मरण, रोग-सोग, खुशी-गमी, मान-अपमान, अमीरी-गरीबी इन समस्त अवस्थाओं से अप्रभावित रह व मन को संकल्प-रहित अवस्था में साधे रखते हुए, वज्र अवस्था में आने का प्रयास करना आरम्भ कर दिया होगा।

8. रूप-रंग-रेखा से रहित अपने असलियत ब्रह्म स्वरूप को पहचानने हेतु, नित्य स्वरूप में जुड़े रहने का सतत् प्रयत्न आरम्भ कर दिया होगा। कहने का आशय यह है कि शब्द में जुड़कर सजन भाव और गृहस्थ धर्म के वचनों पर परिपक्व हो हर हालत में अपने असलियत प्रकाश में एक रस स्थित रह, एक आत्मा के भाव में स्थित होकर यह अनुभव कर लिया होगा कि सर्व-सर्व वही ब्रह्म ही ब्रह्म है। जानो ऐसा अनुभव होने पर ही इस सत्य को अपने जीवन में आत्मसात् कर पाओगे कि इस जगत में ब्रह्म विशेष भी है निर्लेप भी है और रूप, रंग, रेखा से बाहर है।

9. बैहरूनी वृत्ति को छोड़ कर, अन्दरूनी वृत्ति को धारण करने का परम पुरुषार्थ दिखाने की ठान ली होगी। यही नहीं आपकी बंदगी यानि उपासना स्वीकार्य हो और आपके मन में सेवकत्व का भाव जाग्रत हो, इस हेतु आप सब अब सभा में आँखें बंद करके बैठते होंगे ताकि आपका ध्यान महाराज जी के साथ निरंतर जुड़ा रहे और किस विध् भी टूटने न पाए।

10. अपनी सुरत को संवार कंचन करने हेतु यानि अपने यथार्थ स्वभाव व गुण-धर्म को धारण कर, शक्तिमान बनने हेतु आत्मेश्वर के साथ तोतली-तोतली बातें करनी आरम्भ कर दी होंगी। इस तरह पति परमेश्वर को रिझाने हेतु आप अपने आप को भाव स्वभावों की तरफ से नितोनित तो पकड़ ही रहे होंगे साथ ही साथ घरेलू बातों की कचहरी बंद कर आत्मिक ज्ञान की पढ़ाई को समझने का प्रयास भी कर रहे होंगे। निःसंदेह इस के लिए आपने अब खलबली को हटा विश्राम पाने हेतु मौन वृत्ति अपना ली होगी।

11. इसी जीवन में ब्रह्म ऋषि की पदवी को प्राप्त करने हेतु, अपनी इन्द्रियों पर कंट्रोल करके विकार वृत्तियों को त्यागने का व जितेन्द्रिय बनने का भरसक यत्न आरम्भ कर दिया होगा।

12. विभिन्न युगों में प्रचलित बाल अवस्था के भक्ति-भावों को स्पष्टतया समझते हुए वर्तमान परिवेश में युवावस्था का भक्ति भाव अपनाना क्योंकर श्रेयस्कर है, इस तथ्य की जानकारी प्राप्त कर, समभाव -समदृष्टि की युक्ति अनुसार संकल्प कुसंगी को संगी बना व संतोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म के सवाल हल कर नौजवान युवावस्था में आने का दृढ़ निश्चय ले लिया होगा ताकि उच्च बुद्धि उच्च ख़्याल हो आपकी भक्ति प्रबल व शक्ति ताकतवर हो जाए।

13. सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनानुसार अपने गृहस्थ आश्रम व शारीरिक स्वभावों की सफाई ठीक से रखने हेतु बैहरूनी व अन्दरूनी वृत्ति की निर्मलता बनाए रखनी सुनिश्चित कर ली होगी। कहने का आशय यह है कि अब तो आपः-

क. व्यक्तिगत स्वच्छता के साथ-साथ आस-पास के रिहायशी वातावरण व परिधान की स्वच्छता को बनाए रख पा रहे होंगे।

ख. अपनी हैसीयत के अनुसार सात्विक व संतुलित खुराक भी खा रहे होंगे ताकि भजन बंदगी ठीक से हो सके।

ग. परस्पर जी-जी का व्यवहार करते हुए व बाल-बच्चों की पालना-पोषणा ठीक से करते हुए, उन्हें अभी से आत्मिक ज्ञान की धारणा के प्रति उत्साहित कर रहे होंगे ताकि उनके संस्कार अच्छे बन सकें और वे कुरस्ते से बचे रह सच्चाई-धर्म की राह पर अग्रसर हो सत्य प्रकाशी बन जाएं।

घ. झुखना-रोना छोड़, संकल्प कुसंगी को स्वच्छ व संगी बनाए रखने हेतु, 'जो मन मन्दिर, सो ही महाराज का रूप सारे जग अन्दर', इस सत्य को आत्मसात् कर रहे होंगे ताकि घर-परिवार व कुल संसार सजन हो जाए व इस तरह दृष्टि अपने आप ठीक हो जाए और संतोष का सवाल हल हो जाने पर मन शांत हो जाए।

च. अपनी सुरत को कंचन व अलौकिक गुणो से श्रृंगारित करने हेतु परमेश्वर के दिव्य गुणों की परख कर उन्हें धारण कर रहे होंगे ताकि धैर्य का सवाल हल हो जाए।

छ. संतोष और धैर्य का सवाल हल करने के साथ साथ परस्पर सत्य का वर्त--वर्ताव करते हुए अपने शरीर को सच खण्ड बना रहे होंगे ताकि यह सच्चाई से इस कदर भर जाए कि इसकी सुगन्धि देवलोक की सुगन्धि को भी मात कर देवे और हमारा सच्चाई का सवाल हल हो जाए।

ज. सत्य को धारण करते हुए धर्म के रास्ते पर सीधे विचर रहे होंगे ताकि एक निगाह एक दृष्टि हो जाएं और धर्म का सवाल भी हल हो जाए।

सजनों यह सब पढ़ने और समझने के पश्चात् सब सजनों ने सत्यरूप से अपना -अपना नतीजा लेना था। अगर सजनों ठीक से यह कार्य नहीं कर पाए तो कदम आगे बढ़ाने के लिए अब आपको प्रतिदिन आगामी सप्ताह तक इसे पढ़ना है और फिर आत्मनिरीक्षण कर जहाँ भी खुद में कमी नजर आए उसका सुधार करना है। ऐसा करने से ही सजनों जीवन की बिगड़ी बात सँवरेगी अन्यथा कोई लाभ नहीं होगा। अब आगे ध्यान से सुनोः-

सजनों जानो कि संतोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म जब हमारे यह चार सवाल हल हो जाते हैं तो सहजता से हमारी एक निगाह एक दृष्टि हो जाती है और हम सतवस्तु में इन्सान बनने के योग्य पात्र बन जाते हैं। इस तरह हमारी सुरत रानी बनकर अन्दर महाराज जी के साथ टापू-टापू में विचरती हुई सर्गुण में पहुँच जाती है और महाराज जी के साथ मेल खा जाती है। ऐसा होने पर आवागमन का चक्कर मिट जाता है। सजनों क्या आप सब भी इस उत्तम उपलब्धि को प्राप्त करना चाहते हो?

हाँ जी।

तो फिर सर्वप्रथम उपरोक्त विचारों को समुचित ढंग से धारण कर जीवन व्यवहार में योग्यता से लाने के प्रति अपनी जाँचना-तुलना करो। इस क्रिया के पश्चात् अगर कहीं भी किसी प्रकार की कमजोरी नजर आए तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के निम्नलिखित वचनों को याद करते हुए समय रहते ही संभल जाओ और एक हिम्मतवान की तरह अनुभवी आत्मिक ज्ञानी बनने का उचित पुरुषार्थ दिखा सतवस्तु में प्रवेश करने के योग्य बन जाओ क्योंकि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा हैः-

सजनों सतवस्तु है आने वाली
अजण वक्त है संभलो सजनों, इस नगरी तों न जावो खाली

सजनों क्या श्री साजन जी के मुख की यह चेतावनी सुनने के पश्चात् मन में, सतवस्तु में क्या होता है, यह जानने की इच्छा जाग्रत हुई है?

हाँ जी।

तो फिर मन-चित्त लगा कर जानो कि सतवस्तु में क्या होगाः-

'सतवस्तु में विचार ते सतज़बान होसी, एक दृष्टि, एकता महान होसी। न जप, न तप, न भजन, न बन्दगी एक अवस्था ओ जगत जहान होसी। सजनों यही समय है कि हम महाराज जी से मेल खा सकते हैं। सजन कलुकाल

हटने वाला है, सतवस्तु आने वाली है। सतवस्तु में हम महाराज जी से मेल नहीं खा सकते क्योंकि सतवस्तु में केवल विचार, सतज़बान एक दृष्टि एकता और एक अवस्था होगी। न सिमरण, न भजन और न ही बन्दगी होगी। खुला प्रकाश होगा। सतवस्तु में कला से सब कुछ उपजेगा। इसी लिए सजनों हमारे लिए यही समय है अपना जीवन बनाने का और प्रभु से मेल खाने का। यह चार सवाल हमने धारण करके हल करने हैं। अगर हम एक निगाह, एक दृष्टि पर फतह पा गए तो सम का कोई सवाल नहीं। हमें दिव्य दृष्टि का सबक मिलेगा।'

अब आप पूछोगे कि दिव्य दृष्टि का सबक क्या है?

जानो यह है 'अपनी असलीयत की पहचान, जेहड़ा मन मन्दिर प्रकाश, ओही असलियत ज्योति स्वरूप मेरा अपना आप, एक निगाह ओ एक दृष्टि, ओ एक दृष्टि, ओ एक दर्शन, जनचर बनचर, ओ जड़ चेतन, ओ एक दर्शन, ओ एक दर्शन'।

जानो सजनों 'एक निगाह एक दृष्टि में फस्ट, सैकिन्ड और थर्ड डिवीज़न में पास होने वाले सजन फिर सतवस्तु में इन्सान हो जाएंगे, मगर सतयुग के अन्त में जो कि तीन युगों के बराबर है उसके बाद थर्ड डिवीज़न वाले सजन गिर जाएंगे। सैकिन्ड डिवीज़न वाले सजन भी अपने नम्बरों के अनुसार उनके साथ गिर सकते हैं। फस्ट डिवीज़न में पास होने वाले सजन फिर जन्म लेकर अपने जीवन को बना सकते हैं।

इस बात को समझते हुए सजनों हमारे लिए बनता है कि 'संकल्प पर पूरी तरह से फ़तह पा जाएँ और फ़र्स्ट निकल कर, दिव्य दृष्टि लेकर, आवागमन के चक्कर से बच जाएं।' अतः सजनों याद रखोः-

'इस वक्त दी शुद्ध कमाई दे मुताबिक ओ सजनों सतवस्तु में मौज उड़ानी जे, ओ मौज उड़ानी जे। सतवस्तु में एक दृष्टि एक दर्शन।'

अंत में सजनों उपरोक्त को दृष्टिगत रखते हुए हमारे लिए बनता है कि हम सजन श्री शहनशाह हनुमान जी द्वारा बताई युक्ति अनुसार मूलमंत्र आद् अक्षर की रटन लगाकर विधिवत् आत्मिक ज्ञान को प्राप्त करने का पुरुषार्थ दिखाने में अब किसी प्रकार से भी और विलम्ब न करें। कहने का आशय यह है कि समय रहते ही आत्मिक ज्ञानी बन संकल्प पर पूरी तरह से फतह पा जावें और शुद्ध कमाई करते हुए चैत्र के यज्ञ तक फर्स्ट का नतीजा दिखा आवागमन के चक्कर से बच जावें।

इस संदर्भ में सजनों निर्विघ्न आगे बढ़ते हुए हम अपने जीवन का प्रयोजन समयबद्ध सिद्ध करने में किसी प्रकार से भी कमज़ोर न पड़ें, उसके लिए सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें जिस प्रकार एक ख़्याल हो, हर समय अपना ध्यान प्रभु के चरणों में जोड़े रख, प्रभु से मेल खाने का तरीका उदाहरण सहित समझा रहा है, वह आगामी क्लास में बताएंगे।

दिनाँक 16 फरवरी 2020 का सबक़

बुधवार का तीसरा बोर्ड (भाग-6)
(स्वार्थी)

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों संकल्प पर पूरी तरह से फतह पा, एक दृष्टि एक दर्शन में स्थित हो आवागमन के चक्कर से बचने के लिए सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनानुसार हमारे लिए युक्तिसंगत जो पुरुषार्थ दिखाना आवश्यक है, आओ अब उसको उदाहरण सहित सविस्तार जानते हैं। इस विषय में सजनों अगर आपके मन में स्वार्थ व परमार्थ दोनों में फर्स्ट का नतीजा दिखा महाराज जी के साथ मेल खाने की इच्छा है तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में इस संदर्भ में उदाहरण सहित वर्णित स्वार्थी व परमार्थी युक्तियों को शीघ्रता-अति-शीघ्र यथा धारण कर एक ख़्याल हो जाना होगा। अब इसी संदर्भ में आओ सब मिलकर पहले जीवन का समस्त स्वार्थी कार्य व्यवहार करते हुए हर समय अपने ख़्याल को प्रभु के चरणों में स्थिरता से साधे रख अपने असलियत ज्योति स्वरूप की पहचान कैसे करनी है उस युक्ति को विधिवत् जानते हैंः-

इस संदर्भ में आओ सजनों पहले स्वार्थ शब्द का अर्थ समझते हैं। जानो जहाँ स्व का अर्थ है स्वमति अनुसार स्वाभाविक रूप अपना, अपने व अपने परिवार, जाति, वर्ग या राष्ट्र आदि के लिए जीवन जीना या फिर अपने वंश/परिवार को दृष्टिगत रखते हुए, मेहनत करके धन-दौलत व सम्पत्ति अर्जित कर उन्हें अधिकाधिक भौतिक सुख प्रदान करने तक ही सीमित रहना। जानो यह अपने जीवन का वास्तविक प्रयोजन या पुरुषार्थ भूल, इन्द्रिय विषयों में उलझ, अपने वास्तविक धर्म से विमुख हो, अर्थहीन जीवन जीने जैसे अविचारी स्वभाव में ढलने की बात है। अन्य शब्दों में यह अपने आप में, अपना ही अंत करने यानि मृत्यु को आमंत्रित करने जैसी दुर्भाग्यपूर्ण भूल है। इस भूल के परिणामस्वरूप इन्सान सांसारिक/भौतिक लाभ के निमित्त मतलबी दुनियां वालों को प्रसन्न करने के चक्कर में अपने मन का संतोष यानि आत्मिक आनन्द खो बैठता है और सारी उम्र झुखने-रोने में व्यतीत कर मौत को प्राप्त होता है।

सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के नाते हमारे साथ ऐसा न हो इस हेतु जानो कि कुदरत की तरफ से, हर जीव के लिए अपने स्वार्थ व परमार्थ सिद्ध कर पाने के योग्य बनने हेतु अपने स्वाभाविक स्वरूप का निर्माण करना उसके अपने हाथ में होता है। इस विषय में यदि मानव चाहे तो दिलचस्पी में आ स्वधर्म अपना कर, ईश्वर-भक्ति में रत रह, अपनी मानसिक दशा सँवार, आत्मीय जन बन सकता है और ए विध् अपने ही शरीर के अंगों की गतिविधियों का अनुभव कर पाने के काबिल बन, अपनी शारीरिक स्वस्थता का भली विध् ध्यान रखते हुए, तमाम विकृतियों से बचा रह सकता है। इस तरह ऐसा पराक्रम दिखा, वह अपने जीवन का हर कर्त्तव्य सर्वहित के निमित्त, स्वचेतन अवस्था में बने रह, समुचित ढंग से निभा सकता है और पवित्र मन अर्थात् निर्मल वृत्ति वाला आत्मीय जन बन, स्पष्टता व निष्कपटता से आनन्दमय जीवन व्यतीत कर सकता है। कहने का आशय यह है कि ऐसा विशुद्ध हृदय वाला आत्मचेतनायुक्त इंसान अपने जीवन में शारीरिक स्वभाव अपनाने की भूल

कदापि नहीं करता क्योंकि वह जानता है कि मैं नश्वर शरीर नहीं अपितु नित्य आत्मा हूँ और आत्मा कभी भी अपने इस मूल स्वभाव को नहीं छोड़ती। इस तरह अपने मूल स्वरूप से जुड़े रह वह सदैव आत्मिक स्वभाव अपनाता है और उसी मालिकाना हक से इस शरीर को सत्कर्मों की ओर प्रेरित करता है।

उपरोक्त तथ्य के दृष्टिगत सजनों हमारे लिए भी बनता है कि अगर हम किसी कारण भी स्वार्थपरता का भाव अपना शारीरिक स्वभाव अपना चुके हैं तो उस भूल का सुधार कर यानि आत्मीयता से परिपूर्ण वैभवशाली स्वभाव अपनाकर, अपनी विकृत वृत्ति-स्मृति, बुद्धि व स्वभावों के ताने-बाने को निर्मल बनाने में और विलम्ब न करें और इस तरह अपने गुणों व शक्ति को पहचान लें। अन्य शब्दों में संसारी धन-सम्पत्ति का संग्रह करने के अविचारयुक्त कठिन रास्ते को छोड़ प्राकृतिक धर्म पर सत्यता से डटे रहें व अपने गृहस्थाश्रम को ठीक से निभाने के साथ-साथ, इस तरह से सर्व एकात्मा के भाव पर स्थिर बने रहें कि परमार्थ का विचारयुक्त रास्ता हमारी पकड़ से फिर किसी विध् भी न छूटे। जानो यह अपने आप में ख़्याल को अपने सच्चे घर में ध्यान स्थिर रखते हुए इस जगत में विशेष होते हुए भी सदा निर्लेप अवस्था को प्राप्त रहने जैसी उत्तम बात है।

इस संदर्भ में यह भी जानो कि यह अपने आप में अपने जीवन का मनोरथ सिद्ध करने के प्रति किसी प्रकार का भी मनगढ़ंत धार्मिक तप करते हुए, स्वयं को शारीरिक अथवा मानसिक रूप से यातना देने के स्थान पर सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार सत्य धर्म के भक्ति भाव पर स्थिर बने रह बिन औखियाईयों, बिन खेचलों अपने जीवन लक्ष्य को सिद्ध करने जैसी मंगलकारी बात है। इस बात को सजनों समझो और अपनी इस कार्य सिद्धि को सहज व सरल बनाने के लिए, सदा अपनी स्त्री रूपा सुरत यानि ख़्याल को कंचन रख परम पुरुष परमात्मा के संग जोड़े रखने की साधना करो। कहने का तात्पर्य यह है कि यह जो मायावी संसार रूप में पराई वस्तु है अपने ख़्याल को उसके संग जोड़

अपने मन में काम भोग की इच्छा जगा स्वार्थी मत बनो। जानो अगर यह महा भूल कर एक दफा स्वार्थपरता का रास्ता अपना लिया तो शब्द विचार पकड़ से छूट जाएगा और ज्ञानेन्द्रियों द्वारा मन में आए हुए मिथ्या विचारों अनुसार चलते हुए अपना जीवन बरबाद कर लोगे। कहने का तात्पर्य यह है कि मनमत अनुसार ही नकारात्मक सोचोगे, बोलोगे व करोगे। परिणामस्वरूप दोषयुक्त जीवन जीते हुए अंत कामी, क्रोधी बन जीवन की बाजी हार जाओगे।

सजनों सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के द्वारे पर होने के नाते हम उनके वचनों पर चलते हुए जीवन की बाजी जीतें ही जीतें, इस हेतु हमें स्वावलंबी आत्मीयजन बन समुचित भौतिक ज्ञान भी प्राप्त करना ही होगा ताकि हम अपने पराक्रम द्वारा अपने व्यवसाय/पेशे से आवश्यकता अनुसार सांसारिक धन-सम्पत्ति अर्जित कर अफुरता से अपने परिवारजनों के प्रति समस्त कर्त्तव्यों का ठीक ढंग से निर्वहन करने में समर्थ हो सकें। जानो ऐसा सुनिश्चित करना पारिवारिक एकता व शांति बनाए रखने के लिए नितांत आवश्यक है। इसी के साथ यह भी जानो कि ऐसा परम पुरुषार्थ दिखाए बगैर हमारा ख़्याल परमार्थ की राह पर कदापि प्रशस्त नहीं हो सकता। हम ऐसे योग्य व्यक्ति बनें इसीलिए तो बुधवार के तीसरे बोर्ड के कालम 4 (1) के अंतर्गत जालन्धर के एक लड़के का उदाहरण देकर बताया गया है कि 'जालन्धर में एक लड़का रहता था। एक तो माता के न होने के कारण उसे रोटी खुद बनानी पड़ती थी और दूसरा अत्यन्त गरीबी के कारण दो टयूशनें भी पढ़ाता था। पर यह सब काम करते हुए भी वह विचारशील बी.ए. में फस्ट निकला क्योंकि उसका ख्याल सब कार्य व्यवहार करते हुए भी पढ़ाई की तरफ रहता था। इसलिए उस लड़के की तरह हमें भी चाहिए कि घर का सब कार्य व्यवहार करते हुए हर समय अपना ध्यान प्रभु के चरणों में रखें और फस्ट निकल के दिखावें'।

सजनों आप सब स्वीकारेंगे कि यह अपने आप में गृहस्थ-धर्म का फ़र्ज़ अदा

हँस कर ठीक निभाते हुए व हर पल अपने ख़्याल को सच्चे घर में रखते हुए, सही दशा में बने रहने की बात है क्योंकि ऐसा सुनिश्चित करने पर अव्वल तो मन में संकल्प उठेगा नहीं और यदि भूल से उठ भी गया तो वह सजन और संगी बना रहेगा। मानो यह सदा एकरस आत्म चेतना युक्त रहने जैसी मंगलकारी बात है। कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसा होने पर मन में कदापि छल-कपट या बेईमानी का भाव नहीं पनपेगा यानि पवित्रात्मा की भांति शरीर व मन की स्वच्छता तो बनी ही रहेगी साथ ही स्फूर्ति और स्पष्टता भी सधी रहेगी। इस तरह इस मायावी जगत में स्वामित्व के भाव से स्वच्छंद होकर निष्पाप जीवन जीते हुए अपना नाम रोशन करना सहज हो जाएगा। इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए सजनों मानो कि हम स्वयं प्रकाशमान हैं और हमें इसी आंतरिक भाव को अपने स्वभाव के अंतर्गत रख परमार्थी बनना है। आप सब की जानकारी हेतु परमार्थी कैसे बनना है, इस विषय में उदाहरण सहित अगली कक्षा में जानेंगे।

दिनाँक 23 फरवरी 2020 का सबक़

बुधवार का तीसरा बोर्ड (भाग-7)
(परमार्थी)

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों जानो व मानो कि अगर शास्त्रविहित् उच्च व सर्वोत्कृष्ट युक्तियों को धारण कर स्वार्थी कर्त्तव्यों का ठीक से निर्वहन करते हुए यानि दैनिक कार्यव्यवहार के दौरान, अपने ख़्याल को परमेश्वर संग जोड़े रखने में समर्थ हो गए तो हमारे लिए यथार्थ आत्मज्ञान प्राप्त कर, एक सुमतिवान निर्विकारी इंसान की तरह इस जगत में विचरना अत्यन्त सहज हो जाएगा। कहने का तात्पर्य यह है कि इस तरह हमारा सोया भाग्य जाग जाएगा और हम एक सर्वशक्तिमान वैष्णव जन की तरह परिवार-समाज देश-काल जनित परिस्थितियों से निरपेक्ष रह, सदा उपाधिरहित व दोषमुक्त बने रहेंगे।

जानो इस सर्वोच्च अवस्था को प्राप्त होने पर हमारे अन्दर 'ईश्वर है अपना आप' का विचार स्थित हो जाएगा और हमको स्वाभाविक तौर पर ईश्वरीय आज्ञाओं का पालन करने के निमित्त जीवन जीना अच्छा लगेगा। सजनों इस सबसे

अधिक महत्त्वपूर्ण बात या उपलब्धि को दृष्टिगत रखते हुए उठो व जाग्रति में आकर एक परम वीर की तरह आत्मिक ज्ञान प्राप्त कर सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी बन जाओ। ऐसा ही हो इस हेतु सदा याद रखो कि आपके ख़्याल यानि सुरत का सम्पर्क किसी विध् भी परमाक्षर प्रणव मंत्र से न छूटे। इस तरह आपके ख़्याल का एकरस नाता सबसे श्रेष्ठ सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप परमात्मा से जुड़ा रहे और मन-चित्त सदा शांत रहे। जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही हम बद्ध जीवात्मा से भिन्न, कार्य कारण से परे अपने नित्य, शुद्ध, ज्ञानस्वरूप और मुक्त स्वभाव वाले चैतन्य ब्रह्म स्वरूप में स्थित रह पाएंगे और सहसा ही कह उठेंगे 'मैं ब्रह्म हूँ'।

सजनों इस परम उपलब्धि को दृष्टिगत रखते हुए अगर हमारे मन में भी परम पद पाने के प्रति उमंग व उत्साह पनपा है तो हमें भी सच्चेपातशाह जी की तरह सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों पर चलते हुए परम पुरुषार्थ दिखाना ही होगा यानि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित ब्रह्म और जीव के ज्ञान के सर्वोच्च सत्य को विधिवत् ग्रहण करने में किंचित् मात्र भी विलम्ब नहीं करना होगा। कहने का तात्पर्य यह है कि हमें परमार्थ-सम्बंधी ज्ञान का चिंतक और साधक बन इस प्रकार परमार्थ दृष्टि हो जाना होगा कि हमारे लिए एकता और एक अवस्था में बने रह, परोपकार कमाना सहज हो जाए। जानो कलियुग में जीवन विजयी होने के लिए ऐसा पराक्रम दिखाना सबसे अधिक आवश्यक है। ऐसा सुनिश्चित करने पर ही हम परमार्थ को जानने वाले परमार्थी इंसान कहला सकेंगे और अपना जीवन परम अर्थ सिद्ध करने के निमित्त समर्पित कर सकेंगे।

सजनों हम सब भी ऐसे ही परमार्थी इंसान बन सकें इसीलिए बुधवार के तीसरे बोर्ड के अंतर्गत कालम 4 (2) में 'परमार्थी' का उदाहरण देते हुए कहा गया है कि:-

'सजनों सुनोः- कार्य-व्यवहार करते हुए हमारा ख्याल महाराज जी के साथ जुड़ा रहे। जो मन मन्दिर प्रकाश है, जग अन्दर, जनचर, बनचर, जड़ चेतन सब में हमें वही प्रकाश नजर आवे। इस प्रकार एक निगाह, एक दृष्टि सजनों पन्द्रह दिनों के अन्दर हो सकती है। इसलिए हमें पूरी तरह से यत्न करना चाहिए। चलो पन्द्रह दिन के अन्दर अगर हम इस वृत्ति को धारण करने में अपने आप को असमर्थ समझते हैं तो जितना शीघ्र हो सके यह वृत्ति अवश्य धारण कर लेनी चाहिए और एक ख़्याल हो जावे महाराज जी नाल मेल ऐहो खावे'।

सजनों अगर यह सुन-समझ कर आपके मन में एक ख़्याल हो महाराज जी के साथ मेल खाने की इच्छा जाग्रत हुई है तो ऊपरलिखित युक्ति को सहर्ष स्वीकारते हुए व्यवहार में लाओ और सत्य धर्म के रास्ते पर चलते हुए परोपकार प्रवृत्ति में ढल एक सच्चे सेवक की तरह समाज की सेवा को परमेश्वरीय कार्य समझते हुए निष्काम भाव से करना अपने स्वभाव के अंतर्गत कर लो। जानो यह अपने आप में सतयुगी श्रेष्ठ मानव बनने जैसी शुभ बात है। इस विषय में याद रखो कि सतवस्तु में संकल्प नहीं होता और इसीलिए सबके लिए एक दृष्टि एक दर्शन में स्थित रहना सहज होता है। इस संदर्भ में आप भी किसी विध् कमजोर न पड़ो उसके लिए सचेत करने हेतु आपको आगामी कक्षा में जानकारी प्रदान करेंगे।

दिनाँक 1 मार्च 2020 का सबक़

बुधवार का तीसरा बोर्ड (भाग-8)
(सतवस्तु में संकल्प नहीं था)

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों हम भी सतयुगी इंसानों की तरह, जगत के समस्त कार्यव्यवहार, शास्त्रविहित् नीति-नियमों अनुसार करते हुए, अपने ख़्याल को परमेश्वर के साथ जोड़े रखने में समर्थ बनें व निर्विरोध ऐसा पराक्रम दिखा प्रभु नाल प्रभु हो सकें, उसके लिए विधिवत् मंत्रणा हमें बार-बार मिल रही है। इसी संदर्भ में आगे जानो कि जब किसी पदार्थ के सम्बन्ध में, मन में बनी धारणा संकल्प का रूप ले लेती है तो इंसान अपना सब कुछ दाँव पर लगाकर उस उद्देश्य की प्राप्ति या पूर्ति में रत हो जाता है। इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि ऐसा होने पर उसके मन में स्वतः ही काम रूपी विकार जाग्रत हो जाता है जिसके दुष्प्रभाववश उसके लिए क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसे महाबली विकारों से बचना असम्भव हो जाता है। तभी तो उसकी पकड़ से संतोष, धैर्य छूट जाता है और उसके लिए इंसानियत अनुरूप सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर प्रशस्त रहना नामुमकिन हो जाता है। फिर जैसे ही वह संकल्पी आत्मीयतायुक्त भाव-स्वभाव छोड़, क्षणभंगुर शारीरिक सुख प्रदान करने वाले भाव-स्वभाव अपनाता जाता है वैसे-वैसे उसके जीवन में कष्ट-क्लेशों का तांता लग जाता है। इस

प्रकार विपत्तियों में ग्रस्त अस्थिर बुद्धि इंसान के मन में संकल्प-विकल्प की तरंगें उठने लगती हैं और वह मानसिक तौर पर उन्हीं में उलझ कर रह जाता है क्योंकि समय पर उचित निश्चय ले पाना उसके बस की बात नहीं रहती। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि किसी कृति की रचना से पहले उसके पूरे रूप का मानसिक प्रत्यक्षीकरण करना उसके लिए असम्भव हो जाता है। इस विषय में सजनों संकल्प को अपने जीवन का मूल आधार बनाने की जो भूल हम से अब हो चुकी है उसको शास्त्रविहित् युक्ति अनुसार सुधार कर, शब्द ब्रह्म विचारों को जीवन का मूल आधार बनाने में ही अपनी शान समझो। इस हेतु समभाव समदृष्टि की युक्ति अपनाओ और संकल्प कुसंगी को संगी बना सजन पुरुष बन जाओ। ए विध् स्थिर बुद्धि हो संकल्प पर पूरी तरह से फ़तह पा, अपना मन संकल्प रहित अवस्था में साध लो। सजनों हमारे अन्दर भी ऐसा योग्य सजन पुरुष बनने की भरसक भावना जाग्रत हो उसके लिए हमें सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ संकल्प का इतिहास बताते हुए कह रहा है किः-

'सतवस्तु में संकल्प नहीं था, लेकिन त्रेते में स्वभावों में तबदीली होने के कारण संकल्प पैदा हो गया तो उसके साथ-साथ झुखना शुरू और रोना उग पड़ा।

द्वापर युग में स्वभावों में तबदीली होने के कारण संकल्प बढ़ना शुरू हो जाता है, इसलिए झुखना अधिक होता है और रोना बढ़ जाता है।

सजन कलुकाल के युग में संकल्प बिल्कुल बढ़ गया और झुखना ही झुखना और रोना ही रोना हद से ज्यादा हो गया।

अब कलुकाल के बाद चुरासी के अन्त में सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की सौखी युक्ति के अनुसार झुखना हट गया और रोना बन्द हो जाता है। सजनों हमारे पास पहले बाल-अवस्था की युक्ति थी, अब हमें युवा-अवस्था की युक्ति मिली है। इस युक्ति के वर्ताव से ही हमने संकल्प पर फतह पाकर रोना बन्द करना है। युग युग में रोना बढ़ता है, सतवस्तु में रोना मिटता है।

रोना कैसे मिटता है, सजनों सुनो
विचार, सत्य जबान, एक दृष्टि, एकता और एक अवस्था।।

सजनों अगर यह सब सुनने-समझने के पश्चात्, झुखने-रोने के स्वभाव से मुक्ति पा, एक निगाह एक दृष्टि द्वारा, जनचर बनचर, जड़ चेतन में एक दर्शन का अनुभव करते हुए, सर्व राम रूप देखना चाहते हो तो विगत इतिहास से सीख लो और ऐसा पराक्रम दिखाओ कि समय रहते ही आपका मन संकल्प रहित अवस्था को प्राप्त हो जाए। ए विध् आप निज ब्रह्म स्वरूप को पहचान जन्म की बाजी जीत लो। सजनों जानते हो यदि यह कमाल कर दिखलाया तो क्या कह उठोगेः-

निश्चित ही फिर कह उठोगेः-

सजनों झुखना ही साडा रोना सी
ओ झुखना साडा मुक ही गया
ओ रोना साडा हट ही गया
ओ झुखना साडा मुक ही गया
ओ रोना साडा हट ही गया
ओ श्री राम रूप है सारी नगरी
ओ जनचर बनचर जड़ चेतन कुल सारी सगली
ओ जनचर बनचर जड़ चेतन कुल सारी सगली
फिर एक निगाह ओ एक दृष्टि,ओ एक दृष्टि ओ एक दर्शन
जनचर, बनचर ओ जड़ चेतन, ओ एक दर्शन ओ एक दर्शन।

सजनों इस प्रयोजन में कैसे सफल होना है इस विषय में आगामी सप्ताह आपको विस्तार से समझाया जाएगा।

दिनाँक 8 मार्च 2020 का सबक़

बुधवार का तीसरा बोर्ड (भाग-9)
(मैं ब्रह्म हूँ)

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों जैसा कि हम सब जानते ही हैं कि हम आत्मविस्मृत कलुकालवासियों को पुनः आत्मस्मृति में लाने के लिए, सबसे पहले श्री साजन जी ने एक विचारक की तरह सोच समझ कर 'ईश्वर है अपना आप', अर्थात् 'मैं ब्रह्म हूँ', का निश्चयात्मक बोध अर्थात् तत्त्व-निर्णय लेने का आवाहन दिया और फिर शब्द ब्रह्म यानि मूलमंत्र आद् अक्षर के संग हमारे ख़्याल का नाता जोड़ दिया ताकि हम सहज ही ब्रह्म विद्या ग्रहण कर ब्रह्मज्ञानी बन जाएं। तत्पश्चात् इस शुभ कार्य की निर्विघ्न समयबद्ध सफलता प्राप्ति हेतु उन्होंने हमें शास्त्रविहित् क्रमबद्ध अचूक युक्तियाँ भी प्रदान की ताकि हमारे अन्दर ब्रह्म को जानने की जिज्ञासा पैदा हो और हम विधिपूर्वक ब्रह्म के साक्षात्कार की साधना करते हुए ब्रह्मज्ञान का तेज धारण कर ब्रह्म होने का भाव अपना लें।

इस संदर्भ में सजनों हम मानते हैं कि आप में से जिन्होंने ने भी वचनों की पालना करते हुए ऐसा परम पुरुषार्थ दिखाया होगा और ओ३म् आद् अक्षर की

मंत्रणा अनुसार 'मैं ब्रह्म हूँ' का भाव अपने हृदय में स्थिर कर लिया होगा, केवल वे विचारशील इंसान ही अब स्वार्थपरता का अविचारयुक्त अवलड़ा रास्ता छोड़, ब्रह्म कर्म करने में आनन्द का अनुभव करते हुए, सदा प्रसन्नचित्त बने रहेंगे।

इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों हम सबके लिए भी बनता है कि शब्द ब्रह्म को ही ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने का एकमात्र साधन मानें और शब्द ब्रह्म विचारों अनुसार ब्रह्ममय हो, इस ब्रह्मांड में अकर्त्ता भाव से विचरते हुए, मौत के भय से मुक्त अपने यथार्थ नित्य अजर अमर स्वरूप में स्थिर बने रहें। सजनों जानो जो सजन केवल पाँच साल इस प्रकार ब्रह्म तत्त्व की भावना से युक्त होकर इस जगत की हर शै को ब्रह्म के समान देखता है, उसे सर्व-सर्व अपने असलीयत ब्रह्म स्वरूप की ही प्रतीति होती है और वह सहसा ही हर तरफ देखते हुए कह उठता है:-

मैं ब्रह्म हूँ

ऊँ

ब्रह्म पृथ्वी और ब्रह्म ही ओ आकाश हूँ,
ब्रह्म सूरज और चाँद ही ओ प्रकाश हूँ।

ब्रह्म जल और ब्रह्म थल रिहा ओ भास हूँ,
ब्रह्म पवन और पानी में ही ओ निवास हूँ।

ब्रह्म जनचर और ब्रह्म ही ओ बनचर हूँ,
ब्रह्म जड़ और चेतन में ब्रह्म ही ओ निवास हूँ।

ब्रह्म नौखण्ड और ब्रह्म ही ओ सारा ब्रह्मांड हूँ,
ब्रह्म सर्गुण ब्रह्म निर्गुण और ब्रह्म ही ओ इतिहास हूँ।

ब्रह्म सप्तद्वीप और ब्रह्म ही ओ भूमण्डल हूँ
ब्रह्म गगन मण्डल में बिन सूरजों ओ प्रकाश हूँ।

ब्रह्म रूप रंग न रेखा कोई और ब्रह्म ही ओ आद अंत हूँ,
ब्रह्म जगत और जहान सारा ब्रह्म ही ओ प्रकाश हूँ।

सजनों जानो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार यह है पाँच साल गुढ़ाई। फिर अनेकों का वह एक हुआ। जानो ऐसा आत्मसंतोषी इंसान जगत में नीतियों के अनुसार विचरता भी है और नहीं भी विचरता। तात्पर्य यह है कि ऐसा सर्वश्रेष्ठ इंसान फिर ब्रह्म पदवी ओ पा के कर्त्ता भी आप हुआ और अकर्त्ता भी आप हुआ।

यह है सजनों सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि। अंत में सजनों जानो कि अब तक जो सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी के मुख की बाल अवस्था व युवावस्था की युक्ति बताई गई है उसका महत्त्व आगामी कक्षा में बताया जाएगा।

दिनाँक 15 मार्च 2020 का सबक़

बुधवार का तीसरा बोर्ड (भाग-10)
(बाल अवस्था व युवावस्था की युक्ति का महत्त्व)

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों अब तक बुधवार के बोर्डों अनुसार जो हमने पढ़ा वह सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित शब्द ब्रह्म विचारों का केवल ज्ञान प्राप्त करने की ही बात नहीं है वरन् उनके अर्थों और तात्पर्य को भी जानने की अनमोल बात है। जानो विधिवत् अध्ययन द्वारा ऐसा सुनिश्चित करने पर ही हम इस प्राप्त अलौकिक ज्ञान का सही ढंग से उच्चारण करते हुए अन्य भ्रमित बुद्धि इंसानों तक भी इसे पहुँचा उन्हें भी इस द्वारा लाभान्वित करने का परोपकार सहजता से कमा सकते हैं। हम ऐसे परोपकार प्रवृत्ति इंसान बन सकें उसके लिए महाबीर जी के वचनानुसार हमें न केवल सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ को अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य की प्राप्ति हेतु श्रद्धापूर्वक नियमित ढंग से नित्य पढ़ना है वरन् उन शास्त्रविदित शब्द ब्रह्म विचारों को धारण कर विशुद्धता से अपने व्यावहारिक रूप में ढालना भी है।

इस संदर्भ में हमें याद रखना है कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ की इस प्रकार पठन क्रिया करते हुए उसमें विदित विचारों अनुरूप जीवनयापन करने वाले को

यह मायावी संसार किसी विध् भी अपने जाल में उलझा जीवन विजयी होने से नहीं रोक सकता। सजनों जानो यह अपने आप में संसार से सम्बन्ध जोड़ भ्रष्ट व भ्रमित ज्ञान प्राप्त करने के स्थान पर प्रभु संग अपना ख़्याल-ध्यान जोड़ वहीं से विशुद्ध ज्ञान प्राप्त कर आत्मतुष्ट रहने जैसी पुण्य बात है। जानो इस पुरुषार्थ द्वारा घर का वातावरण भी आत्मिक ज्ञान अनुकूल बन जाता है। इसलिए तो सबको बार-बार कहा जाता है कि अपने जीवन के परम लक्ष्य को इसी जीवन में प्राप्त करने हेतु सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ पढ़ो व पढ़ाओ ताकि इस संसार का हर जीव इसमें विदित ज्ञान का लाभ उठा अपना उद्धार करने में समर्थ हो सके व सतवस्तु में आ अपना जीवन सार्थक कर सके।

इस तथ्य को दृष्टिगत रखकर ही सजनों आप सजनों को अनेकों बार यह भी कहा जा चुका है कि घर का सब कार्यव्यवहार करते हुए मूलमंत्र आद् अक्षर को, मन ही मन घड़ी की टक-टक की तरह बार-बार चलाने का अभ्यास करो और इस अभ्यास द्वारा ख़्याल को महाराज जी के चरण कमल संग जोड़ अपनी सुरत कंचन कर लो। तत्पश्चात् फिर जो भी शब्द गुरु पढ़ाए, एक विवेकशील इंसान की तरह वैसा ही करना सुनिश्चित करो और निश्चिंतता से आनन्दमय जीवन बिताओ।

सजनों यह है दो साल पढ़ाई। सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ अनुसार इस पढ़ाई को सम्पन्न कर आत्मज्ञानी बनने के पश्चात् पाँच साल गुढ़ाई करने का विधान है ताकि हम मानव रूप में, बाल्यावस्था में ही अपनी निजी विशेषता और धर्म को समुचित ढंग से जान, परमार्थ का गूढ़ अर्थ समझ जाएं। जानो हमारे लिए समयबद्ध ऐसा सुनिश्चित करना लाभप्रद व प्रशंसनीय है क्योंकि ऐसा पुरुषार्थ दिखाकर ही हम अपने आप को विधिवत् सँवार व सुधार पुनः इंसानियत में आ सकते हैं। अतैव इस महान उपलब्धि को दृष्टिगत रखते हुए सजनों सदा याद रखो कि अच्छा इंसान बनने के प्रति आपका यत्न अब किसी विध् भी न हारे क्योंकि यह हार अपने आप में जीवन की बाजी हारने जैसी बुरी बात होगी।

स्पष्ट है सजनों एक अच्छा इंसान बनने हेतु कुदरती नियम अनुसार प्रत्येक

मानव को भक्ति भाव से आत्मिक ज्ञान प्राप्त कर न केवल बौद्धिक रूप से शक्तिशाली होना होता है अपितु उस प्राप्त ज्ञान को पूर्ण श्रद्धा व विश्वास से व्यवहार में भी लाना होता है। ऐसा करने पर ही इंसान संसारी फ़र्ज़ अदा हँस कर करते हुए स्थिरता से परमार्थ के रास्ते पर प्रशस्त रह सकता है। हम भी सजनों ऐसे नेक इंसान बन सत्य धर्म के मार्ग पर निष्कामता से प्रशस्त हो सकें इस हेतु सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित बोर्डों के अंतर्गत भी दो प्रकार के भक्ति भाव यथा बाल्यावस्था के व युवावस्था के भक्ति भाव का वर्णन किया गया है। सजनों इन भक्ति भावों को हमने अपनाकर, अमली जामा कैसे पहनाना है यानि व्यवहार में कैसे लाना है, आओ अब उसको ध्यानपूर्वक समझते हैंः-

इस हेतु सर्वप्रथम अभी जो आपने जाना उस अनुसार यह बताओ कि भक्ति भाव कितने प्रकार का होता है?

दो प्रकार का।

कौन-कौन सा?

बाल अवस्था का भक्ति भाव, युवावस्था का भक्ति भाव।

यहाँ ध्यान से समझो कि दोनों प्रकारों के वर्णित भक्ति-भावों में भक्ति शब्द सांझा है। क्या ऐसा ही है जी ?

हाँ जी।

तो आओ फिर पहले भक्ति शब्द का अर्थ जानने के साथ-साथ जीवन पर पड़ने वाला उसका सकारात्मक महत्त्व भी जानते हैं। ऐसा इसलिए भी कह रहे हैं क्योंकि अगर भक्ति के अर्थ को जीवन का अर्थ सिद्ध करने का आधार बना लिया तो हममें से किसी के लिए भी समय अनुसार बाल्यावस्था व युवावस्था का भक्ति भाव अपनाना कठिन नहीं होगा।

अब जानो कि भक्ति का अर्थ है सेवा भाव से एक भक्त की तरह, श्रद्धा तथा

अनुराग से युक्त होकर, भक्त वत्सल परमात्मा की उपासना या आराधना करना। इस तरह हम कह सकते हैं कि भक्ति भाव में प्रवृत्त हो जो अन्य विषयों व आजकल प्रचलित मनगढ़ंत भक्ति भावों के स्थान पर, अपने वास्तविक ब्रह्म स्वरूप का बोध करने हेतु ध्यान पूजन आदि द्वारा ब्रह्मोपासना में लीन रहना सर्वोत्तम समझता है, केवल वह परमात्मा की भक्ति के स्वरूप को जानने वाला समझदार साधक ही भक्तों पर कृपा करने वाले परमात्मा को प्रिय लगता है। सजनों ऐसा मंगलकारी होने पर स्वतः ही उस प्रसन्नचित्त इंसान के मन में भक्ति का भाव स्थित हो जाता है। फलतः भक्ति की इस अखंड चित्तवृत्ति के पनपते ही ईश्वर-दर्शन या मोक्ष-प्राप्ति का वह साधन-पथ जिसमें परमात्मा के प्रति भक्ति की प्रधानता होती है, वह भक्ति मार्ग स्पष्ट हो जाता है। तदुपरांत संसार में बँटा हुआ ख़्याल एकाग्रता से अपने असली घर में स्थिर हो जाता है जो अपने आप में भक्ति रत हो परमानन्द प्राप्त करने जैसी शुभ बात होती है। जानो अन्दरूनी वृत्ति में ऐसा होने पर इंसान आत्मतुष्ट हो इतना रोमांचित हो उठता है कि फिर तो वह अन्दर-बाहर, इधर-उधर, जिधर-किधर भी देखता है, उसे सब ब्रह्ममय ही प्रतीत होता है। परिणामतः ऐसा वैष्णव जन अपनी वास्तविकता को जान व शब्द ब्रह्म विचारों अनुरूप निष्पाप जीवन जीते हुए भक्त शिरोमणि कहलाता है और श्रेष्ठता का प्रतीक बन जन्म की बाजी जीत जाता है।

सजनों ऊपरलिखित तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए हमें भी जो अब तक बताया गया है तद्नुरूप भक्ति भाव से अपने यथार्थ ज्योति स्वरूप को जान, ब्रह्म भाव अनुसार यथार्थतया इस जगत में निर्लेप होकर विचरने योग्य बनने हेतु अपनी अक्ल को टिकाणे रख सदा सुमति में बने रहना होगा। जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही हम सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी द्वारा प्रदत्त यह जो युक्ति बाल अवस्था की और युवावस्था की है उसके जीवनोपयोगी विशाल महत्त्व को सही मायने में जान पाएंगे। ए विध् बाहर के चारों धाम रूपी तीर्थों में भटकने के स्थान पर अब तक पढ़े व समझे शब्द ब्रह्म विचारों को अन्दर धारण करके इस शरीर को पवित्र कर पाएंगे और खालस सोना होकर प्रभु नाल प्रभु हो जाएंगे।

सजनों हमें सुनिश्चित रूप से ऐसा शुभ परिणाम प्राप्त हो ही हो, उसके लिए ही तो भक्त वत्सल परमात्मा ने हम सब सजनों के लिए गृहस्थ आश्रम में रहते हुए यह युक्ति वाले बोर्ड बुध के बुधवार जिस समय वक्त मिले एकाग्रचित्त होकर ध्यानपूर्वक पढ़ने व वर्त वर्ताव में लाने का आदेश दिया है ताकि हम शास्त्रविहित् वचनों पर चलते हुए एकता दिखाएं और योग्य सुपुत्र बन महाराज जी के साथ मेल खा जाएं।

सजनों सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के द्वारे पर होने के नाते हमारे जीवन का अंत परिणाम मोक्ष ही हो उसके लिए आओ अब निर्धारित आदेश अनुसार बाल्य अवस्था और युवावस्था के भक्ति भाव का हमारे जीवन में वास्तविक रूप से कितना महान महत्त्व है, अब उसके लिए क्रमशः जानते हैं कि बाल अवस्था का भक्ति भाव किस प्रकार का होता हैः-

सजनों यह तो सर्व विदित सत्य है कि जब आत्मा एक शरीरधारी अबोध बालक का रूप धार इस मिथ्या संसार में जन्म लेती है तो उस नादान प्राणी को ईश्वर रचित इस मायावी जगत का किसी प्रकार से कुछ भी ज्ञान नहीं होता इसलिए वह बालक पैदा होने के बाद अज्ञानियों जैसी हरकतें करता है। इस विषय में जब तक माता-पिता, शिक्षक व समाज, उसकी बढ़ती आयु के अनुसार उसे शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास के उद्देश्य से, पर्याप्त आत्मिक ज्ञान प्रदान करने की क्रिया समुचित ढंग से सम्पन्न नहीं करते तब तक वह बालक अपने जीवन में, जो भी अन्यों को बोलते हुए व करते हुए देखता है केवल उतना ही अपना पाता है। ऐसी परिस्थिति में जगत की वास्तविकता को समझना तो दूर की बात रही वह अपने यथार्थ स्वरूप को भी नहीं समझ पाता। यही कारण है कि वह अपने वास्तविक स्वरूप को भूलता-भूलता एक दिन इस तरह आत्मविस्मृत हो जाता है कि उसे यह भी याद नहीं रहता कि 'मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं'।

तभी तो ऐसे अज्ञानमय वातावरण में वह किसी प्रकार से भी जीव, ब्रह्म के इस

सांसारिक खेल को समझने में असमर्थ हो एकता, एक अवस्था में बने रहने के स्थान पर द्वि-द्वेष के भाव से ग्रस्त हो जाता है। परिणामतः उसकी सुरत सांसारिक फुरनों में इस तरह जकड़ी जाती है कि वह अचेतन अवस्था को प्राप्त हो आत्मानंद का अनुभव ही नहीं कर पाता। यह होता है सांसारिक पालन कर्त्ताओं की भूल के दुष्प्रभाव से अपराध प्रवृत्ति में ढल अपने जीवन को अनेकानेक संकटों में उलझा बैठना और अर्थहीन दुःख भरी जीवन दशा को प्राप्त होना। सजनों जानो कि जिस बच्चे का इस प्रकार शास्त्रविहित् विचारों के विरुद्ध मानसिक विकास हुआ हो वह भ्रमित व भ्रष्टबुद्धि कदाचित् स्वार्थपरता का भाव त्याग, परमार्थ वृत्ति में ढलने का साहस नहीं दिखा सकता।

हमारे अपनों व अन्य किसी के साथ भी इस भूल के कारण ऐसा बुरा अनर्थ न हो उसके लिए ही औषधि रूप में बाल अवस्था का भक्ति भाव सुदृढ़ता से अपनाने के साथ-साथ शास्त्रविहित् समुचित परहेज रखने का कुदरती विधान है ताकि बच्चा व्यस्क होने से पहले अपने यथार्थ स्वाभाविक स्वरूप को जान-पहचान उन आत्मिक गुणों को बाल अवस्था की भक्ति की शक्ति से आत्मसात् करने में सक्षम हो जाए।

इस कल्याणकारी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए हमें सांसारिक फुरनों से आजाद रह, संकल्प रहित जीवन व्यतीत करने के लिए, 'पाठ की विधि' नामक पुस्तक में वर्णित, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी प्रदत्त युक्ति अनुसार, सत्य-धर्म का भक्ति भाव अपना कर, शक्तिशाली होकर निष्काम रास्ते पर सुदृढ़ता से सदा बने रहना होगा ताकि किसी प्रकार से भी हमारी वृत्ति विकृत न हो और हम आत्मस्मृति में एक रस बने रह अपने जीवन का प्रयोजन इसी जीवन में सिद्ध करने में सफल हो जाएं।

याद रखो गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने से पूर्व इस बाल्यावस्था की भक्ति की शास्त्र वर्णित युक्ति को एक साधक की भांति यथा अपनाने का पुरुषार्थ दिखाने पर ही हम मूलमंत्र आद् अक्षर के विधिवत् जाप द्वारा अपनी ब्रह्म सत्ता

को ग्रहण कर, अपने अंधकारमय हृदय को पुनः प्रकाशित कर सकते हैं। सजनों जानो कि इस क्रिया द्वारा जैसे ही ब्रह्म सत्ता का निर्मल प्रवाह अविरल धारा की तरह हृदय को प्राप्त होना आरम्भ हो जाएगा तो स्वतः ही मस्तक की ताकी खुल जाएगी और ए विध् आत्मिक ज्ञान की प्राप्ति होनी आरम्भ हो जाएगी। ऐसा होने पर फिर जैसे-जैसे हृदय विदित, कुदरती वेद-शास्त्रों में वर्णित जीवन कला का भान होता जाएगा वैसे-वैसे जितेन्द्रिय बनते जाओगे और ब्रह्म के साक्षात्कार की साधना करने की चाहत बढ़ती जाएगी। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों हर तरफ से अपना ध्यान हटा गृहस्थ होने से पहले ही यानि अविवाहित जीवन में अपने इस उच्च उद्देश्य को सिद्ध करने में रत हो जाओ। याद रखो इस हितकर पुरुषार्थ द्वारा जो भी इंसान उस ब्रह्म सत्ता के अविरल निर्मल सशक्त धारा प्रवाह में गुंजायमान अनहद नाद यानि मूलमंत्र आद् अक्षर की आनन्दप्रदायक ध्वनि के साथ अपनी सुरत को अखंडता से जोड़ लेगा वह बोधी स्वतः ही काम पर फतह पा, अपने हृदय में ब्रह्म भाव धारण कर लेगा।

यहाँ यह भी स्पष्ट कर दें कि जब परम पुरुषार्थ द्वारा किसी ईश्वर भक्त के मन में यह सर्वोत्तम ब्रह्म भाव स्थित हो जाता है तो फिर उसे, उस विशुद्ध भाव को अपने स्वभाव के अंतर्गत कर, स्थिर बुद्धि होने के लिए बाल अवस्था की नाम चलाने व ध्यान लगाने वाली नचनी-टपनी भक्ति छोड़कर, युवावस्था की भक्ति अपनानी होती है ताकि उसके लिए समभाव-समदृष्टि की युक्ति पर स्थिरता से बने रह, परस्पर सजन भाव का विचारसंगत सत्यता से वर्त-वर्ताव करना सहज हो जाए। अन्य शब्दों में उसके लिए एक दृष्टि हो एकता, एक अवस्था में आ 'मैं ब्रह्म हूँ', इस सत्य को आत्मसात् कर, ब्रह्म नाम कहा विश्राम को पाना सरल हो जाए। इस विषय में सजनों जानो कि ब्रह्म नाम कहाकर ही ताकतवर होकर अपने जीवन के समय काल का उत्तम तरीके से प्रयोग करते हुए, परोपकार कमा सकोगे और परमात्मा नाम कहा सकोगे। अंत में उपरोक्त महत्ता के दृष्टिगत हम तो यही कहना चाहेंगे कि ऐसे बनो हाँ ऐसे बनो और ऐसे बन कर श्रेष्ठ मानव कहलाओ।

नोटः- इस संदर्भ में सजनों यह बात सदा याद रखना कि बुधवार के बोर्डों में विदित कुदरती सूक्ष्म ज्ञान के बारे में जो भी विस्तृत रूप से बताने का प्रयत्न किया गया उसमें कोई भूल भी हो सकती है इसलिए हमारी सब सजनों से प्रार्थना है कि जो भी धारण करें वह बोर्डों में वर्णित ज्ञान को ही समझदारी से धारण करें। ऐसा सुनिश्चित करने के पश्चात् सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में उस ज्ञान का अवस्था अनुसार विधिवत् प्रयोग करने की युक्तियाँ लिखी हुई हैं केवल उन्हीं को ही अपने स्वभाव के अंतर्गत कर वांछित लाभ उठाएं। इस प्रकार समुचित आत्मज्ञानी बन जीवन की बाजी जीत लें।

दिनाँक 22 मार्च 2020 का सबक़

शब्द शक्ति

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा हैः-

स्वास स्वास ए नाम ध्यावना, स्वास निकलया फेर नहीं आवना।।
धुन्नि रट लै तूं सिया राम नाम दी।

निःसंदेह सजनों उपरोक्त पंक्तियां हर मानव को सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति अनुसार, श्वास-श्वास नाम ध्याने का व इस क्रिया द्वारा उत्पन्न ध्वनि की रटन लगाकर अपने मस्तक की ताकी खोल, हर श्वास अपने मन को परमेश्वर में लीन रखते हुए, जीवन बनाने का आवाहन दे रही हैं। जगतहितकारी परमेश्वर के इस आवाहन के प्रति पूर्ण श्रद्धा व विश्वास रखते हुए हम सब निश्चिंतता व सतर्कता से आगे बढ़ें और साकार व निराकार ब्रह्म की एकरूपता पहचान ब्रह्म नाल ब्रह्म हो जाएँ, इस हेतु आओ अब ध्यान से आज की बातचीत सुनते हैं।

इस संदर्भ में सजनों जानो कि श्वास के प्रति आघात में उच्चरित ध्वनि इकाई यानि अविनाशी अक्षर, इंसान की मूल अव्यक्त प्रकृति का प्रतीक होता है। इसीलिए इस नित्य अक्षर को आत्मा-परमात्मा कहो या फिर जीव के मोक्ष का

प्रतीक कहो एक ही बात है। यही नहीं इस कुदरती अर्थयुक्त ध्वनि इकाई या शब्द में ही मानव के लिए मानवता अनुसार निष्पाप जीवनयापन करने का सत्यज्ञान रूप में संकेत भी सन्निहित होता है इसलिए इसे आत्मस्वरूप का दर्शन कराने वाली मानव हितकारी सार्थक ध्वनि भी कहते हैं। याद रखो इस सार्थक ध्वनि से प्राप्त होने वाले शब्द ब्रह्म विचारों पर जो मानव स्थिरता से बने रहने का पुरुषार्थ दिखाने के प्रति तन-मन-धन वारने से भी नहीं सकुचाता वह गुण, ज्ञान के रूप में अंतर्निहित अपनी वास्तविक शक्ति को पहचान जाता है। इस प्रकार वह शक्तिशाली इंसान ही शब्दाकार अर्थात् इस सृष्टि के रचनाकार के साथ अपने ख़्याल को अफुरता व अखंडता से जोड़े रख पाने में सक्षम हो जाता है और उसकी इस अद्भुत मायावी सृष्टि की रमज़ जान, सब कुछ परमात्मा के निमित्त अकर्त्ता भाव से करते हुए, इस काल्पनिक जगत से आजाद रह, अंत विश्राम को पा जाता है।

इस महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए ही सजनों मूल मंत्र आद् अक्षर को परिपूर्ण आत्मिक ज्ञान के स्रोत रूप में गुरु मानने का कुदरती विधान है ताकि इस मूल मंत्र अर्थात् शब्द ब्रह्म को गुरु मानने वाला इंसान, दीक्षा रूप में इस द्वारा प्रदान किए गए ब्रह्म शब्द विचारों को धारण कर नीतिबद्ध अपनी वास्तविक प्रकृति में सदैव स्थिरता से बना रह सके। इस प्रकार वह जगत में विचारयुक्त होकर निर्लिप्तता व निर्विकारता से विचरने के योग्य बन, धर्मसंगत निष्काम कर्म करते हुए, अक्षय कीर्ति को प्राप्त हो जाए।

इस बात से सजनों स्पष्ट हो जाता है कि जो भी जीव मानव रूप में मूलमंत्र आद् अक्षर को अपने ख़्याल में रमा अपने हर श्वास के आघात में उच्चरित ध्वनि इकाई का यथार्थता बोध करने के योग्य बन जाता है वह ही परमधाम जैसे दिव्य स्थान को प्राप्त हो विश्राम को पाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि सुरत-शब्द के योग की इस आनन्दमयी अवस्था में उस योगी के सांसारिक बंधन स्वतः ही ढीले पड़ते जाते हैं और उसे अलौकिक शक्तियाँ प्राप्त होती जाती हैं। यहाँ तक कि मन और शरीर से उसका सम्बन्ध छूट जाता है और वह

परमानन्द में मग्न होकर, परमात्मा के उस शुद्ध ब्रह्म स्वरूप को सर्वत्र देखने लगता है, जिसमें जगत प्रतिष्ठित है। इस प्रकार उसके लिए आत्मिक ज्ञान को धारण कर सदा आत्मचेतना में बने रह, अपने मन-वचन-कर्म द्वारा आत्मिक शक्ति को यथा अभिव्यक्त करना सहज हो जाता है। तभी तो वह निर्विकारी जिस किसी के समक्ष भी अपने मन की सहज प्रवृत्तियों और भावनाओं को प्रकट करता है वह स्वतः ही आनन्द से विभोर हो आत्मस्वरूप का बोध करने हेतु लालायित हो जाता है। अन्य शब्दों में कहें तो ऐसा निपुण मानव सब के समक्ष अपने वास्तविक पावन चारित्रिक स्वरूप का सजीवता से वर्णन कर पाता है और सम्पर्क में आने वाले कुमार्ग पर चढ़े हुए मानवों को भी पुनः सद्मार्ग पर लाने जैसा परोपकार कमा पाता है।

इस संदर्भ में याद रखो कि अगर हम भी इस सर्वोत्तम अवस्था को प्राप्त होना चाहते हैं तो आत्मज्ञानी बनने के लिए हमें स्थाई रूप से अपने ख़्याल की मूलमंत्र आद् अक्षर यानि शब्द गुरु से भेंट करानी ही होगी। जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही हम जीव-ब्रह्म के खेल की रमज़ भली-भांति जान सक्षमता से जीवन की बाजी जीत सकेंगे। अन्यथा इसके विपरीत ऐसा करने के प्रति लापरवाही दिखाने पर भौतिकवाद में उलझ सदा अशिक्षित ही कहलायेंगे और मनमत अनुसार बौद्धिक खेल खेलते हुए निरर्थक शब्द जाल में फँस संकल्प-विकल्पों का शिकार हो आवागमन के दुःखद चक्रव्यूह में फँस जाएंगे।

हमारे साथ सजनों ऐसा न हो इस हेतु सजनों जानो कि कुदरत ने हर मानव के हृदय में वेद विदित के रूप में सार्थक शब्द कोश सन्निहित कर रखा है ताकि वह सर्वप्रथम सजन श्री शहनशाह महाबीर जी की युक्ति अनुसार अपनी सुरत को उन शब्दों संग जोड़ उन्हें पहचाने और फिर उनके अर्थों को समझते हुए अपने जीवन-खेल को सुचारु ढंग से खेलते हुए अपने अलौकिक सौन्दर्य को प्राप्त कर ले। जानो जो ऐसा पराक्रम दर्शा पाता है वह ही अपने ख़्याल को सुदृढ़ता से सार्थक शब्दबद्ध रखते हुए सहजता व सरलता से शब्द ब्रह्म यानि शब्द-रूप में ब्रह्मज्ञान का बोध कर आध्यात्मिक ज्ञानी बन पाता है। ऐसी महान

अवस्था को प्राप्त होने पर वह ब्रह्ममय खुद ही वेद कहो या प्रणव मंत्र ओ३म् का सार जान पाता है और ए विध् परमेश्वर नाम कहाता है।

इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों हमारे लिए बनता है कि हम अपने संग-संग अपने परिवारजनों व सगे-सम्बंधियों को भी चार वेद, छः शास्त्र में वर्णित मूलमंत्र आद् अक्षर की महत्ता से परिचित करा, उन्हें परमार्थ की भाषा पढ़ने व समझने में यानि कुदरती आए हुए शास्त्रविहित् शब्द ब्रह्म विचारों को धारण कर तद्नुसार अपनी मूल प्रकृति में ढालने में निपुण बनाएँ व ए विध् उन्हें परमार्थ के मार्ग पर प्रशस्त कर स्वार्थपरता की गर्त में गिर दुःखमय जीवन जीने से बचा लें। जानो यह उनके हृदय को अक्षराक्षर आत्मिक ज्ञान से सींचते हुए, उच्च व स्थिर बुद्धि बनाने की बात है। निःसंदेह इसी के द्वारा वह अपना सर्वांगीण अक्षय विकास कर पाने की क्षमता विकसित कर सकेंगे और उनके अंतर्घट में सतयुग की संस्कृति का उद्भव होगा। इस तरह इस अक्षयनिधि को प्राप्त कर उन अदम्य पुरुषार्थ दिखाने वाले सौभाग्यशाली सुपात्र इंसानों के लिए परमधाम पहुँच जन्म-मरण के चक्कर से मुक्ति पाना सहज हो जाएगा।

सजनों इस उत्तम उपलब्धि के दृष्टिगत सतवस्तु के कुदरती वचनों की पालना करते हुए परमार्थ के रास्ते पर प्रशस्त होने की हिम्मत दिखाओ और प्रत्येक श्वास के हर आघात से उच्चरित होने वाली ध्वनि इकाई को ध्यानपूर्वक सुनकर उसमें निहित जीवनप्रदायक संकेत को समझ अपने जीवन के महान लक्ष्य को बिन औखियाईयों बिन खेचलों भेद, यह मानव जीवन सफल बना लो।

अंत में सजनों यह सब जानने-समझने के पश्चात् अगर दिल से चाहते हो कि जीवन का परिणाम ऐसा ही मंगलकारी प्राप्त हो तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में जिस प्रकार से शब्द ब्रह्म विचार विदित हैं उनका यथातथ्य क्रमानुसार ठीक उसी प्रकार से ध्यानपूर्वक अनुसरण करना अपने स्वभाव के अंतर्गत करो। ए विध इस क्रिया को करते हुए उन सार्थक शब्दों की वास्तविक जीवनोपयोगी शक्ति यानि शब्दों के अर्थों की प्रतीति कराने वाली वृत्ति में ढल जाओ। यकीन मानो इस प्रयत्न द्वारा आत्मिक ज्ञान को समुचित ढंग से व्यवहार में लाना

सहज हो जाएगा और अंतर्घट में ऐसे आनन्द का अनुभव होगा जिसका आप वर्णन भी नहीं कर सकोगे।

सारतः सजनों जानो कि अगर आपने इस सर्वहितकारी अनुशासन को स्वीकार लिया और उस पर जीवन की हर परिस्थिति में स्थिर बने रहने के प्रति दृढ़ संकल्प हो गए तो स्वतः ही सभी मानसिक दोषों से मुक्त हो इस तरह स्थिर बुद्धि हो जाओगे कि आपके लिए समभाव नजरों में कर समदर्शिता अनुरूप परस्पर सजन भाव का व्यवहार करना सहज हो जाएगा जो अपने आप में वैष्णव जन बनने की बात होगी।

दिनाँक 29 मार्च 2020 का सबक़

शब्द ब्रह्म विचारों को धारण करने का महत्त्व

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ द्वारा हमें बारम्बार शास्त्रविहित् शब्द ब्रह्म विचारों को हृदय में धारण करने का आवाहन दिया जा रहा है। जानो शब्द ब्रह्म विचार वे सार्थक शब्द हैं जिनके प्रभाव से हमारी अन्दरूनी व बैहरूनी दोनों ही वृत्तियाँ सकारात्मक वातावरण में सहजता से सधी रह सकती हैं। इसके विपरीत किसी भी प्रकार का मनगढ़ंत निरर्थक शब्द ज्ञान ग्रहण करना नकारात्मक वातावरण के निर्माण का हेतु होता है। जानो शब्द ब्रह्म विचारों को ग्रहण करने पर मानव उच्च बुद्धि, उच्च ख़्याल हो आत्मनिर्भर हो जाता है व जीवन में जो भी करता है, वह आत्मविश्वास के साथ सार्थक ही करता है। इसके विपरीत जैसा कि हम पूर्वतः जान ही चुके हैं कि निरर्थक शब्दों को ग्रहण करना भ्रमित व भ्रष्ट बुद्धि हो अधम अवस्था को प्राप्त होने जैसी निकृष्ट बात होती है। हमसे ऐसी भूल न हो उसके लिए सजनों सार्थक व निरर्थक शब्द शक्ति के अच्छे व बुरे मानसिक प्रभावों को समझना आवश्यक है ताकि हम आज के पश्चात् जो भी ज्ञान धारें उसका औचित्य अपनी विवेकशक्ति से परख कर ही धारें। सजनों अपना जीवन सत्यनिष्ठा व धर्मपरायणता से निष्पाप व्यतीत करने हेतु ऐसा सुनिश्चित करना आवश्यक समझो और इस प्रकार अपना जीवन लक्ष्य प्राप्त करने में सक्षम हो जाओ।

इस संदर्भ में हम जानते हैं कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ अनुसार ऐसा सक्षम इंसान बनने के लिए दो साल की अवधि में आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने का विधान है। हम यह भी जानते हैं कि विधिवत् आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने की क्रिया का शुभारंभ हुए आज एक वर्ष व्यतीत हो चुका है। इस अवधि के दौरान सजनों आपको दृढ़ संकल्प होकर युक्तिसंगत विजय पथ की ओर बढ़ते हुए जीवन लक्ष्य प्राप्त करने हेतु जितना हो सका आपेक्षित ज्ञान से परिचित कराते हुए व पढ़ाए सबकों की दोहराई द्वारा, आपको दुर्जनता का स्वार्थपर रास्ता छोड़ सजनता का निःस्वार्थ रास्ता अपनाने के प्रति प्रेरित किया गया। इस संदर्भ में आपने व्यक्तिगत रूप से इस क्रिया का कितना लाभ उठाया इसके बारे में सजनों आप ही भली-भांति जानते हो। इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों अब आपके लिए बनता है कि श्रेष्ठ मानव बनने हेतु निकृष्ट भाव-स्वभावों को छोड़ने में आप कितने कामयाब हुए, उसका जायजा खुद आप ही लो। आत्मनिरीक्षण की इस क्रिया के उपरांत सजनों अगर लगे कि आप हिम्मत दिखा अपने लिए ऐसा हितकर करने में सफल हुए हो तो मानो कि आप सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों की पालना करते हुए ज्ञानवान बन, एकाग्रचित्तता से, विचारशील इंसान की तरह अपने लक्ष्य को समयबद्ध प्राप्त करने में रत हो।

सजनों यदि ऐसा ही है तो अवश्य ही अब तक आपका संकल्प कुसंगी, संगी हो गया होगा और आप अंतर्मुखी हो व सद्ज्ञान प्राप्त करते हुए अपना जीवन सँवारने में समर्थ हो गए होंगे। इस तरह ऐसा अदम्य कल्याणकारी पुरुषार्थ दिखा आपने यह सिद्ध कर दिया कि आप दो साल में ही नियमित ढंग से आत्मिक ज्ञान प्राप्त कर व सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित नीतियों का समुचित वर्त-वर्ताव करते हुए, फ़र्स्ट का नतीजा दिखाने यानि आत्मज्ञानी बनने के प्रति जागरूकता से आगे बढ़ रहे हो।

आप इस कारज में निश्चित रूप से सफल हों ही हों उसके लिए सजनों जो बुधवार के बोर्डों में आत्मज्ञान प्राप्त कर व एक निगाह एक दृष्टि हो एक दर्शन में स्थित होने की क्रमवार युक्ति विदित है उसको समझदारी से बार-बार पढ़ते

हुए अपनी दिनचर्या का इस तरह अभिन्न अंग बना लो कि दुःख-क्लेश आने पर भी आपकी विचार पर से पकड़ कदापि न छूटे। जानो ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि विचार अपने आप में वह सवलड़ा रास्ता है जिस पर स्थिरता से परमार्थ की ओर आगे बढ़ता हुआ मानव निश्चित रूप से अंत जीवन विजयी हो जाता है।

इस मंगलकारी परिणाम को दृष्टिगत रखते हुए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार हम तो यही कहेंगे कि 'सजनों फर्स्ट दी करो तैयारी, फेल जेहड़ा हो गया, ओ उमरा राहवे भिखारी'। आप सब पुरुषार्थी सजनों का अंत परिणाम मंगलकारी हो उसके लिए ध्यान से सुनो कि श्री साजन परमेश्वर क्या कह रहे हैं:-

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

शब्दः-

पुरुषार्थ सजनों यत्न करो, ओन्हां इक सवाल समझाया है।
अनेक स्वाल छुड़ाये के ओ नगर निवासियो, महाबीर जी पर उपकार दिखाया है।।

श्री रामचन्द्र जी दा प्यारा देखो, कैसी हिम्मत लड़ाई हो।
फ़स्ट निकले सारी नगरी ऊपर, कैसी कीती कमाई हो।।
युग युग फ़स्ट निकलदे आये, फ़स्ट निकलन बलधारी हो।
तेज प्रताप ताकत नूं देखो, कैसे हिन सुखकारी हो।।
कैसियाँ सुखालियां रीतियां, कैसे सुखाले सवाल हो।
शब्द विचार सौखा है सवाल इन्सानों, हो गए दीन दयाल हो।।
जग दाता साडा फ़स्ट, फ़स्ट निकलो पकड़ो ओन्हां दी चाल हो।
फ़स्ट निकलो ते फेल न होवो, फेल होके न फिरो गंवार हो।।
उस दाते हनुमान जी दी नगर निवासी करन बढ़ाई हो।
श्री रामचन्द्र जी दी उपमा गा गा, त्रिलोकी है शरनाई हो।।

ध्वनिः-

सजनों फ़र्स्ट दी करो तैयारी।
फेल जेहड़ा हो गया, ओ उमरा राहवे भिखारी।।

सबकी जानकारी हेतु सजनों आगामी सप्ताह से परिपूर्ण आत्मिक ज्ञान प्राप्त कर आत्मज्ञानी बनने हेतु दूसरे वर्ष की पढ़ाई का शुभारम्भ होगा। इसी मंगलकामना के साथ ही सब सजनों को जय सीता राम जी।

निवेदन

इस पुस्तक को और अधिक जीवन उपयोगी बनाने हेतु आपके सुझाव सादर आमन्त्रित हैं।

SATYUG DARSHAN TRUST (REGD.)

ALLEVIATING PHYSICAL, MENTAL AND SPIRITUAL SUFFERINGS OF HUMAN BEINGS.

info@satyugdarshantrust.org | www.satyugdarshantrust.org

Institutions under the aegis of Satyug Darshan Trust (Regd.)

SATYUG DARSHAN CHARITABLE DISPENSARIES & LABORATORIES
Multidiscipline dispensaries, labs & diagnostic centres spread in 15 cities
www.satyugdarshandispensaries.org

SATYUG DARSHAN VIDYALAYA
Nursery-XII, Co-Ed. English medium, residential & day boarding school. Affiliated to CBSE.
www.satyugdarshanvidyalaya.net

SATYUG DARSHAN INSTITUTE OF EDUCATION & RESEARCH
B.Ed. College for Girls. Affiliated to CRS University, Jind.
www.sdier.org

SATYUG DARSHAN INSTITUTE OF ENGINEERING & TECHNOLOGY
UG College, offering B.Tech. and BBA courses. Co-Ed., residential & day boarding facilities. Affiliated to J.C.Bose University of Science & Technology, YMCA, Faridabad.
www.satyug.edu.in

DHYAN KAKSH
World's first School of Equanimity & Even-sightedness. It is open to all age and gender.
www.schoolofequanimity.com

SATYUG DARSHAN SANGEET KALA KENDRA
Imparting true teachings of music and dance, open to all age and gender. 17 Centers in operation. Affiliated to Prayag Sangeet Samiti, Allahabad.
www.satyugdarshansangeet.org

SATYUG GRAM SHIKSHA KENDRA
Aimed to upgrade the education levels of the downtrodden children of weaker sections of the society through after-school study classes, and creating livelihood opportunities for out-of-school children by setting up Vocational Training Centers.

Initiatives of Satyug Darshan Trust (Regd.) on Humanity and Ethics

INTERNATIONAL HUMANITY OLYMPIAD
www.humanityolympiad.org

HUMANITY DEVELOPMENT CLUB
www.awakehumanity.org